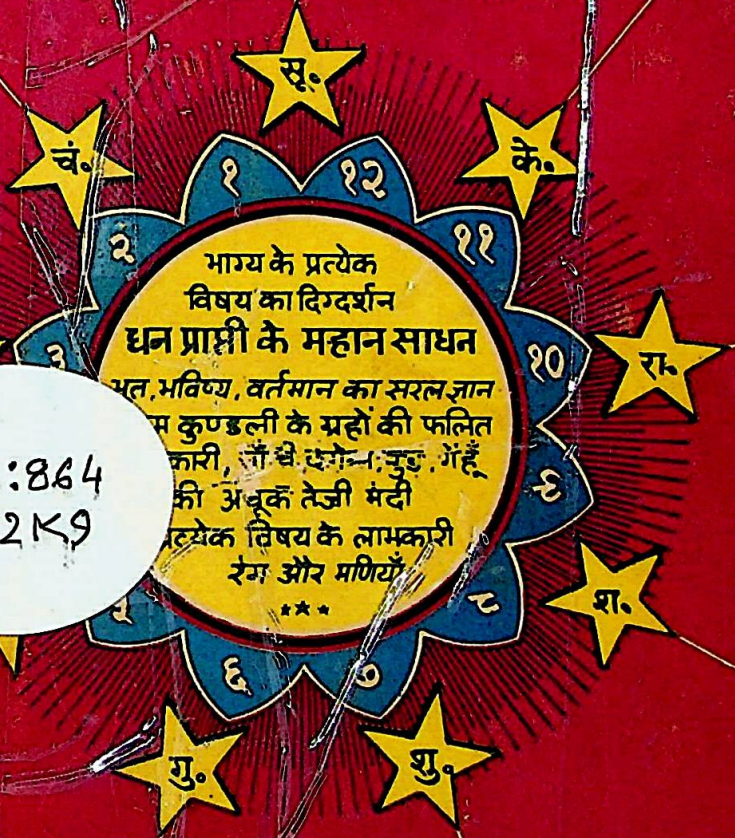
ॐ श्री

ज्योतिष

खण्ड भाग्योदय दर्पण

नोणजन चमत्कार



△:864
152K9

मूल्य रु.

भृगु संहिता पद्धति के प्रसिद्ध लेखक -

भगवान दास मित्तल मथुरा

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

Δ:864 5030
152K9
Mittal, Bhagwandas.
Akhanda bhagyoday
darpan.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
△:864 (LIBRARY) 5030
152Kg JANGAMAWADIMATH, VARANASI

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

* ओइम् श्रीमन्महागणाधिपतयेनमः *

ज्योतिष

अखण्ड भाग्योदय दर्पण

धनोपार्जन चमत्कार

नव संशोधित १९६९

तेजी मन्दी और जन्म कुण्डली विषयक

अद्वितीय फलित ज्योतिष का महान सरल ग्रन्थ

लेखक :—

भगवानदास मीतल

प्रकाशक :—

भगवानदास मीतल, भृगुज्योतिष पुस्तकालय,

नया बाजार, मथुरा (यू० पी०)

[संशोधित परिवर्धित

१९६९ [मूल्य ~~३~~ रु०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन१९६९ का नव शुद्ध संशोधित संस्करण

प्रस्तुत संस्करण-गंगा बुकड़िपो, घीयामन्ड़ी मथुरा
द्वारा विकसित

△:864
152K9

संसार में सत्य बोलना सर्वोतम धर्म एवं अद्वितीय तप है।

-:लेखक का सर्वाधिकार पूर्ण सुरक्षित है।:-

Acc No 5030

विशेष लाभ :-

हमारे यहां की असली चारों पुस्तकें एक साथ मंगाने पर पोस्टेज माफ होगा। [मूल्य सिर्फ १

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc No 5030

भगवानदास मोतल, भृगुज्योतिष पुस्तकालय

नया बाजार, मथुरा (यू०पी०)

मुद्रक :— आलोक प्रिन्टर्स, मथुरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तक परिचय

प्रिय पाठक-गण इस पुस्तक का मूल दृष्टिकोण यह है कि ज्योतिष का फलादेश सरल रूप से कैसे देखा जाता है, प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में,गृहस्थ सम्बन्धित,धन,व जन,व्यापार, सुख,समृद्धि की उन्नति एवं पूर्ण आनन्द हरएक विषयों में, कब २ कौन २ से विषयों में प्राप्त हो सकेगा और कौन २ से अनुकूल ग्रहों के रङ्गों का कौन २ साहूकार व्यापार लाभदायक सावित होगा, और कौन सा रङ्ग व्यापार में, अनुकूल होगा, और कौन २ सो मणियां पहिनना लाभदायक होगा, और जन्म कुण्डली में जन्म के समय बैठे हुए नव ग्रहों में से, कौन २ से ग्रह किस २ विषय में शुभ फलदायक होंगे, और किस २ विषय में अशुभ फलदायक होंगे, तथा खास तौर से चाँदी की चमत्कारिक तेजी मन्दी बड़े ही सरल ढंग से,ठीक २ कैसे जानी जा सकती है इस विषय पर बड़ाही चमत्कारिक अनुभव सिद्ध प्रकाश डालाहै और सोना,कपड़ा कागज, गुड़, गेहूँ की भी तेजी मन्दी सुन्दर लिखी है। और प्रत्येक मनुष्य की जन्म कुण्डलियों में कौन २ ग्रह क्या २ फल प्रदान करने के अधिकारी हैं और कौन २ ग्रहों का क्या १ स्वभाव है क्या २ रंग हैं, क्या २ असर है कौन २ सी मणियां किस २ ग्रह से संबधित हैं, और सबसे बड़ा महत्वदायक बात यह है कि, भाग्य के प्रत्येक विषयों पर बगैर विंशोत्तरी दशा व अन्तर दशाओंके देखे बिना ही, केवल पंचाग के ग्रहों से ही, अपनी २ जन्म कुन्डिलयों के सच्चे प्रत्यक्ष फलादेश व अच्छे बुरे समय की सच्ची जानकारी, बड़े ही सरल ढंग से, बगैर किसी प्रकार की गणित किये बिना मालुम कर सकते हैं, और विंशोत्तरी दशाओं की प्रणाली से जाना हुआ फलादेश, प्रायः बहुत गलत साबित होता रहता है, किन्तु यह फलादेश ईश्वर की महान कृपा से प्रायः सत्य ही होता रहता है।

नोठ—जिन राशियों को पुस्तक के अन्दर फलादेश में नहीं दिया है, उनका फल समान्य समझना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फलादेश जानने की विधि

इस पुस्तकके अन्दर हरएक बारहों लग्नों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों का फलादेश सिलसिलेवार एक के बाद एक का लिखा हुआ है, अतः फलादेश देखते वक्त, पाठक सर्व प्रथम अपनी जन्म कुण्डली को इस पुस्तक की बड़ी वाली कुण्डलीसे मिलान करके देखलें जो कि कुल बड़ी कुण्डली बारह हैं। इन्हीं बारहों में से, जिस किसी कुण्डली से, आपकी कुण्डली मिल जाय बस वहां से आगे की आखिरी छोटी कुण्डली तक में आप अपना हर विषय का फलादेश देख सकते हैं बारहों कुण्डलीयों के नाम इस प्रकार सिलसिलेबार हैं १-मेष २-वृषभ ३-मिथुन ४-कर्क ५-सिंह ६-कन्या ७-तुला ८-वृश्चिक ९-धन १०-मकर ११-कुम्भ १२-मीन और तेजी मन्दी का फलादेश पुस्तक के आखिरी हिस्से में देखियेगा।

और वर्तमान समय की जानकारी करने के लिये सदैव वर्तमान साल के पचांग द्वारा ग्रहों के फल देश मालूम करिये। और यदि गुजरे हुए समय की जानकारी करनी हो तो पुराने पंचांगों से देखिये और यदि लम्बे भविष्य की बातें देखनी हैं तो दस वर्षीय या पंचवर्षीय पंचांगों के द्वारा अपनी भविष्य की जानकारी करियेगा, इस पुस्तक के अन्दर जिन २ ग्रहों का फलादेशों में उल्लेख आया है उन सब ग्रहों में, लम्बी और गहरी बातों की जानकरी करने के लिये आपको चार ग्रहों की जानकारी का सबसे अधिक ध्यान रखना आवश्यक है शनी, वृहस्पति, राहू व केतू अतः जब तक यह चारों ग्रह अनुकूल नहीं होते हैं, तब तक ठीक२ सुधार किसी भी खास विषय पर नहीं हो पाता है क्योंकि यह चारों ही ग्रह प्रत्येक मनुष्य की कुण्डलीयों पर सबसे अधिक समय तक चलते है और दूसरे चार ग्रह सू० मं० बु० शु० यह तो करीबन एक पौन डेढ़ माह में ही स्थान परिवर्तन करते रहते हैं और चन्द्रमा तो ढाई दिन में ही स्थान परिवर्तन करते रहते हैं। इसलिये इन पांचों ग्रहों का अच्छा या बुरा असर तो अधिकांश रूप में बार २ ही प्राप्त होता रहता है किन्तु ऊपर वाले चार ग्रहों का जब अनुकूल समय आता है, तब २ ही जीवन में किसी विशेष घटनाओं द्वारा विशेष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्नति और विशेष परिवर्तन का समय प्राप्त होता ही रहता है और सबसे अधिक शनी की चाल का मिलान, इस पुस्तक के द्वारा अधिकाँश रूप में करना चाहिये क्योंकि इनका एक २ घर ढाई २ साल ठहरने का समय आता है और कभी २ राहू या केतू, बुरे फल प्रदान करने के स्थान, अवसरों पर यदि लाभदायक उत्तम ग्रहों के संग में आ आजाते हैं तो उन्हें भी लाभ की सूरत अख्त्यार करनी पड़ती है।

ग्रहों की अवस्था और अंश ज्ञान

पंचांग के अन्दर हर एक ग्रह बारह राशियों पर–१ अंश से लेकर ३० अंश तक सदैव ही ठहरा करता है और प्रत्येक ग्रह २ अंश तक शिशु अवस्था में रहता है और १० अंश तक किशोर अवस्था में रहता है और २० अंश तक युवा अवस्था में रहता है। और २५ अंश तक प्रौढ अवस्था में रहता है, और ३० अंश तक वृद्ध अवस्था में रहता है। इसलिये वृद्ध अवस्था और शिशु अवस्था वाले ग्रह कुछ कमजोर फल करते हैं, और प्रौण अवस्था व किशोर अवस्था वाले ग्रह, कुछ अच्छा फल प्रदान करते हैं, और युवा अवस्था वाले ग्रह, बहुत मजबूत फल प्रदान करते हैं। किन्तु जो जो ग्रह २९ अंश से आगे और १ अंश से कम होगा, तो उस ग्रह की निर्जीव अवस्था होती है, इस लिये वह ग्रह अपना फल किंचित मात्र ही कर सकता है।

प्रिय पाठक आकाश में सदैव चलते रहने वाले, इन नवग्रहों का वर्णन पंचाँगों में जिस प्रकार लिखा रहता है, इस बात को प्रायः सभी जानते हैं किन्तु भारतवर्ष के सभी ज्योतिषी पंडित, अधिकांश रूप में फलादेश कहते वख्त केवल विंशोत्तरी दशा ब अन्तर दशाओं से ही काम लिया करते हैं, जो कि फलादेश प्रायः गलत बैठता रहता है। अतः इस प्रकर्ण में भगवान की दया से, हमको जो प्रत्यक्ष अनुभव, इन नवग्रहों की आकाश गति विधि से, सैकड़ों हजारों कुण्डलियों पर सही साबित हुआ है जोकि हर एक ग्रह का, एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करते ही, हर एक प्राणी मात्र के भाग्य पर हर एक विषय में क्या २ असर तथा हर एक जिन्सों पर क्या २ तेजी मन्दी का योग पैदा करते है। अतः इस प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा जनता का लाभ और ज्योषि का मस्तक ऊंचा होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ता० १४-१२-५३

चेतना लिमिटेड, चौतीस राम पार्टरोड वम्बई, १ की ओर से प्रमाण पत्र

परम आदरणीय श्री भगवानदास जी !

आपका पत्र मिला ! भृगुसंहिता पद्धति का कुछ अंशों में अवलोकन किया, जन साधारण के लिये ज्योतिष को इतना सरल और बोध गम्य वनाकर आपने समाज का बड़ा भारी उपकार किया है। आपके प्रकाण्ड पण्डित, परिश्रम और अध्यवसाय के विना यह कठिन काम कभी पूरा नहीं हो सकता था। इसके लिये आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाय वह कम है। इंगलिश में आप इस ग्रन्थ का उल्लेख कर रहे हैं जानकर प्रशन्नता हुई। प्रकाशन कौन लोग कर रहे हैं। यदि आप चाहें,तो प्रकाशन का भार हम पर रहने दें। आपको सम्मति मिलने पर हमारे डायरेक्टरों के सामने यह प्रश्न रखा जा सकता है।

भवदीय—
सुधाकर दीक्षित

श्री मान्यवर मित्तल जी जं हिन्द ! ता०-४-१-५७

आपकी भृगुसंहिता पद्धति देखकर हृदय आनन्द से गद्गद् होगया। मेरे पूज्य वयोवृद्ध पिताजी की तथा मेरी इस वस्तु की तीव्र लालसा थी क्योंकि इससे ज्योतिष शास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन के लिये द्वार खुलता है। आपने देवी वरदान से जो कुछ लिखा है वह वास्तव में ज्योतिष का सार है, क्योंकि तदनुसार ही इसका फलादेश है। ऐसी मेरी कल्पना को पुस्तकालयाध्यक्ष जानते थे, पूर्व सूचना के बिना हो पुस्तक को पाकर चकित रह गया। आप धन्य हैं, आपका प्रयास भूरि २ प्रशंसास्पद है।

भवदीय—
चन्द्रदत्त जोशी शास्त्री
प्रशिक्षक, राजकीय बुनियादी शिक्षक
प्रशिक्षण केन्द्र, जोहन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भगवान सत्यदेव श्री कृष्णचन्द्रजी की सेवा में

वन्दन एवं समर्पण

वन्दों श्री हरि पद सुखदाई
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे, रङ्क चलें सिर क्षत्र धराई।
वहरौ सुने, गूंग पुनि बोले, अन्धे चलें सब कछु दरसाई।
सोई कृपा प्रभु मोपर करिये, श्री चरणन की प्रभु दुहाई।
क्योंकि नाथ में अल्प बुद्धिहुँ, किन्तु पड़ो चरणानहूँ आई।
तन्दुल समझ, सुदामा के प्रभु, पुस्तक [पुष्प लेओ हरषाई।

प्रार्थी-भगवानदास मीतल,

❀ विशाल भृगु-संहिता पद्धति ❀

पृष्ठ-९००

इस भारत प्रसिद्ध ग्रन्थ के द्वारा प्रत्येक स्त्री-पुरुषों के जिन्दगी भर हालत, बिना गुरू की सहायता के, घर बैठे सदैव मालूम करते रहिये। आपका भाग्य कौन २ सी सालों के अन्दर कौन २ तारीखों में, उदय होगा, आपकी धनोन्नति कब २ होगी, परिवारिक, सुख, देहिक सुख, धन की स्थिति, सन्तान सुख, स्त्री, विद्या, बहन, भाई, रोजगार माता:पिता मकान जायदाद, सुख-शांति, धर्म कर्म, भाग्य प्रभाव, यश-अपयश, आयु, ख्याति, आमद, खर्चा, पुरातत्व जीवन बाहरी स्थानों का सम्न्ध, मित्र, शत्रु, भोग-विलास, इत्यादि जीवन और भाग्य के हरएक सम्बन्धों में, बड़े भारी विस्तार के सहित, दर्पण की भाति जानने योग्य लिखा है। गलत बनी हुई कुण्डलियाँ भी स्वयं सही कर सकते हैं। यह शर्त है कि आप ५००) रुपये की फलित च्योतिष की पुस्तकें खरीद लेने पर भी, इस ग्रन्थ के बराबर सच्चा और सरल फलादेश प्राप्त नहीं कर सकते हैं! भारत की जनता ज्योतिष और विद्वानों के भारी तादाद में प्रशंसा पत्र प्राप्त हो चुके हैं। पृष्ठ संख्या ९००
कागज उत्तम, पक्की जिल्द मूल्य सिर्फ १०) डाक खर्च माफ

पुस्तक मिलने का पता-भृगुज्योतिष पुस्तकालय, नया बाजर मथुरा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

❀ अखण्ड भाग्योदय दर्पण ❀

संशोधित १९६९ की विशेषतायें

१–धन लाभ का, दैनिक फलादेश ।
२–धन लाभ का, मासिक सरल फलादेश ।
३–धन लाभ की वार्षिक सरल फलादेश ।
४–राजयोग समय का सरल फलादेश ।
५–विद्या एवं सन्तान पक्ष, का सरल फलादेश ।
६–आयु व पुरातत्व एवं उदर और जीवन की दिनचर्या का फलादेश ।
स्त्री एवं दैनिक रोजगार के समय का फलादेश ।
८–धर्म-भाग्य भक्ति एवं दैवी शक्ती आदि के समय का फलादेश ।
९–देह, आत्मबल, ख्याति, सुन्दरता आदि के समय का फलादेश ।
१०–रोग, शत्रुपक्ष, झगड़े, झंझट आदि के समय का फलादेश ।
११–माता,भूमि,मकान,जायदाद,सुख-शान्ति आदिके समय का फलादेश
१२–पिता,मान-प्रतिष्ठा,बड़ा कारबार राज समाज के समय का फलादेश
१३–रेस आदि विविध व्यापार कार्योंके लिये लाभकारी रङ्ग एवं मणियाँ
और सर्व ग्रहों के गुण, दोष, स्वभाव, वर्ण आदि का, फलादेश ।
१४–चाँदी की विविध प्रकार की चमत्कारिक तेजी मन्दी ।
१५–सोने की तेजी मन्दी का सरल फलादेश ।
१६–गुड़ की तेजी मन्दी का सरल फलदेश ।
१७–गेहूँ की तेजीमन्दी का सरल फलादेश ।
१८–कपड़े की या सूत की तेजी मन्दी का सरल फलादेश ।
१९–कागज की तेजी मन्दी का सरलफलादेश ।
२०–ज्योतिष सीखने के कुछ महान सरल आँकड़े ।
२१–गलत जन्म कुण्डली को सही करने की महान सरल त्रिधि ।
२२–ग्रहों की शान्ति के कुछ दैनिक, १२ महान सरल साधन ।

नोट–चाँदी,सोना,गुड़, गेहूँ, कपड़ा, सूत,कागज, की हर प्रकार की तेजी मन्दी का फलादेश, बारहों लग्न वालों को बराबर समान रूप में लिखा हुआ है, और भाग्य सम्बन्धी हर एक विषय का फलादेश सबका अलग २ सिलसिलेबार नम्बरों सहित लिखा हुआ है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

* श्री *

धनवाद

११-११-५९

श्री श्री ११८ श्री परम आदरणीय मित्तल जी।

जै शिव शम्भो।

बाद सब कुशल के साथ श्रीमान् जी के सपरिवार की कुशलता भगवान से प्रार्थी हूँ। आपकी भृगु संहिता पद्धत्ति नामक ग्रन्थ को पढ़ कर मुझे बहुत खुशी प्राप्त हुई,जब कि आपकी कृपा से कुछ थोड़ा बहुत सामान्य ज्योतिष का ज्ञान मुझे भी है, बाद (१) जो श्रीमान् के यहाँ विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियाँ, प्रत्यक्ष ज्योतिष शास्त्र. नामक जो पुस्तक है, वह और (२ अखण्ड भाग्योदयदर्पण (३) शरीर सर्वाङ्ग लक्षण ! ये तोनों पुस्तकें शीघ्रातिशीघ्र पत्र पाने के साथ बी. पी. से भेजने का अवश्य कष्ट किया जाय, ताकि आपकी इन सुन्दर रचित कीर्तियों से हम भी लाभ प्राप्त करें। वी. पी. अवश्य छुड़ा ली जायगी आशा है प्रार्थना पत्र स्वीकार करने का कष्ट किया जायगा। विशेष श्रीमान् जसे ज्योतिष मार्तण्ड दैवज्ञ महानुभावों की कीर्ति है, इसी तरह हमेशा सूर्य के साथ समान, जब तक सूर्य है तब तक अमर रहें यह भगवान से प्रार्थना है।

पुस्तकें भेजने की कृपा जल्दी कियाजाय उत्तम होगा।

आपका कल्याण कांक्षी अज्ञात ग्राहक :—

दैवज्ञ रत्न प० व्रजभूषण शर्मा, (त्रिकालज्ञ)

राजज्योतिषी, ज्योतिष मार्तण्ड

C/o

श्रीमान् बाबू मुखुर्सिंहजी के मकान में हीरापुर

पो० मुकाम—धनबाद

जिला—धनबाद (बिहार)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरीर सर्वांग लक्षण

इस सरल हिन्दी पुस्तक के अन्दर चोटी से लेकर एड़ी तक के समस्त अङ्ग, प्रत्यङ्ग, गुप्ताङ्ग, हस्त रेखा, आकृति, प्रकृति, रङ्ग-रूप, कद, स्वभाव, गुण, शकुन, अङ्ग फड़कन तथा चहेरे की बनावटों पर इंच २ पर बड़ा भारी अनुभव सिद्ध प्रत्यक्ष फलादेश, बड़े लम्बे विस्तार से लिखा है इसके द्वारा केवल मनुष्य को देखकर के ही उसके भाग्य और आचरण का पता मालूम किया जा सकता है। यह अद्वितीय शास्त्र है।

मूल्य १॥) डा० खर्च ॥))

नोट-यह पुस्तक अन्य पुस्तकोंके साथ मँगाने पर डा० खर्च माफ होगा।

भगवानदास मीतल भृगुज्योतिष पुस्तकालय, नया बाजार मथुरा

प्रशंसा-पत्र

प्रेषक-श्रीलखाणि अलाना जूसब, बी. ए., एल, एल, बी,
फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट और सिविल जज कमला इन्सपेक्टर
चीतखाना चौक जूनागढ़
ता० २५-८ ५१

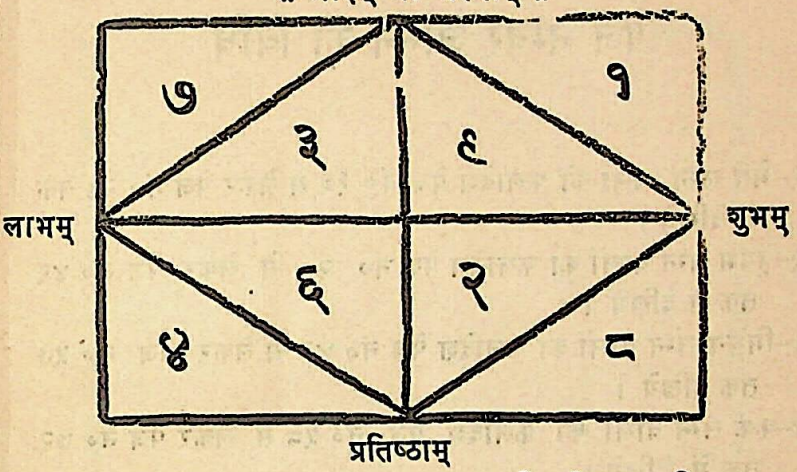
श्रीमान् जी,

मैंने आपकी पुस्तक 'विश्व के भाग्यमानों की कुण्डलियाँ का सूक्ष्म रूपेण अध्ययन किया। वस्तुतः यह ज्योतिषसम्बन्धी पुस्तकों में अपना एक विशेष स्थान रखती है। ज्योतिष विश्लेषण बड़ी सादगी और संतोषप्रद रूप से किया गया है। मैं इस पुस्तक को सर्वोत्तम कृति मानता हूँ। मैंने आपकी अन्य पुस्तकों को भी पढ़ा है। में जोर दार शब्दों में इस प्रकार की पुस्तकें निकालने की सिफारिशि करता हूं। क्योंकि ऐसी पुस्तकें निश्चयात्मक रूप से ज्योतिष में दिलचस्पी रखने वालों के लिये लाभप्रद सिद्ध होगी। इस उपरोक्त पुस्तक की दर असल में एक अत्यन्त कुशल और ज्ञान पूर्ण प्रकाशन है।

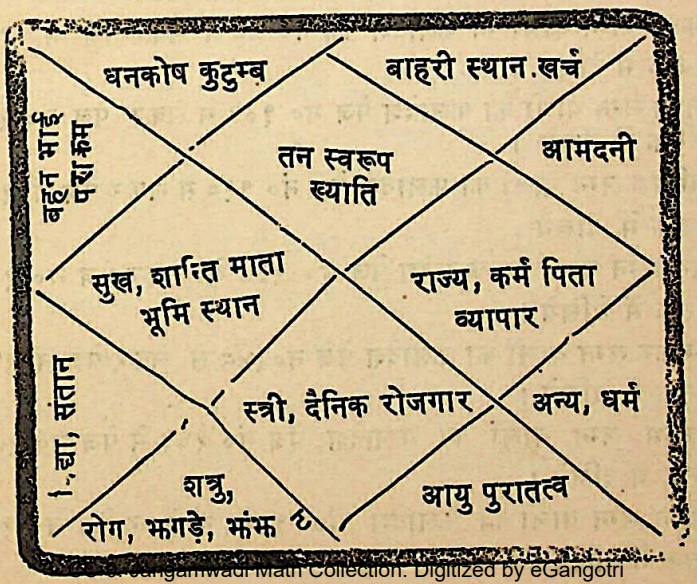
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सर्वोत्तम बीसा यन्त्र

* ओ३म् श्री लक्ष्मींम् *



जन्म कुण्डली के अन्दर किस स्थान से किस २ विषय का क्या २ फलादेश देखा जाता है।



CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समस्त जन्म कुण्डली वालों को, फलादेशीय पेज नम्बर जानने की बिधि

१–मेष लग्न वालों को फलादेश पेज नं० १३ से लेकर पेज नं० २७ तक में देखिये।

२–वृषभ लग्न वालों का फलादेश पेज नं० २८ से लेकर पेज नं० ४२ तक में देखिये।

३–मिथुन लग्न वालों का फलादेश पेज नं० ४३ से लेकर पेज नं० ५७ तक देखिये।

४–कर्क लग्न वालों का फलादेश पेज नं० ५८ से लेकर पेज नं० ७२ तक में देखिये।

५–सिंह लग्न वालों का फलादेश पेज नं० ७३ से लेकर पेज नं० ८७ तक में देखिये।

६–कन्या लग्न वालों का फलादेश पेज नं० ८८ से लेकर पेज नं० १०२ तक में देखिये।

७–तुला लग्न वालों का फलादेश पेज नं० १०३ से लेकर पेज नं० ११७ तक में देखिये।

८–वृश्चिक लग्न वालों का फलादेश पेज नं० ११८ से लेकर पेज नं० १३२ तक में देखिये।

९–धन लग्न वालों का फलादेश पेज नं० १३३ से लेकर पेज नं० १४७ तक में देखिये।

१०–मकर लग्न वालों का फलादेश पेज नं० १४८ से लेकर पेज नं० १६२ तक में देखिये।

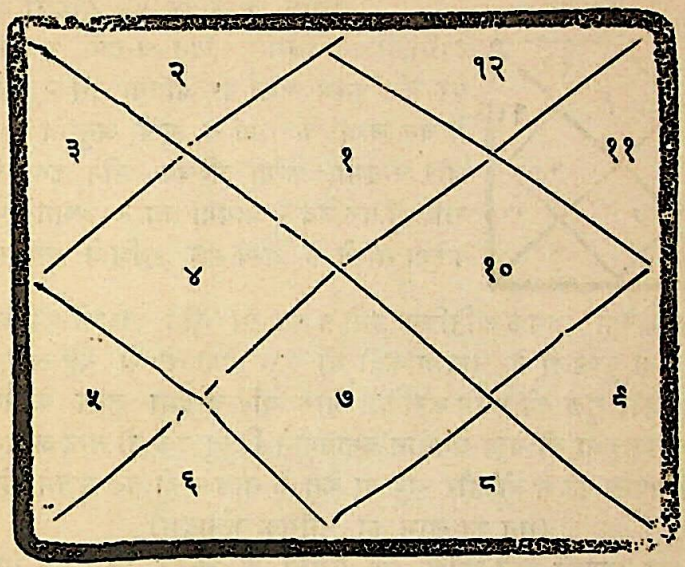
११–कुम्भ लग्न वालों का फलादेश पेज नं० १६३ से पेज नं० १७७ तक में देखिये।

१२–मीन लग्न वालों का फलादेश नं० १७८ से लेकर पेज नं० १९२ तक में देखिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेष लग्न फलादेश प्रारम्भ

×

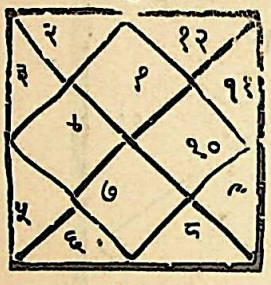


×

इस मेष लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः श० शु० चं० सू० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० १ से लेकर कुण्डली नं० १४ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० १



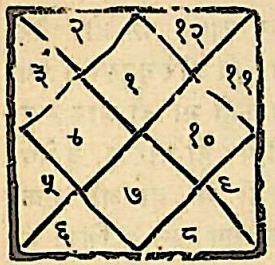
पंचाँग के अन्दर इस कुण्डली वाले व्यक्तियों को जिस २ दिन चन्द्रमा वृषराशी पर और कुम्भ राशी पर आयेगा उस २ दिनों में धन लाभ के योग से सुख अनुभव होगा और चन्द्रमा, कन्या वृश्चिक, मीन इन तीन राशियों पर जब २ आयेगा तब २ अशांति पैदा करेगा बाकी के अन्य सब राशियों पर सुख प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त इसी प्रकार इन तीन राशियों को छोड़ कर जन्म कुण्डली में चन्द्रमा कहीं भी पड़ा होगा तो भी वह लाभप्रद रहेगा और सुख की प्राप्ति करायेगा और यदि चन्द्रमा जन्म के समय वृषभ का हुआ तो बड़ा धनवान बनायगा। किन्तु एक तो चन्द्र अमावस के आसपास का न हो और राहू या केतू के साथ न हो तब उत्तम रहेगा

(धन का लाभ का मासिक फलादेश)

इस कुण्डली वाले व्यक्ति को पंचांग के अन्दर जिस २ समय और जिस मास में शुक्र, वृषभ राशी पर या कुम्भराशी पर या मकर राशी पर या मेष राशी पर या तुला राशी पर या कर्क राशीपर आयेंगे तब २ धन लाभ का योग सुख पैदा करते हैं और जब २ शुक्र कन्या राशी पर या वृश्चिकराशी पर या मीनराशी पर जिस जिस २में आयेंगे तब २ कुछ हानिकारक रहेंगे और शेष राशियों में समान्य रहेंगे। और सूर्य या बुध भी जिस २ मास में कुम्भराशी पर आयेंगे तब २ धनलाभ का योग पैदा करते हैं। इसी, प्रकार यदि जन्म कुण्डली में भी शुक्र ऊपर लिखे अनुसार किसी भी राशी में कन्या, वृश्चिक, मीन को छोड़ कर कहीं बैठा हो तो धन लाभ करेगा किन्तु मुख्य तथा वृषभ, मकर कुम्भ, तुला कर्क अथवा मेष में कहीं भी हों और सू०बु० कुंभराशी पर हों तो धन के लिये श्रेष्ठ तथा सुखद रहेंगे और कुंभराशी पर हर एक ग्रह लाभकारी रहेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

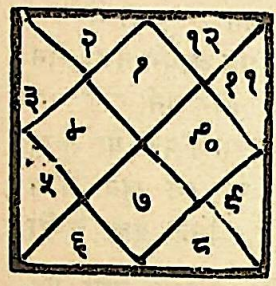
कु० नं० २



पंचांग के अन्दर इस कुण्डली वाले व्यक्तियों को जिस २ समय और जिन २ वर्षों में २॥ वर्ष को शनी वृषभ राशी पर आयेंगे तब२ धन का अधिक लाभ करते हैं और शनी ढाई वर्ष को जब धन, मकर कुम्भ राशि पर या तुला राशि पर आयेंगे तब २ धन का खूब लाभ करेंगे और शनी मिथुन, सिंह कर्क कन्या राशियों पर भी कुछ अच्छा फल प्रदान करेंगे और वृश्चिक तथा मेष राशि पर कुछ परेशानी करते हैं किन्तु जब मीन राशि पर शनी आवेंगे तब नुकसान दायक रहेंगे और वृहस्पति जिस २ साल में, मेष राशि पर या सिंह राशि पर या धन राशि पर या कर्क तुला या मिथुन राशि पर या कुंभ राशि पर जब २ कभी इन राशियों में कहीं भी आवेंगे तब २ भाग्य की ताकत से लाभ का योग पैदा करते हैं और यदि गुरु मकर वृश्चिक कन्या राशि या मीन पर जब कभी आवेंगे तब २ हानिकारक योग पैदा करते हैं। राहू जब २ कभी डेढ़ साल के लिये मिथुन, कन्या कुम्भ राशियों पर जब २ कभी आवेंगे तब २ उन्नतिदायक तथा विपत्ति नाशक रहेंगे और शेष सभी राशियों पर कुछ न कुछ अशाँति दायक रहेंगे, कुंभ राशी पर हर एक ग्रह लाभप्रद रहेगा और जिन २ वर्षों में शनीं राहू केतू गुरु यह चारों ग्रह अच्छी राशियों में आयेंगे, उन २ वर्षों में खास तौर से विशेष लाभ प्राप्ती का योग आकर बनेगा क्योंकि सू० च, मं० बु० शु० यह पाँचों ग्रह तो हर साल के अन्दर कभी न कभी अच्छे ही आते रहते हैं। अतः जिन वर्षों में व जिन महीनों में प्रायः सभी ग्रह ऊपर लिखे मूजिब किसी न किसी राशियों में ही, एक ही समय में आते हैं उस २ समय में भाग्योदय हुआ करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

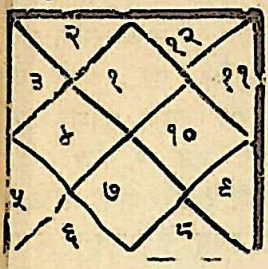
कुं० नं० ३ पंचाँग के अन्दर जिस २ समय में या जिस



जिस वर्षों में, शनी मकर राशी पर हो और मंगल भी मकर राशि पर हो और वृहस्पति मेष या सिंह या धनराशी में कहीं भी हो और राहू मिथुन पर केतू धनराशी पर हो और सू. बु.मेष मिथुन, सिंह या कुम्भ कहीं भी हो और शुक्र कर्क, या तुला, मकर व मेप इन रा.शियों में से कही भी हो और चन्द्रमा मेष, कर्क, तुला मकर इन्हीं चार राशियों पर कहीं भी हों, अतः इस प्रकार सभी ग्रह एक ही समय में जब उपरोक्त राशियों में कहीं न कहीं एक साथ आवेंगे और उस समय सूर्य से शुक्र अस्त नहीं होना चाहिये, तब वह समय राजयोग का होता है। राजयोग की प्रबलता और भी अधिक ऊंचे रूप में पाने की इच्छा रखने वालों को यह समझना और जरूरी होगा कि एक तो इस कुंडली वाले की जन्म कुडली में भी यह उपरोक्त राशियों के अनुसार ही कहीं न कहीं सभी ग्रह बैठे हों और ऊपर लिखे अनुसार सभी ग्रह, उपरोक्त २ राशियों में कहीं मौजूद हों जो कि पंचांग से तुरन्त मालुम किये जा सकते हैं। अतः ऐसे समय में प्रवल राज योग माना जाता है और यदि ऊपर वाली ग्रहों की स्थिति एक साथ सब आ जाय अर्थात् जन्म लग्न और लग्न गोचर, तो राजयोग अवश्य होगा चाहे किसी भी रूप से हो और यदि शनी, मीन या मेष राशी पर आवे या गुरू मकर पर आवे या राहू या केतू मकर पर आवे तो राजकारक सम्बन्धों में अशांति रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

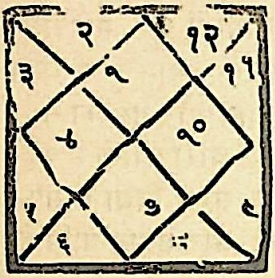
कुं० नं० ४



पंचाँग के अन्दर जिस २ समय में या जिन जिन वर्षों में या जिन मासों में सूर्य मेष राशि पर हो या सिंह राशि पर हो या कुम्भ राशि पर हों या धन राशि पर हों और सूर्य का साथ छोड़कर वृहस्पति भी इन्हीं चारों स्थानों में कहीं भी हों तो विद्या काल के समय विद्या में सफलता व सहायता मिलेगी और संतान प्राप्ति के समय संतान पक्षमें सफलता व सहायता मिलेगी और शुक्र या चन्द्र इन दोनों में से भी कोई सिंह या कुम्भ राशि पर जब २ कभी कोई आवेगे, तब २ विद्या और संतान पक्ष को सहायता व सुख की प्राप्ति होगी और सूर्य का मिथुन व कर्क पर आना भी विद्या व संतान पक्ष के लिये अनुकूल ही रहेगा और शनी का सिंह राशि पर मंगल का सिंह राशि पर आना भी संतान ब विद्या के पक्ष में अनुकूल ही रहेगा और इसी प्रकार ऊपर लिखी हुई राशियों में से कोई भी ग्रह यदि जन्म कुण्डली के अन्दर इन २ राशियों में, जो-जो ग्रह भी बैठे होंगे तो वह ग्रह विद्या व संतान और वाणी की शक्ति आदि के बिषय में बहुत श्रेष्ठ फल प्रदान करेंगे, किन्तु सूर्य के साथ कोई ग्रह अस्त होगा तो फल बहुत उत्तम नहीं दे सकेगा और यदि बुद्ध जन्म के समय पंचांग की गोचर प्रणाली से जब २ कभी, सिंह या कुम्भ पर आयेगे या जन्म के समय होंगे तब २ भी विद्या व विवेक की शक्ति के लिये श्रेष्ठ रहेंगे और संतान पक्ष के लिये कुछ दिक्कतों के साथ कुछ अच्छा फल प्रदान करेंगे और राहू या केतू जब २ कभी भी सिंह राशि पर आवेंगे तब २ संतान पक्ष में व विद्या स्थान में हानि या परेशानी पैदा करते हैं और सूर्य जब २ कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन, बृष, इन पाँचोराशियों में आवेंगे तब २ विद्या व संतान व दिमाग को परेशानी पैदा करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

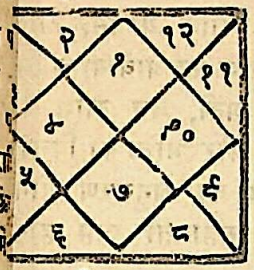
कु० नं० ५



पंचांग के अन्दर जिस २ समय में मंग
मेष राशि पर आते हैं या वृश्चिक राशि
आते हैं या सिंह राशि पर आते
या मकर राशि पर या कुम्भ राशि
आते हैं और वृहस्पति जब २ कर्क रा
या वृश्चिक राशि पर आते हैं और शनी वृश्चि
राशि पर आते हैं तब २ आयू के सम्बन्ध में
उदर सम्बन्ध में शक्ति पैदा करते हैं और पुरातत्व सम्बन्धी लाभ
योजनायें पैदा करते हैं और जीवन की दिनचर्या के प्रभाव
व रौनक की शक्ति प्रदान करते हैं तथा जीवन की निर्वाहक शक्ति
सहायता पैदा करते हैं और इसी प्रकार की राशियों में यदि यह
भी ग्रह जन्म के समय जन्म कुण्डली में, इनमें से, मंगल या गुरू
भी बैठे होंगे तो पुरातत्व सम्बन्धित शक्ति को व आयु की वृद्धि के
तथा जीवन की रौनक व उदर के सम्बन्ध तधा जीवन की निर्वाह
शक्ति के लिये बहुत श्रेष्ठ समझे जायेंगे और यदि मंगल, मीन रा
पर या कर्क राशि पर या कन्या राशि पर होंगे या चन्द्रमा वृश्चिक रा
पर हों या राहू या केतू वृश्चिक राशि पर होंगे तो पुरातत्व शक्ति
आयू व उदर के स्थान में एवं जीवन की दिनचर्या आदि सभी मा
में परेशानियों के योग पदा करते हैं और यदि मंगल वृष तुला
मिथुन पर हो तो भी आयू के सम्बन्ध में या पुरातत्व शक्ति के सम्बन्ध
में व जीवन की दिनचर्या की रौनक के सम्बन्ध में कुछ अच्छे
रहेंगे, और मङ्गल का कन्या पर होने से इन सब विषयों में कुछ
अच्छे और कुछ २ बुरे फल प्रदान करेंगे और इसी प्रकार इनको
जन्म कुण्डली के अन्दर जहाँ भी मंगल बैठे हों उसी प्रकार का
कारक समझना चाहिये जैसा कि ऊपर हर राशियों में इनका
लिखा हुआ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

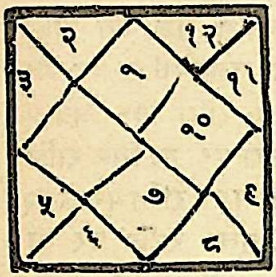
कुं० नं० ६



पंचाँग के अन्दर जिस २ समय में और जिस जिस मास व वर्षो व दिनों में शुक्र, मेष राशी पर या कर्क राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे या शनी, मेष राशि पर या सिंह राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर जब२ कभी आवेंगे या चन्द्रमा, तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब २ स्त्री स्थान में सुख की प्राप्ति और दैनिक रोजगार के स्थान में उन्नति पैदा करते हैं और भोगादिक पक्ष के स्थानों में सुख के साधन पैदा करते हैं और यदि जन्म के समय जन्म कुण्डली के अन्दर भी कहीं यह शुक्र, शनी चन्द्र इन तीनों में से कोई भी या सभी ऊपर लिखी राशियों में ही यदि बैठे होंगे तब तो, स्त्री स्थान का व दैनिक रोजगारके स्थान का बड़ा ही सुन्दर सुख मिलेगा और वृद्धि के साधन पैदा होते ही रहेंगे और अतरिक्त यदि शुक्र, मिथुन या सिंह या धन इन २ राशियों पर कहीं हुए या बुद्ध और गुरू, तुला राशि पर हुए या गुरू,मेष,मिथुन,कुम्भ इन तीन राशियों पर कहीं हुएतो स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार के स्थान में, कुछ २ अनुकूल, शक्ति, थोड़ी सी दिक्कतों के साथ प्रदान करते रहेंगे और यदि सूर्य तुला राशि पर या मेष राशि पर हुए या मंगल,मेष,कर्क, तुला, मीन इन २ राशियों पर कहीं भी हुए या राहू या केतू तुला राशि पर या मेष राशि पर कहीं भी हुए या शुक्र कन्या–वृश्चिक–मीन–वृष-पर कहीं भी हुये तो स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगारके स्थान में दिक्कतें पैदा करते रहते हैं यह योग चाहे जन्म कुण्डली में हो या पंचाँग के द्वारा भूत, भविष्य वर्तमान में हो सभी में इसी प्रकार का फल प्रदान करते हैं किन्तु यह ध्यान रखना जरूरी है कि सूर्य से अच्छे ग्रह कभी अस्त नहीं होने चाहिये और जो २ ग्रह २८ अंश से ज्यादा और एक अंश से कमती होंगे तो वह ग्रह बहुत ही थोड़ा असर हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

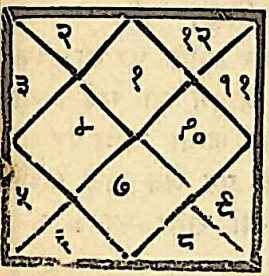
कुं० नं० ७



पंचाँग के अन्दर जिस २ मास में व जिस वर्ष में बृहस्पति, मेष राशि या सिंह राशि पर आवेंगे या सूर्य धनराशि पर आवें या चंद्रमा धन राशी पर आवें या शनी, धन राशि पर आवें, तब २ भाग्य धर्म और भक्ति का विचार उदय होगा और सतमार्ग का अनुसरण होगा तथा ईश्वरीय शक्ति की सहायता प्राप्त होगी तथा सज्जनताई में नाम होगा और शुक्र और मंगल तथा बुद्ध के धन राशि पर आने से भी, धर्म और भक्ति व ईश्वरीय शक्ति की सहायता का कुछ अधूरा सुख प्राप्त होगा । और यदि जन्म के समय में जन्म कुण्डली में भी यह उपरोक्त सभी ग्रह यदि इन्हीं२ राशियों में बैठे हों या जो २ ग्रह भी इस लिखे के अनुसार जन्म कुण्डली में, इन २ राशियों में बैठे होंगे तो वह इम २ विषयों के लिये अर्थात् ईश्वरीय मार्ग के लिये श्रेष्ठ होगा और सदैव सहायक समझा जायगा । और यदि बृहस्पति मकर राशि या मीन कन्या वृश्चिक पर जब २ कभी आवेंगे या राहू धन राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ भाग्य धर्म, भक्ति व ईश्वरीय सहायक बल की कमी रहेगी और भाग्य पर कुछ चिंता माननी पड़ेंगी तथा कुछ अधार्मिक कार्य करने में प्रवृत्ति,स्वार्थ की ओर बढ़ेंगी यह सभी बातें दोनों तरफ लागू होती हैं कि चाहे इन उपरोक्त राशियों में ग्रह जन्म कुण्डली में बैठे हों और चाहें पंचांग की गोचर प्रणाली से भूत भविष्य वर्तमान में जब २ कभी इन २ राशियों में यह ग्रह आयेंगे तो फल इसी प्रकार का देंगे किन्तु दोनों स्थितियों में जो ग्रह श्रेष्ठ होता है वह पूर्ण श्रेष्ठ फल का देने वाला होता है और जो ग्रह एक स्थिति में श्रेष्ठ होता है वह आधा फल करता है किन्तु यह ध्यान रखना और जरूरी है कि एक तो सूर्य से कोई ग्रह अस्त न हो और दूसरे कोई अच्छा ग्रह बुरे ग्रह के साथ न हो और कोई ग्रह शून्य अंश न हो ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

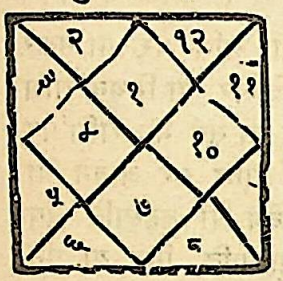
कु० नं० ८



पंचांग के अन्दर जिस २ समय में मंगल मेष राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ कभी आयेंगे या सूर्य मेष राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा मेष राशि पर आवेंगे या शुक्र मेष राशि पर आवेंगे या वृहस्पति मेष राशि पर आवेंगे या वृहस्पति, सिंह या धन राशि पर आवेंगे, तब २ देह को सुख व ख्याति प्राप्त होगी तथा देह में वल और सुन्दरता की वृद्धि होगी आत्म वल की जाग्रतो होगी। और यदि इसी प्रकार इन्ही २ राशियों में जो २ कोई ग्रह जन्म समय में जन्म कुण्डलीं के अन्दर भी इसी प्रकार बैठे होंगे तो वह ग्रह देह को बहुत ही श्रेष्ठ फल देने वाले सिद्ध होंगे। और मंगल जब कभी कन्या राशी पर या धन राशि पर आवेंगे तब तब भी देह में आत्मवल की वृद्धि होगी और इसके विपरीत यदि मंगल वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे या शनी,मेष राशि पर या कर्क राशि पर या तुलाराशि पर या कुम्भ राशि पर जब२ कभी आवेंगे या राहू या केतू मेष और तुला राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब तब देह और आत्मा को अशाँती प्राप्त होगी और देह की सुन्दरता में कमी पैदा होगी। यह उपरोक्त ग्रह योग चाहे जन्म कुण्डली में हों चाहे पंचांग की ग्रह गोचर प्रणाली में,हों फल दोनोंमें एकसा होगा और यदि दोनोंमें ही सुन्दर अच्छे बैठ गये हों तब तो वहुत श्रेष्ठ फल होगा किन्तु दोनों ही प्रकारों में यह सोचना आवश्यक है कि कोई अनुकूल होने वाला ग्रह सूर्य से अस्त तो नहीं है या २९ अंश से अधिक और १ अंश से कमती तो नहीं है क्योंकि ऐसा होने से ग्रहों की ताकत कमजोर हो जाती है इसलिये पूरा फल नहीं देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

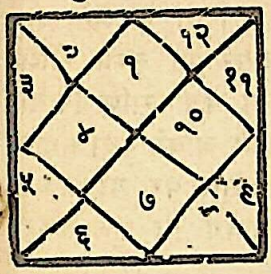
कु० नं० ६



पंचाँग के अन्दर जिस २ समय
बुद्ध, मेष राशि पर या मिथुन राशि पर
कन्या राशि पर या मकर राशि पर या कुम
राशि पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य कन्य
राशि पर आवेंगे या मंगल कन्या राशि पर
कुम्भ राशि पर जब जब कभी
आवेंगे या शनीश्चर कन्या राशि पर
राशि पर
आवेगा या राहू या केतू—कन्या और मीन राशि पर आवेंगे अतः इ
सब ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब २ शत्रु से विजय होगी
तथा दिक्कतों से छुटकारा पाकर हिम्मत की वृद्धि होगी और यदि
चन्द्रमा या वृहस्पति—कन्या राशि पर आवेंगे तो शत्रु पक्ष में शाँती से
कार्य निकालना पड़ेगा और यदि जन्म कुण्डली में भी इसी २ प्रका
के ग्रह ऊपर लिखी राशियों में कहीं बैठे होंगे तो शत्रु पक्ष में बहुत
सुन्दर योग जीवन के लिये समझा जायेगा और इसके विपरीत यदि
बुध, वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर हुआ या
शुक्र कन्या राशि पर या मीन राशि पर हुआ तो शत्रु पक्ष से व कुछ
झंझटों से अशाँती रहेगी और रोग तथा दिक्कतों के सम्बन्धों में कुछ
हानि व परेशानी रहेगी और यदि बुध कर्क सिंह, तुला, धन, मक
राशियों पर कहीं भी हुआ तो, शत्रु पक्ष से या किसी प्रकार की दिक्कत
से कुछ थोड़ी सी शांती भंग होती है। इसी प्रकार बुध यदि जन्म के
समय इन्हीं २ राशियों पर कहीं भी बैठे होंगे तो ऊपर लिखे अनुसा
ही फल प्रदान करेंगे। बुध प्रायः सूर्य से अस्त होते रहते हैं अतः जब
बुध अस्त होंगे तब २ बुद्धी व अन्य कारणों से शत्रु पत्र में या किसी
भी दिक्कतों के पक्ष में अशाँती सी प्रतीत होती रहेगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

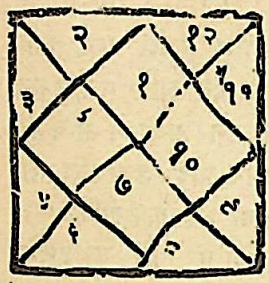
कुं० नं० १०



पंचाँग के अन्दर जिस २ समय में चन्द्रमा, मेष राशि पर, वृषभ राशि पर, कर्क राशि पर या तुलाराशि पर धन राशि पर, मकर राशि पर कुम्भ राशि पर, इन सबों में से कहीं किसी भी राशि पर हों और यदि वृहस्पति भी कर्क राशि पर हों या शुक्र भी ककंराशि पर हों और शनी, भी कर्कराशि पर हों या इनमें से एक दो ग्रह इस प्रकार हों या सभी इस प्रकार हो अर्थात् जितने अधिक ग्रह होंगे उतना ही अधिक आराम सुख की प्राप्ती होगी और भूमि मकानादि की सुख शक्ति प्राप्त होगी तथा माता के सम्बन्ध में सुख प्राप्त होगा। और जन्म के समय में यदि इसी प्रकार की राशियों में जन्म कुण्डली के अन्दर यह ग्रह बैठे हों तो, सुख और आराम के पक्के साधन ब मकानादि भूमि आदि की शक्ति व माता का सुख, सभी चीजें खूब प्राप्त होती रहती हैं और यदि चन्द्रमा, मिथुन या सिंह, पर कही भी आये या जन्म कुण्डली में ही इन राशियों पर कहीं बैठा हुआ हो तो उक्त विषय में मध्यम फल मिलेगा किन्तु इसके बिपरीत यदि, चन्द्रमा, कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर कहीं भी हों तथा मङ्गल, राहू केतू, इनमें से कोई भी कर्क पर हों, तो चाहे जन्म के समय, जन्म कुण्डली में हों चाहे पंचाँग की गोचर गति से किसी भी समय में हो तो. सुख की प्राप्ति में हमेशा कंटक प्राप्त होंगे और भूमि मकानदि का व माता का सुख भी ठीक प्राप्त नहीं होगा। किन्तु जो ग्रह अच्छे फलदायक लिखे हैं वह सूर्य से अस्त नहीं होने चाहिये, यदि अस्त होंगे तो वह ग्रह पूरा २ फल नहीं देते है और यदि कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह निर्बल होने से पूरा २ फल प्रदान नहीं करता हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

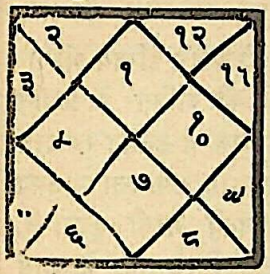
कुं० नं० ११



पंचांग के अन्दर जिस २ समय में या जिन २ वर्षों व मासों में व दिनों में शनी धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या तुला राशि पर जब २ कभी आवेंगे तथा मंगल मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर जब २ कभी आवेंगे या शुक्र मकर राशि पर जब २ कभी आवेंगे या चन्द्रमा मकर राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब २ पिता स्थान में व बड़े कारबार के स्थान में अपने वित्त अनुसार उन्नति सफलता व मान सम्मान प्राप्त करते हैं और यदि जन्म के समयमें यही सब ग्रह, जन्म कुण्डली के अन्दर भी इन्हो २ राशियों में कहीं न कहीं बैठे हों तो पिता स्थान में व बड़े कारबार के स्थान में पक्की उन्नति के सदैव साधन प्राप्त होते रहते हैं और मान सम्मान की अच्छी प्राप्ति होती रहती है। और यदि शनी सिंह या मिथुन राशि पर या कन्या राशि पर होंगे या बुध मकर राशि पर होंगे तो भी, पिता स्थान में व बड़े कारबार के स्थान में, थोड़ी बहुत तरक्की होती रहती है। चाहे यह योग जन्म कुण्डली में हो चाहे पचांग की गोचर गति में हो। किन्तु इसके विपरीत ग्रह योग यदि इस प्रकार होय कि शनी, मीन राशि में या वृश्चिक राशि में या मेष राशि में हों और वृहस्पति, मकर राशि में हो या राहू या केतू भी कोई मकर राशि में हो तो यह ग्रह योग, पिता स्थान में व बड़े कारोबार के स्थानमें कुछ न कुछ खराबी अवश्य करेंगे चाहे यह ग्रहयोग जन्म कुण्डली में हों और चाहे पचांग की ग्रह गोचर प्रणाली में दोनों में ही इसी प्रकार का काम करेंगे। और यदि अच्छे ग्रहों में से कोई ग्रह सूर्य से अस्त होंगे तो उत्तम फल नहीं देंगे और यदि कोई भी ग्रह २९ अंश से ज्यादे हों या १ अंश से कमती होगा तो यह निर्बल होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० १२

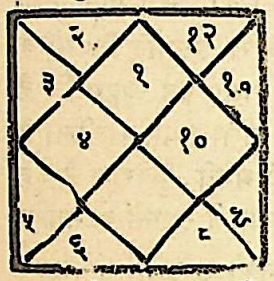


(गु०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य, धर्म, खर्च, बहरी स्थानों का उत्तम संपर्क तथा ठोस धर्म की कुछ कमजोरी इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फल दाता ग्रह वृहस्पति हैं इनका स्वभाव बड़प्पन वाला तथा खर्चीला है इनका रग पीलाहै इनकी मणी पुखराज हैं यह उन्नति प्रदान करने में बाहरी स्थानों के संबन्ध तथा कुदरती खर्च की शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह है–९ धन ११ कुम्भ, १–मेष–३ मिथुन–४ कर्क–५ सिंह ७ तुला है और नेष्ठ राशियां यह हैं–१० मकर–६ कन्या–८ वृश्चिक–१२ मीन और सामान्य राशियाँ यह–२ वृशभ हैं (श०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को पिता, राज्य,व्यौपार कर्म, मान प्रतिष्ठा,हकूमत, आमद आवश्यकताओं की प्राप्ति शानदार लाभ इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी है इनका स्वभाव कठोर स्वार्थयुक्त अहंकारी है इनका रङ्ग नीला है इनकी मणी नीलम है यह उन्नति करने में बड़े आडम्बर युक्त महान कार्य की शक्ति से काम लेते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–१० मकर, ११ कुम्भ २ वृषभ, ५ सिंह. तुला, ९ धन, ३ मिथुन हैं और नेष्ठ राशियाँ यह हैं १ मेष, १२ मीन, ८ वृश्चिक और समान्य–६ कन्या है (म०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को देह, स्वरूप, आत्मबल, ख्याति, आयु पुरातत्व दिन चर्या उदर का सम्बन्ध इत्यादि रोगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मंगल हैं इनका स्वभाव बड़ा गरम है, इनका रङ्ग लाल है इनकी मणी मूंगा है, यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त युक्तियों से व पुरातत्व शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–१ मेष–२ मिथुन ५–सिंह–७ तुला–१० मकर–११ कुम्भ–६ कन्या है और नेष्ट राशियाँ–१२ मीन–४ कर्क है और सामान्य राशियाँ यह हैं–९ धन २ वृषभ –वृश्चिक।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 मेष लग्न वालों को, सभी व्यापार कार्यों के लिये, लाभदायक रङ्ग मणियाँ तथा ग्रहों के गुण दोष स्वभाव कर्म का फलादेश

कुं० नं० १३



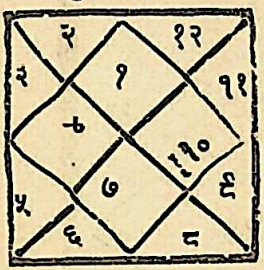
(शु०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को धन, कुटुम्ब कोष, स्त्री, दैनिक रोजगार इन्द्रिय भोगादिक शक्ति इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं इनका स्वभाव बड़ा चतुर और लौकिक भोग सफलता पानेका है इनका रङ्ग सफेद है इनकी मणी हीरा है, यह उन्नति प्रदान करने में, नित्य प्रति के कार्य क्रम और धन की शक्ति से काम लेते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–१० मकर–११ कुम्म–१ मेष–२वृषभ–३मिथुन –४ कर्क–५ सिंह–७तुला–९ धन है और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ६ कन्या–८ वृश्चिक–१२ मीन।

(बु०) मेष लग्न वालों को बहन भाई पराक्रम, हाथों की महनत, शत्रु का सम्बन्ध, पेचीदा विवेक, ननसाल पक्ष इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं, इनका स्वभाव कोमल और परिश्रमी है इनका रंग हरा है, इनका मणी पन्ना है, इनकी कुण्डली के अंदर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–३ मिथुन– ४ कर्क– ५ सिंह–६ कन्या–७तुला–९धन–१० मकर–११कुम्भ–१ मेष–२ वृषभ है और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ८ वृश्चिक १२ मीन।

(चं०) मेष लग्न वालों को, माता, मातृ भूमि, मकान जायदाद सुख शाँती मनोवल इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं इनका रङ्ग उज्ज्वल है इनका स्वभाव महान शीतल शाँती युक्त है, इनकी मणी मोती है इनकी कुण्डली के अन्दर बठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–४ कर्क–५ सिंह–७ तुला– ९धन– १०मकर–११ कुम्भ–१ मेष–२ वृषभ–मिथुन ३ है और नेष्ठ राशियाँ हैं–६ कन्या–८ वृश्चिक हैं यह बुरे से बुरे समय में भी मन की ताकत के योग से कुछ न कुछ सुख शाँती प्राप्त कर ही लेते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० १४

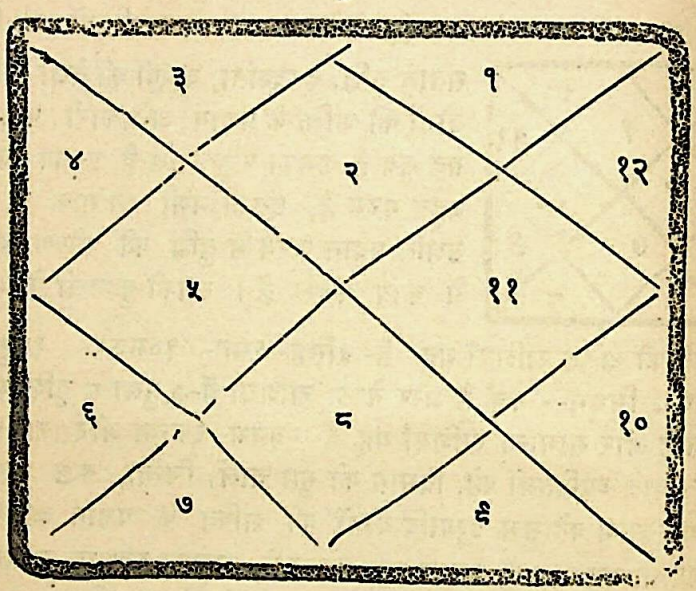


(सू०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को विद्या संतान बुद्धि, दूरदर्शिता, वाँणी की तेजी इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं, इनका रङ्ग लाल है, इनका स्वभाव बहुत गरम है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धि की तीक्ष्ण शक्ति से कार्य करते हैं। उनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं- ५सिंह- ९धन- १०मकर- ११कुम्भ- १मेष-३ मिथुन-४ कर्क है और नेष्ठ राशियाँ हैं-७ तुला ८ वृश्चिक-१२ मीन है और सामान्य राशियाँ यह हैं- २वृषभ- ६कन्या और (रा०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को, दिमाग की गुप्त चालें, चिन्ता, कष्ट छिपाव, अधिक लाभ की सूझ इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू हैं, इनका रङ्ग काला है, इनका स्वभाव दुखदाई है इनकी मणी गोमेध है. यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त युक्तियों से काम लेते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं-३ मिथुन-६ कन्या-११ कुम्भ और सामान्य राशियाँ यह हैं-५ सिंह-१० मकर १२ मीन है और नेष्ठ राशी ९धन-२ वृषभ- ८वृश्चिक-४ कर्क है (के०) मेष लग्न वालों को, बाहुबल की गुप्त शक्ती, हृदय का गुप्त साहस, चिन्ता कष्ट, कटुता, अधिक लाभ के लिये महान कष्ट साध्य प्रयत्न इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी केतु हैं, इनका रङ्ग काला है, इनका स्वभाव कष्ट प्रद है, इनकी मणि लहसनियाँ है, यह उन्नति प्रदान करने में महान कठिन कार्य की पूर्ति का अनुसरण करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह है- ६कन्या धन ११ कुम्भ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं २ वृषभ ४ कर्क-१ मेष-८वृश्चिक- ५ सिंह और सामान्य राशियाँ यह हैं-७ तुला-१० मकर-११मीन ३ मिथुन ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वृष लग्न फलादेश प्रारम्भ

*

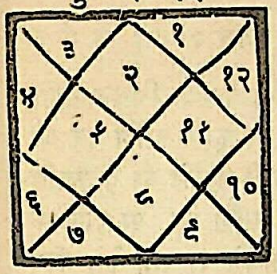


*

इस वृषभ लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः सू० बु० श० गु० चं० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति सम्बन्धी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० १५ से लेकर कुण्डली नं० २८ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० १५



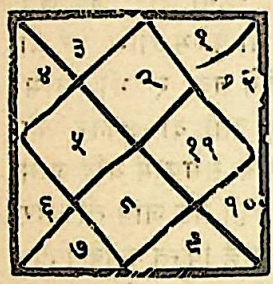
पचाँग के अन्दर जिस २ दिनों में चन्द्रमा मिथुन राशि पर या मीन राशि पर आवेंगे तब २ धन लाभ उत्तम रहेगा और जब जब चन्द्रमा मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या कन्या राशि पर भी आवेंगे तब २ भी लाभ का योग रहेगा और यदि इसी दो प्रकार की राशियों का चन्द्रमा जन्मके समय में यदि जन्म कुण्डली में भी ऐसा हो कहीं बैठ जाय तो और भी मनोयोग की ताकत से हमेशा लाभकर सकता है किन्तु इसके विपरीत यदि चद्रमा वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या मेष राशी पर यातुला राशी पर जब २ आवेंगे तब २ कुछ मानसिक बल की कमजोरी तथा कुछ अशाँति अनुभव करेंगे और जन्म कुण्डली में भी यदि ऐसा ही चन्द्रमा बैठ जायगा तो हमेशा ही संकट प्राप्त कराता है और यदि चन्द्रमा कर्क, वृष, सिह इनमें से कहीं भी हुआ तो भी मनोबल की शक्ति प्राप्त होती रहेगी।

वृषभ लग्न वालों को धन लाभ का मासिक फलादेश —

जिस २ मास में बुध, मिथुन या मकर कुम्भ या सिंह राशि पर आवेंगे या खास तौर से शुक्र मोन या मिथुन राशि पर आवेंगे या सूर्य मीन या मिथुन राशि पर आवेंगे तब २ धन का लाभ उत्तम रहेगा। यदि इसी प्रकार की राशियों में यह तीनों ग्रह कही जन्म के समय में जन्म कुण्डली में भी बैठे हुए होंगे तो धन लाभ की प्राप्ती में हमेशाँ सहायता देने वाले समझे जायेंगे। किन्तु यदि सूर्य से बुध या शुक्र अस्त हुआ तो सुन्दर लाभ नहीं हो सकेगा या जन्म कुण्डली में इन ग्रहों में से कोई भी ग्रह २६ अंश से अधिक हुआ तो भी फल उत्तम नहीं मिल सकेगा और इसके विपरीत फल के लिये यदि बुध तुला धन मेष या मीन राशि पर आवेंगे या मगल, मिथुन या धन या मेष या मीन राशि पर आवेंगे या केतु मिथुन राशि पर आवेंगे तब २ धन के लिये हानि कारक योग पैदा करते रहेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

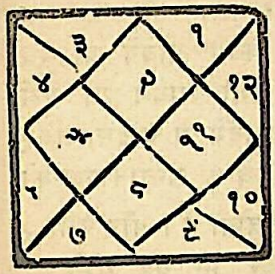
कुं० नं० १६



पंचाँग के अन्दर जिस २ वर्षो में में व मासों में शनी वृषभ राशि पर या मिथुन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे या वृहस्पति कर्क राशि पर या मीन राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ कभी आवेगे या राहू केतू मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब २ उन वर्षों में धन का लाभ श्रेष्ठ रहेगा और उन्नति के मार्ग प्राप्त होते रहेंगे और यदि जन्म के समय में जन्म कुण्डली अन्दर भी यह ग्रह इन्हीं राशियों में कहीं बैठे होंगे, तब तो बहुत ही उत्तम लाभ करने का योग बनता है और इसके विपरीत यदि केतू मिथुन राशि पर हुआ या मंगल मिथुन कुम्भ राशि पर हुआ और यदि वृहस्पति मकर राशि पर हुआ या मेष राशि पर हुआ या तुला राशि पर या धन राशि पर हुआ और यदि शनि मेष राशि पर या धन राशि पर हुआ तो उन२ वर्षो में धन की कुछ हानियाँ तथा उन्नति के स्थानों में निराशायें प्राप्त होती रहती हैं। और यह ग्रह योग चाहे जन्म कुन्डली में हों और चाहे पंचाँग गोचर में किसी भी प्रकार में हों किन्तु दोनों में फल निराशाओं का व नुकसान का पैदा करते हैं और उत्तम फल देने वाले ग्रहों के सम्बन्ध में यह जानना जरूरी है कि कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक और १ अंश से कम न हो अन्यथा फल पूरा २ प्राप्त नहीं हो सकेगा और जिन जिन वर्षों में श्रेष्ठ ग्रह आते हैं उन २ बर्षों में मासिक ग्रहों का श्रेष्ठ आना भी जरूरी है तभी उत्तम फल की प्राप्ती होती रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

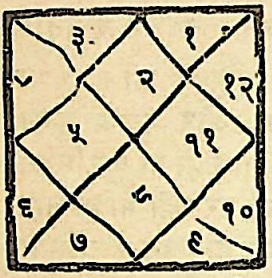
कुं० नं० १७



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में खासतौर से शनि वृषभ राशि पर या कुम्भ राशि पर या मकरराशि पर आवें या और बुध भी कुम्भ राशि पर हों या शनि के साथ हों या वृष, मिथुन मकर, कुम्भ इन २ राशियों पर कहीं भी हों और शुक्र भी वृषभ मकर, कुम्भ, मीन इन २ राशियों पर कहीं भी हों तथा वृहस्पति, कर्क, मीन वृश्चिक राशि पर कहीं भी हों ओर सूर्य कर्क सिंह, कन्या, वृश्चिक मीन इन इन राशियों पर कहीं भी हों और चन्द्रमा वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, मकर, कुम्भ, मीन, इन २ राशियों पर कहीं भी हों और राहू, मिथुन, तुला, मीन पर कहीं हों और केतू, धन कर्क तुला मीन पर कहीं हों। अतः यह सभी ग्रह ऊपर लिखे अनुसार ही किसी राशियों में ही होने चाहिये, तभी राजयोग का समय माना जायेगा। इस प्रकार यह ग्रह योग पंचाग की गोचर गति से जिस जिस समय में आकर लगेगा, तब तब ही राजकारक, उन्नति दायक मान प्रतिष्ठा सूचक योग प्राप्त हुआ करेगा और इसी प्रकार के ग्रह योग जिस २ मनुष्य की कुण्डली में भी बैठे होते हैं दर असल में राजयोग का पूरा २ फल तो उसी मनुष्य को प्राप्त होता है, यदि इन श्रेष्ठ ग्रहों में से कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या अंश बल से २७ अंश से अधिक या ३ अंश से कमती होगा तो उन ग्रहों का श्रेष्ठ फल उचित रूप से कभी प्राप्त नहीं होता है। किन्तु पंचाँग से जिस २ समय में ग्रह योग आवेंगे तब २ इस कुण्डली के आधार पर फल तो उत्तम अवश्य ही प्राप्त होगा किन्तु जन्म कुण्डली में भी यदि उत्तम ग्रह योग हो तब तो सोने में सुगन्ध का कार्य है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

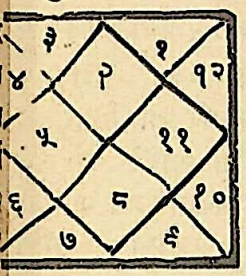
कु० नं० १८



पंचाँग के अन्दर जिस २ वर्षों में व मासों में व दिनों में शनी कन्या राशि पर आवेंगे या कर्क राशि पर आवेंगे या वृहस्पति कन्या राशि पर जब २ कभी आवेंगे या बुध कन्या राशि पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य जब २ कन्या राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कन्या राशि पर आवेंगे तब २ सन्तान पक्ष को तथा विद्या स्थान को तरक्की और उन्नति प्राप्त होती है। और इसी प्रकार की राशियों में यदि जन्म कुण्डली के अन्दर भी यह सभी ग्रह या इनमें से कोई एक दो भी इन कन्या राशि पर बैठे होंगे तो संतान पक्ष में व विद्या स्थान में दोनों में ही तरक्की व सफलता शक्ती प्राप्त होती रहती है किन्तु यदि इसके विपरीत बुध तुला राशि पर या धन राशि पर मेष राशि पर या मीन राशि पर कहीं भी होंगे या मङ्गल कन्या राशी पर होंगे या शुक्र कन्या राशि पर होंगे या केतू कन्या राशि पर होंगेतो सन्तान पक्ष में व विद्या के स्थान में दोनों में ही कमीं व कमजोरी प्राप्त होगी यदि यह ग्रह इस प्रकार जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तब तो बहुत ही हानिकारक समझे जायेंगे और यदि पंचाँग की गोचर प्रणाली से जब २ कभी यह आवेंगे तब २ यह हानिकारक तथा दिमाग को परेशानि करने वाले होंगे। और ऊपर लिखे अनुसार ग्रहोंमें से यदि जो २ ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अच्छा या बुरा कोई भी फल विशेष शक्तिशाली नहीं दे सकता है और जन्म लग्न में भी श्रेष्ठ ग्रह हों और पंचांग की चाल में भी श्रेष्ठ हो तब तो इस समय में बहुत ही सुन्दर फल प्राप्त होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

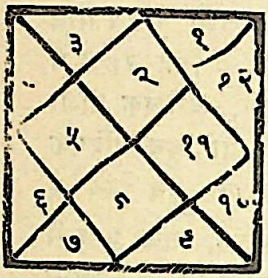
कुं० नं० १६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में मङ्गल वृश्चिक राशी में व मकर राशी में व कुम्भ राशी में व मीन राशी में व वृषभ राशी में व सिंह राशी में आवेंगे और शनीश्चर जी, वृश्चिक राशी में जब २ कभी आवेंगे या बुध वृश्चिक राशी में जब २ आवेंगे या सूय जब २ कभी वृश्चिक राशी में आवेंगे, तब २ स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार के स्थान में तरक्की व लाभ सुख पैदा करते हैं और यदि शुक्र या गुरू भी कोई जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आवेंगे, तब २ कुछ परेशानियों के साथ स्त्री पक्षमें दैनिक रोजगार की की लाइन में लाभ का योग पैदा करते हैं। किन्तु इसके विपरीत मङ्गल, धन राशी पर या मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर या तुला राशी पर जब जब कभी आवेंगे या चन्द्रमा या राहू या केतू कोई भी वृश्चिक राशी पर जब २ कभी आवेंगे, तब २ स्त्री पक्ष व दैनिक रोजगार की लाइनमें कुछ न कुछ परेशानी व कुछ हानि का योग पैदा करते हैं यदि ऊपर लिखे अनुसार जन्म के समय में यह सभी ग्रहों में से कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली में इस २ प्रकार के यदि बैठेंगे,तो वह ग्रह विशेष फलदायक होंगे अर्थात् जन्म के समय जो ग्रह जैसा पड़ जाता है अच्छा या बुरा वह ग्रह उसी प्रकार का फल जीवन में अधिक रूप से देता रहता है और जो २ ग्रह पंचाग गोचर से आते हैं, वह अपना फल निश्चित अवधि तक में विशेष रूपसे किया करते हैं। जो २ ग्रह सूर्य से अस्त होंगे या २६ अंश से अधिक या २ अंश से कमती होंगे, वह ग्रह प्रायः अच्छा या बुरा फल पूर्ण रूप से नहीं कर पाते हैं यह विचार कर लेना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

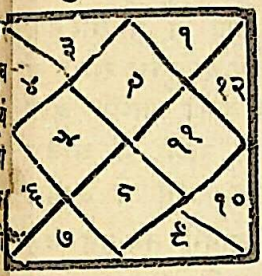
कुं० नं० २०



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व जिस २ मासों में खासतौर से शनी, मकर राशि पर आवेंगे या शुक्र, मकर राशि पर आवेंगे या बुध मकर राशि पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य मकर राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मकर राशि पर आवेंगे, तब २ भाग्य की शक्ति से व दैवी शक्ति से कोई लाभ उन्नति प्राप्त होती है और धर्म तथा ईश्वर भक्ति का भी चमत्कार उदय होता है और इसी प्रकार की राशि मकर में यदि जन्म के समय जन्म कुण्डली में भी इन २ ग्रहों में से कोई भी एक या दो या तीन या चार कोई ग्रह बैठ जाय तो सारे जीवन में अधिकांश यह ग्रह दैवी शक्ति के योग से लाभकारी सिद्ध होते हैं और धर्म व ईश्वर भक्ति और सत्-मार्ग का अनुसरण प्राप्त करवाते हैं और इसके विपरीत यदि शनि, जब २ कभी मेष राशि में या धन राशि में आवंगे, तब २ हमेशा धर्म की हानि व भाग्य की परेशानी तथा कुछ अपयश की प्राप्ति करते हैं और कुदरती तौर से बनने वाले कार्यों में विघ्न पड़ते हुए दिखलाई देते रहते हैं। इस प्रकार से ग्रह योग चाहे जन्म कुण्डली में हो या पंचांग की ग्रह गोचर प्रणाली में हो, फल दोनों में ही इसी प्रकार का करते हैं किन्तु जो २ ग्रह जितने २ समय तक सूर्य से अस्त रहेगा, या जो २ ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना फल पूरी २ ताकत से नहीं देता है, बल्कि वह अपने वित्त के दायरे से बहुत थोड़ा फल देता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

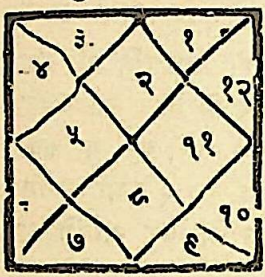
कुं० नं० २१



पंचांग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में व जिस २ मासों में व दिनों में वृहस्पति वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या मीन राशि पर या वृष राशि पर या मिथुन राशि पर या कर्क राशि पर या सिंह राशि पर जब २ कभी आवेंगे और शनी जब २ धन राशि पर आवेंगे या सूर्य जब २ कभी भी धन राशि पर आवेंगे या बुध जब २ कभी भी धन राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी भी धन राशि पर आवेंगे, तब २ आयु, उदर के स्थान में शक्ति पैदा करते हैं और पुरातत्व शक्ति के सम्बन्ध में, लाभ सुख का योग पैदा करते हैं, और यदि इसके विपरीत वृहस्पति जब २ कभी मकर राशि पर या मेष राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे, और मङ्गल जब २ कभी धन राशि पर आवेंगे या राहू जब २ कभी धन राशि पर आवेंगे तब २ आयु व पुरातत्व स्थान में परेशानी व क्लेश पैदा करते हैं, और यदि कोई भी ग्रह या सभी ग्रह ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जहाँ कहीं भी जन्म के समय में जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो उन २ ग्रहों का इस प्रकरण में विशेष फल प्राप्त होता है, और जीवन भर उन ग्रहों का प्रायः उसी २ प्रकार का फल प्राप्त होता रहता है, जैसा कि जन्म के समय में जो ग्रह जिस २ प्रकार का बैठ जाता है, और यदि इन ग्रहों में से कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो उस ग्रह का फल बहुत ही थोड़ी तादाद में प्राप्त होता है क्योंकि वह ग्रह शक्ति हीन सा होता है, और यदि वृहस्पति, कुम्भ राशि पर या कन्या राशि पर होंगे तो भी आयु निर्वाह तथा पुरातत्व शक्ति के विषय में कुछ-कुछ अच्छा ही फल प्रदान करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

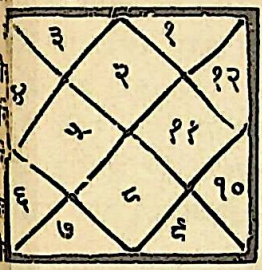
कुं० नं० २२



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व जि
जिस मास व दिनों में, शुक्र, वृषभ रा
में या कर्क राशी में या सिंह में या वृश्चि
राशी में या मकर राशी में या कुम्भ राशी
या मीन राशी में, जब २ कभी आवेंगे औ
चन्द्रमा, जब २ कभी वृषभ राशी में आवें
या शनी जब २ कभी वृषभ राशी में आवे
या बुध जब २ कभी वृषभ राशी में आवेंगे तब तब दे
सब धी और आत्मबल व सुन्दरता सम्बन्धी उन्नति व सुख औ
प्रभाव की शक्ती प्रदान करते हैं। और यदि इसके विपरीत, शु
जब २ कभी मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या तुला राशीप
या धन राशी पर या मेष राशी पर जब २ कभी आवेंगे या मङ्गल
वृषभ राशी पर या गुरू वृषभ राशी पर या राहू वृषभ राशी पर व
केतू वृषभ राशी पर जब २ कभी आवेंगे, तब २ देह सम्बन्धी
आत्मबल और ख्याती, सुन्दरता सम्बन्धी परेशानी का योग पैद
करते हैं। और यदि जन्म के समय में भी, इसी प्रकार की राशिय
में जो २ ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा, तो वह ग्रह ऊप
लिखे अनुसार सारे जीवन भर प्रायः इसी २ प्रकार का फल देत
रहता है। अर्थात् जन्म के समय, अच्छा ग्रह पड़ जाय तो अच्छा
का योग सदैवके लिये और बुरा ग्रह पड़ जायतो बुराईका योग सदै
के लिये प्रायः प्राप्त होता ही रहता है इसके अतिरिक्त यदि कोई ग्रह
सूर्य से अस्त होगा या ३९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से
कम होगा तो उस ग्रह का फल बहुत कम प्राप्त होगा, क्योंकि वह
ग्रह शक्ति हीन होता है। और समय समय पर पंचाँग की गोचर
प्रणाली के ग्रहों का फलादेश, उपरोक्त लिखे अनुसार भी अवश्य
होता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

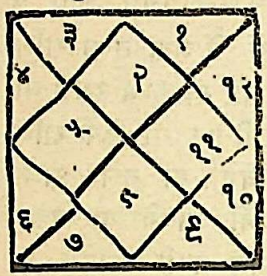
कुं० नं० २३



पंचांग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में व जिन २ मासों व दिनों में शुक्र तुला राशि पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशि या मीन राशी या वृषभ राशी पर या कर्क राशि पर जब-जब कभी आवेंगे, या तुला राशी पर शनी जब-जब कभी आवेंगे या मकर राशी पर शनी जब-जब कभी आवेंगे या राहू या केतू कोई भी जब २ तुला राशी पर आवेंगे तब-तब शत्रु पक्ष में रोग के पक्ष में, विजय का योग पैदा करते हैं। और इसके विपरीत यदि शुक्र कन्या राशी पर या धन राशि पर या मेष राशी पर जब-जब कभी आवेंगे या सूर्य तुला राशी पर जब-जब कभी आवेंगे या चन्द्रमा तुला राशी पर जब २ कभी आवेंगे या बुध तुला राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब शत्रु पक्ष में या कुछ दिक्कतों के पक्ष में या रोग के पक्ष में कुछ परेशानी का योग पैदा करते हैं। यदि ऊपर लिखे अनुसार यही ग्रह जन्म के समय में, कहीं जन्म कुण्डली में भी इन्ही २ राशियों में जो कोई ग्रह बैठा हुआ होगा तो वह ग्रह अपना फल विशेष रूप से जीवन में दिया करता है और जीवन भर अपना असर ऊपर लिखे अनुसार हो प्रायः दिखलाता रहता है। यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या २ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह अपना फल नहीं के बराबर देता है क्योंकि वह ग्रह शक्ती हीन होता है, और बहुत ही सूक्ष्म फल प्रदान करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

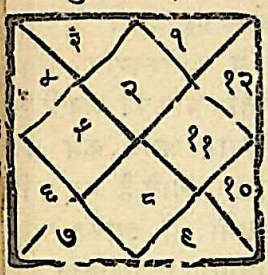
कु० नं० २४



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व म
में व दिनों में सूर्य सिंह राशि पर आते
सूर्य वृश्चिक राशि पर या कुम्भ राशि पर
मीन राशि पर या वृषभ राशि पर या
राशि पर आते हैं, या चन्द्रमा सिंह राशि
आते हैं, या शुक्र सिंह राशि पर आते
शनी सिंह राशि पर आते हैं, तब २ सुख
के साधन व भूमि सम्बन्धी साधन व मातृ
सम्बन्धी साधन सभी अनुकूल और सुन्दर प्राप्त होते हैं और
विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशि में या धन राशि में या
राशि में आवेंगे या मङ्गल सिंह राशि में या गुरू सिंह राशि में या
सिंह राशि में या केतू सिंह राशि में जब २ कभी आवेंगे तब २
शान्ति में व मातृ पक्ष में व मकानादि, रहने के स्थानों में तीनों पक्षों
अनेक प्रकार की विघ्न-बाधा पैदा होती रहती है और यदि जन्म
समय यह सभी ग्रह ऊपर वाली राशियों के अनुसार जो-जो कोई
जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो वह ग्रह ऊपर लिखे अनुसार
विषयों में विशेष फल देने के जीवन में सदैव योग पैदा करते रहें
चाहे को ग्रह अनुकूल बैठा हो या प्रतिकूल जैसा भी बैठा होगा
ही असर जीवन में सदा दिखाता रहता है, इसके अतिरिक्त जो २
ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो कोई भी ग्रह २८ अंश से अधिक
या कोई भी ग्रह १ अंश से कम होगा वह ग्रह अपना पूरा असर
अनुसार नहीं दिखा सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० २५

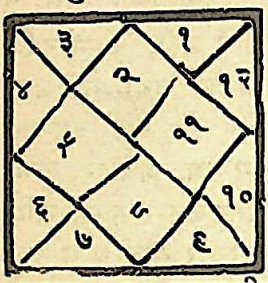


पंचाँग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में जिन-जिन मासों व दिनों में शनी, कुम्भ राशि पर या वृषभ राशि पर आवेंगे तथा सूर्य जब-जब कुम्भ राशि पर आवेंगे या बुध जब-जब कुम्भ राशि पर आवेंगे या शुक्र जब २ कुम्भ राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कुम्भ राशि पर आवेंगे तब २ बड़े कारवार सम्बन्ध में तथा पिता व मान के पक्ष में, उन्नति का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि शनि, मेष राशि पर या धन राशि पर जब-जब कभी आवेंगे या मङ्गल कुम्भ राशि पर जब-जब कभी आवेंगे या गुरू कुम्भ राशि पर जब २ कभी आवेंगे या राहू कुम्भ राशि पर या केतू कुम्भ राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब २ पिता या मान या उन्नति के व्यौपार आदि कार्यों में कुछ परेशानी व कुछ हानियों का योग पैदा करते हैं, और यदि जन्म के समय में जो-जो कोई ग्रह भी ऊपर लिखी राशियों में से किसी राशि में भी यदि जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो वह ग्रह बहुत ही प्रबल फल देने वाला होता है, अर्थात् उत्तम राशियों में बैठा होगा तो उत्तम फल सदा देता रहेगा और यदि अशुभ राशि में कहीं बैठा होगा तो सदैव अशुभ फल देता रहेगा। इसके अतिरिक्त जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा तो, या जो कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या जो कोई ग्रह १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना फल ऊपर लिखे अनुसार अच्छा या बुरा किसी भी प्रकार का पूरा-पूरा फल दे नहीं सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाभकारी रंग, मणियां ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं० २६



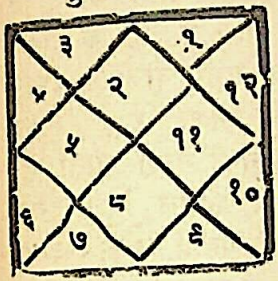
(शनी) इस वृषभ लग्न वालों को सबसे प्रमुख उन्नति दायक ग्रह शनी है, यह शनी भाग्य की ताकत से व ईश्वरीय सहायक शक्ती से तथा पिता स्थान की शक्ती से व राज-समाज तथा व्योपार आदि कर्म की शक्ती से, उन्नति के कारण बनाते हैं, यह शनी इन सभी शक्तियों के स्वामी हैं, इसका रङ्ग काला व कुछ गहरा नीला है, इसके स्वभाव में सतोगुण व रजोगुण की प्रधान्यता है–इनकी इस कुण्डली में बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं– नं० २–३–४–५–६–७–८–१०–११–१२ किन्तु प्रमुख राशियां १०–११–१२–२ है, इनकी मणी नीलम है, यह मान प्रतिष्ठा, धर्म, कर्म सभी उत्तम कार्यों के प्रमुख अधिकारी हैं।

(बु०) इस वृषभ लग्न वालों को धन, जन, संतान, विद्या, बुद्धी, विवेक, वाणी इन सब चीजों के अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं। यही इन सर्व गुणों को प्रदान करने की शक्ती पैदा करते हैं। इनका रंग हरा है स्वभाव में बचपन है। इनकी मणी पन्ना है, यह महान् विवेकी ग्रह हैं, इनकी इस कुण्डली में बैठने की प्रमुख, उत्तम लाभप्रद राशियां–३–५–१०–११–२–६–८ यह हैं। और इनको-७-९-१-१—यह राशियां नेष्ट हैं, यह बुद्धी योग द्वारा धन दिलाते हैं।

(गु०) इस वृषभ लग्न वालों को लाभ और आमदनी के संबंधों में तथा आयु और पुरातत्व सम्बन्धी कार्यों में तथा जीवन की दिनचर्या और निर्वाह शक्ती के सम्बन्ध में–इन सभी सम्बन्धों में प्रधान अधिकारी बृहस्पति हैं। इनका रंग पीला है, स्वभाव में बुजुर्गी है, लाभ के लिये बड़ी भारी चाल चलते हैं इनकी मणि पुखराज है, इनके बैठने की प्रधान राशी, अंक—१२–४–८–श्रेष्ठ हैं और ७–१०–१ नेष्ट हैं। इनका हृदय की शक्ती पर स्थान रहता है और यह मुसीबत में भी लाभ का साधन कुछ न कुछ हृदय बल के द्वारा करते रहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० २७



(शु०) इस बृषभ लग्न वालों को देह के सम्बन्धों में तथा शत्रु और रोग के सम्बन्धों में तथा ननसाल पक्ष व झगड़े झजटों के सम्बन्धों में तथा आत्मबल व देह की सुन्दरता तथा हृदय की पेचीदा चालों के सम्बन्ध में इन सभी संबंधों के शुक्र प्रधान अधिकारी हैं, इनका रग सफेद है, स्वभाव में गहरी युक्तियों का योग है तथा स्वाभिमान की प्रधानता है, इनकी मणि हीरा है, इनकी बैठने की श्रेष्ठ राशियों के अंक यह–२–८–१०–११–१२–३–४-५ हैं और नेष्ट अंक–७–९–१–यह हैं, यह बुरे समय में भी देह के द्वारा प्रभाव की शक्ती देते हैं।

(मं०) इस बृषभ लग्न वालों को–स्त्री सम्बन्ध में व दैनिक रोजगार के संबंध में तथा खर्च के संबंध में तथा बाहरी संबंधों में तथा इन्द्रिय भोगादिक संबंधों में मंगल प्रमुख अधिकारी है। इनका रग लाल है, इनकी मणि मूंगा है, इनका स्वभाव गरम है, खर्च की और हानि की शक्ति रखते हैं,। इनको बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–अंक –८–१०–१२–१–५ इन-इन अंकों पर बैठना ही मंगल का कहीं तक ठीक है अन्यथा एक प्रकार से यह जहाँ भी बैठेंगे वहां उस स्थान में कुछ न कुछ खराबी अवश्य करेंगे और ४–९ यह दोनों नेष्ठ अंक हैं।

(सू०) इस प्रकार की वृषभ लग्न वालों को सुख सम्बन्धी मामलों में तथा मकान जायदाद के सम्बन्धों में तथा शांती और तेज की प्राप्ती के सम्बन्धों में सूर्य प्रधान अधिकारी हैं। इनका रंग सुनहला-लाल है, इनका स्वभाव महान् गरम है और स्वरूप महान् तेजस्वी है, इनकी मणि माणिक है। इनके बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ इस प्रकार हैं–अंक–२–३–४ ५–६–८–१०–११–१२ इन-इन अंकों पर बैठना इनका शुभ और आनन्ददायक है और ७–९ पर बैठना नेष्ट है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 वृषभ लग्न वालों को रेस आदि सभी व्यापार कार्यों के लिए लाभकारी रङ्ग, मणियां तथा ग्रहों के गुण दोष का फलादेश

कुं० नं० २८



(चं०) इस वृषभ लग्न वालों को बाहुबल की शक्ति तथा मानसिक शक्ति तथा बहन भाइयों की शक्ति व देह के आकर को ढांचा शक्ति, इन सभी चीजों के प्रधान अधिकारी चन्द्रमा हैं, इनका रङ्ग सफेद उज्वल चमकदार है। इनकी मणि मोती है, इनका स्वभाव बहुत ही शीतल है। इनके बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं, अंक २-३-४-५-६-१०-११-१२-इन अंकों पर इनका बैठना श्रेष्ठ शक्ति-दायक है, और ७-८-९-१ इन अंकों पर बैठना नेष्ठ है, यह मन की शक्ति पर रह कर काम करते हैं।

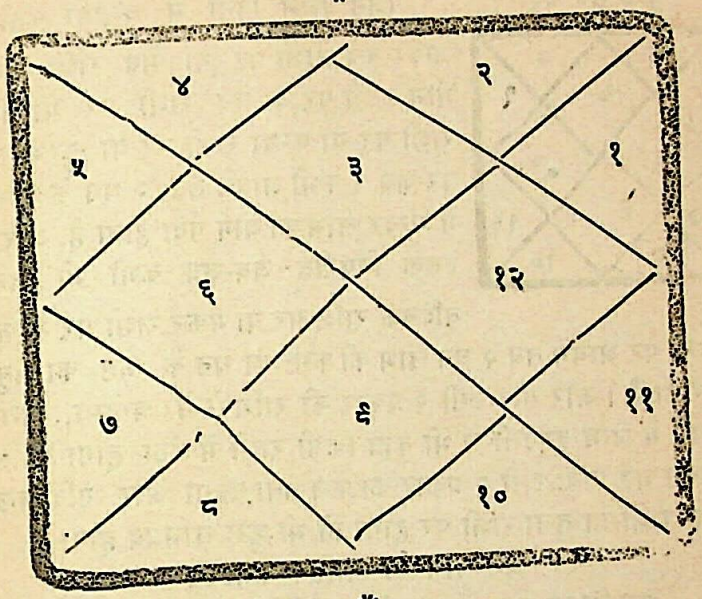
(रा०) इस वृषभ लग्न वालों को दिमाग की गुप्त चालाकिया तथा गुप्त युवितयाँ तथा वित्त से ज्यादे लाभ पाने की सूझ तथा कुछ कष्ट व कुछ कमी इत्यादि चीजों के प्रधान अधिकारी राहु हैं, इनका रग काला है, स्वभाव में छिपाव और कटुता है, इनकी मणि गोमेध है। इनके बैठने की राशियां इस प्रकार श्रेष्ठ रहती हैं। राशि अंक ३-४-१०-१२ इन-इन अंकों पर वह अपनी चतुराई से लाभ योग बनाते हैं और इनका –९–धन राशि पर बैठना नेष्ट है और यह बुरे समय में भी गुप्त रूप से जीवन शक्ति देते हैं।

(के०) इस वृषभ लग्न वालों को अपने बाहुबल के गुप्त कर्म की महान शक्ति एवं गुप्त बहादुरी तथा अन्धाधुन्दी कार्य संचालन शक्ति तथा कुछ कमी और कुछ कष्ट इत्यादि शक्तियों के प्रधान अधिकारी केतू हैं। इनका रंग काला है, स्वभाव में कटुता व गुप्त धैर्य है, इनकी मणि लहसनियां है, और इनके बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं—अंक–५–७–९–१२ इन-इन अंकों पर यह अपनी दृढ़ता शक्ति से बैठकर अन्त तक में और भी लाभप्रद रहते हैं किन्तु इनका अंक ३ मिथुन पर बैठना नेष्ट है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिथुन लग्न फलादेश प्रारम्भ

*

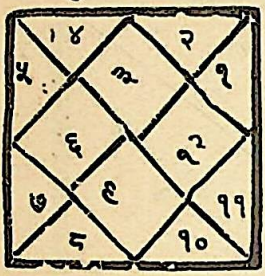


*

इस मिथुन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः चं० मं० गु० बु० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० २९ से लेकर कुण्डली नं० ४२ तक में आपको इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० २६



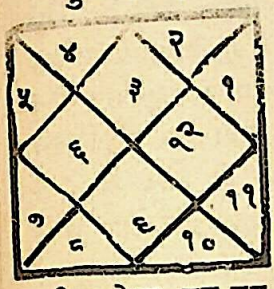
जिन जिन दिनों में चन्द्रमा पंचांग के अन्दर कर्क राशी पर या मेष राशि पर या मीन राशी पर या धन राशी पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या कुम्भ राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ धन के सम्बन्धों में सुन्दर लाभ का योग पैदा होता है, और यदि इसके विपरीत जब-जब कभी भी चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर या मकर राशी पर या वृषभ राशी पर आवेंगे तब २ धन लाभ की कमी या धन के कष्ट का अनुभव कराता है। और यदि इसी २ प्रकार की राशियों में चन्द्रमा, जन्म के समय में जन्म कुण्डली में भी कहीं किसी राशी में बैठा होगा तो सभी जीवन भर प्रायः इसी २ प्रकार का फल देता रहेगा और यदि चन्द्रमा सिंह राशी या तुला राशी पर होगा तो भी कुछ लाभप्रद होगा।

धन लाभ का मासिक फलादेश

इस मिथुन लग्न में जन्म देने वालों को जिस २ मास व समय में पंचाग के अन्दर बुध कर्क राशी पर या मेष राशी पर आवेंगे या सूर्य मेष राशी पर या कर्क राशो पर आवेंगे या मगल मेष राशी पर या कन्या राशो पर आवेंगे या शुक्र, मेष राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ धन का लाभ अच्छा प्राप्त होता रहेगा। और यदि इसके विपरीत बुध जब २ कभी मोन राशी में या वृषभ राशी में या वृश्चिक या मकर राशी में आवेंगे या मंगल जब-जब कभी कर्क राशी में या वृषभ राशी में आवेंगे या सूर्य जब-जब कभी वृषभ राशी में आवेंगे या शुक्र जब २ कभी वृषभ राशी में या कर्क राशी में आवेंगे, तब २ धन लाभ की हानि या लाभ को कमी पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय जन्म कुण्डली में भी यह सब ग्रहों में से कोई भी ग्रह ऊपर लिखी हुई राशियों में से कहीं भी कोई बैठा होगा तो वह सारे जीवन भर प्रायः इसी ऊपर लिखी स्थिति के अनुसार ही अपना फल देता रहता है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

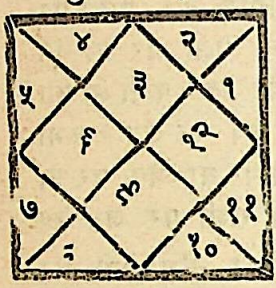
कुं० नं० ३०



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षो में व मासों में व दिनों में बृहस्पति कर्क राशि पर या मेष राशो पर या मीन राशी पर या धन राशी पर या सिंह राशी पर जब २ कभी आवेगा या राहू मिथुन पर या मेष पर जब २ कभी आवेगा या केतु धन राशी पर या मेष पर या सिंह राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब-जब कभी आवेगा, तब-तब उन वर्षों में धन लाभ की बृद्धि होगी और इसके विपरीत यदि जिन-जिन वर्षों में बृहस्पति बृषभ राशी में या मकर राशी में आवेगा या राहू कर्क राशी में या धन राशी में आवेगा या केतू मिथुन राशी या कर्क राशीमें आवेगा या शनि मेष राशी में जब कभी आवेगा तो उन वर्षों में लाभ की कमी व धन की कुछ हानि पैदा होती है। इसी प्रकार यदि जन्म के समय में कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर ऊपर लिखी राशियों के अनुसार कहीं भी कोई बैठा होगा, तो वह अपना फल ऊपर के लिखे अनुसार प्रायः सारे जीवन भर कुछ न कुछ अधिकांश रूप में देता ही रहता है। उत्तम फल देने वाले ग्रहों के सम्बन्ध में यह जानना जरूरी है कि कोई ग्रह सूर्य से अस्त तो नहीं है, और कोई ग्रह २९ अंश से अधिक या २ अंश से कम तो नहीं है यदि कोई ग्रह अस्त है। तो चाहे जन्म कुण्डली के ग्रह हों या पंचांग गोचर के ग्रह हों, उन ग्रहों का फलादेश पूर्ण रूपेण प्राप्त नहीं हुआ करता है। जिन-जिन वर्षो में वार्षिक ग्रहु श्रेष्ठ आते हैं, उन उन वर्षों में मासिक ग्रह भी जब श्रेष्ठ आते हैं, तब २ धन लाभ सम्बन्धी उत्तम फल अधिक प्राप्त होता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

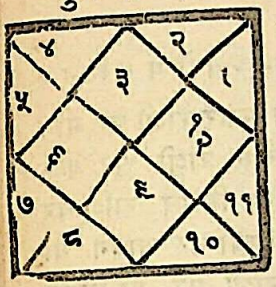
कुं० नं० ३१



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में मासों में व दिनों में खास तौर से सभी ग्रह प्रायः इस प्रकार हों अर्थात् जिन २ वर्षों में बृहस्पति मीन राशि पर या कर्क राशी पर हो और राहू मिथुन राशि पर या मेष राशि पर हो और केतू धन राशि पर या मेष राशि पर हो और शनी वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या कुम्भ राशि पर हो और सूर्य मेष राशी पर या सिंह राशि पर या मिथुन धन मीन कन्या पर हों और बुध मिथुन सिंह या धन कुम्भ मेष राशि पर हो और मङ्गल मेष कन्या या सिंह राशि पर हो शुक्र वृष राशि पर या तुला राशि पर हो और चन्द्रमा तो केवल वृश्चिक राशि व मकर राशि को छोड़कर कहीं भी घूमते रहें, अतः जब २ कभी उम्र के किसी भी समय में यह सभी ग्रहों का योग पंचांग द्वारा ऊपर लिखी स्थिति के अनुसार आता है, तब-तब ही प्राणी का समय समझा जाता है और यदि जन्म के समय में भी कहीं इसी २ प्रकार की राशियों में यह ग्रह जन्म कुण्डलीं में भी जिस पुरुष के बैठे होंगे, तो असली राजयोग उसी पुरुष को प्राप्त होता है, और प्रायः ऐसे मनुष्य की जिन्दगी का अधिकांश भाग अमीरी के ही रूप से व्यतीत होता है किन्तु यदि इन श्रेष्ठ ग्रहों में से कोई भी ग्रह सूर्य से कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या कोई भी ग्रह १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना श्रेष्ठ फल पूर्ण रूप से नहीं देता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

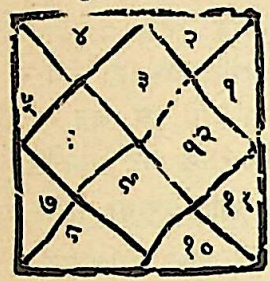
कुं० नं० ३२



पंचांग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में व मासों में व दिनों में शनी, तुला राशि पर या सिंह राशि पर जब २ कभी भी आवेंगे या वृहस्पति जब-जब कभी मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर जब २ भी आवेंगे या बुध जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर आवेंगे या मंगल जब २ कभी मीन राशि पर या तुला राशि पर जब २ कभी आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी तुला राशि पर आवेगे या शुक्र जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर या मीन राशि पर या मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब २ इन सभी ग्रह योगों में विद्या, बुद्धि, सन्तान, वाणी की शक्ति इन चीजों में सफलता व उन्नति की मार्ग शक्ति पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कोई तुला राशि पर आवेंगे या शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशि पर मकर राशि पर कन्या या कर्क राशि पर जब २ भी कभी आवेंगे तब २ यह सभी ग्रह योग सन्तान पक्ष और विद्या, वाणी आदि के पक्ष में विपरीत कार्य करेंगे और यही ग्रह योग यदि जन्म के समय जन्म कुण्डली में भी ऊपर लिखी स्थित के अनुसार कोई ग्रह किसी भी राशि में यदि बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन पर ही ऊपर वाले फलादेश के अनुसार ही फल देता रहता है। किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक और १ अंश से कम ह गा तो वह ग्रह अपना पूरा २ फल नहीं दे सकता है क्योंकि वह ग्रह निर्बल स्थिति में है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

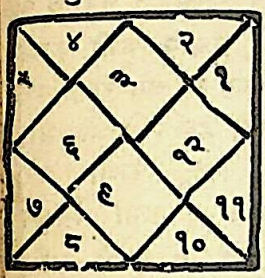
कुं० नं० ३३



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व जिन २ मासों में ब दिनों में शनी मकर राशी पर मीन या कुम्भ राशी पर बृश्चिक राशी पर कर्क राशी पर तुला राशी पर या मिथुन राशि पर जब २ कभी भी इन २ राशियों पर आवेंगे या मंगल जब २ कभी मकर राशी पर या मिथुन राशी पर या तुला राशी पर जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब कभी मकर राशी पर आवेंगे या बुध कर्क राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ आयु व उदर सम्बन्ध में व पुरातत्व सम्बन्धों में व जीवन निर्वाह के सम्बन्ध में लाभ और उन्नति का मार्ग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि बृहस्पति जब २ कभी मकर राशी पर या कर्क राशी पर या बृषभ राशी पर जब २ कभी आवेंगे या शुक्र मकर राशी पर या कर्क राशी पर जब २ कभी आवेंगे या शनी जब २ कभी वृषभ राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ आयु सम्बन्ध में व पुरातत्व सम्बन्ध में व जीवन निर्वाह के सम्बन्ध में, कमजोरियां व हानियां पैदा करते हैं और इसी २ प्रकार के ग्रह जन्म के समय में यदि जन्म लग्न में भी इन्ही २ राशियों में जो २ कोई भी ग्रह बैठा होगा तो वह ग्रह जीवन भर प्रायः इसी २ प्रकार का फल देता रहा करेगा और जो जो ग्रह यदि कोई सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या एक अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना पूरा-पूरा फल पूरी-पूरी शक्ति से नहीं दे सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

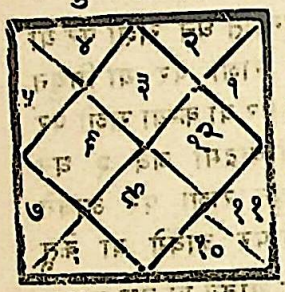
कुं० नं० ३४



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में या मासों में व दिनों में वृहस्पति धन राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर जब २ कभी आवेंगे। या चन्द्रमा जब २ धन राशी पर आवेंगे या मिथुन राशी पर आवेंगे या सूर्य जब २ धन राशी पर आवेंगे या केतू जब २ भी धन राशी पर आवेंगे या बुध जब २ कभी धन राशी पर या मिथुन राशी पर जब २ कभी आवेंगे या मगल भी जब २ धन राशी पर या कन्या राशी पर या मिथुन राशी पर जबर कभी आवेंगे तब तब स्त्री पक्ष में वह दैनिक रोजगार के पक्ष में लाभ व तरक्की का योग पैदा करतेहैं और इसके विपरीत यदि गुरु मकर राशि पर या वृषभ राशि पर आवेंगे शुक्र जब२ या कभी धन राशी पर आवेंगे या राहू जब २ कभी धन राशी पर आवेंगे या शनी जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे, तब २ स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ हानि व परेशानी पैदा करते हैं। और यदि इसी प्रकार की राशियों में जन्म के समय में कोई ग्रह यदि जन्म कुण्डली में भी ऊपर लिखे अनुसार कहीं भी बैठा होगा, तो वह ग्रह सारे जीवन भर प्रायः इसी प्रकार का उपरोक्त फलादेश के अनुसार हमेशा फल देता रहेगा। यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह यदि २९ अंश से अधिक होगा या कोई भी ग्रह यदि १ अंश कम होगा तो उस ग्रह का फल कभी भी पूरी शक्ती युक्त नहीं मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० न० ३५

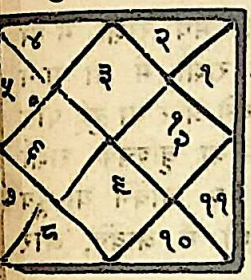


पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में मासों में व दिनों में शनी, जब २ कभी, कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर या धन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी भी कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर आवेंगे या बृहस्पति जब २ कभी सिंह राशी पर या तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर जब २ कभी आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर आवेंगे, या सूर्य जब २ कभी कुम्भ राशी पर आवेंगे, तब २ धर्म, भाग्य, भक्ति, व देवी शक्ति के गुणों में चमत्कार तथा उन्नति व लाभ योग पैदा करते हैं। और इसके विपरीत यदि, शनी, वृषभ राशी में या मेष राशी में या वृश्चिक राशी में, मकर राशी में जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कभी भी कुम्भ राशी में या सिंह राशी में जब २ कभी आवेंगे और राहू या केतू जब २ कभी कुम्भ राशी में या सिंह राशी में आवेंगे तब २ धर्म, भाग्य, भक्ति व देवी शक्ती, आदि २ कार्यों में विफलता का योग पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय में भी जन्म कुण्डली के अन्दर कहीं पर ग्रह इसी प्रकार की राशियों में ऊपर लिखे अनुसार यदि बैठा हो तो, वह ग्रह तो अपना फल सारे जीवन भर प्रायः ऊपर लिखे अनुसार ही सदैव देता रहता है। और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा २ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह शून्य के बराबर ही सूक्ष्म फल देता रहेगा, क्योंकि वह ग्रह शक्ति हीन अवस्था में होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 5030

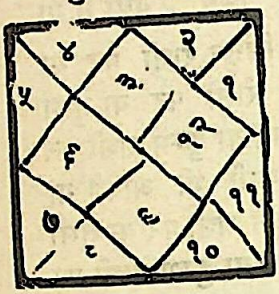
कु० नं० ३६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में या मासों में व दिनों में बुध मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या मेष राशी पर जब २ कभी भी आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या मेष राशि पर जब २ कभी आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशि पर आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी सिंह राशि पर आवेंगे या राहू जिस २ वर्षों में मिथुन राशि पर आवेंगे तब २ ऐसे ग्रहों के प्रभाव से देह को आनन्द उमङ्ग और स्फूर्ति व आत्मबल तथा सुन्दरता प्राप्त होती है। किन्तु इसके विपरीत यदि बुध वृषभ राशि में या कर्क राशि में या वृश्चिक राशि में या मकर राशि में या मीन राशि में जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कभी मिथुन राशि पर या धन राशी पर आवेंगे या मङ्गल मिथुन राशि पर व मीन राशि पर व धन राशि पर व वृश्चिक राशि पर जब २ कभी आवेंगे या शनी मेष राशि पर जब २ कभी आवेंगे या राहू मिथुन राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब २ देह पक्ष की सुन्दरता ख्याती में विघ्न बाधा व दिक्कतें पैदा करते हैं। इसी प्रकार यदि जन्म समय में यह सब ग्रहों में कोई भी ग्रह सब या थोड़े ऊपर लिखी राशियों के अन्दर यदि जन्म कुण्डली में भी बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही इस २ प्रकार का फल अधिकांश रूप में ही देते रहते हैं। इसके अतिरिक्त यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा, १२ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह अपनी पूरा २ फल पूरी पूरी शक्ति सहित नहीं दे कर पाते हैं।

CC-0. Jangamawadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ३७

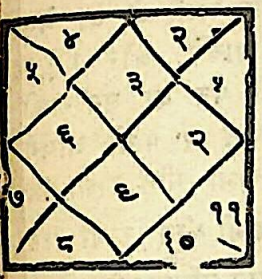


पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में
मासों में व दिनों में मंगल, मेष राशी में
सिंह राशी में या वृश्चिक राशी में या म
राशी में जब २ कभी आवेंगे और या वृह
जब २ कभी कर्क राशी में या वृश्चिक रा
में या मीन राशी में, जब २ आवेंगे या
जब २ कभी वृश्चिक राशी में आवेंगे,

शनी जब २ कभी वृश्चिक राशी में या कु
राशी में या कन्या राशी में जब २ आवेंगे और राहू या केतू दो
में कोई भी जब कभी वृश्चिक राशी पर आवंगे तब २ शत्रु पक्ष
लाभ और विजय, तथा रोग, झगड़े झंझट आदि के विषय में, मु
का भाग पैदा करते हैं। और इसके विपरीत यदि मंगल जब २ क
वृषभ राशी में कर्क राशी में, आवेंगे और या चन्द्रमा जब
कभी वृश्चिक राशी में आवेंगे, और या शुक्र, जब २ कभी वृश्चि
राशी में आवंगे और या बुध जब २ कभी वृषभ राशि में आ
तब तब शत्रु पक्ष से व झगड़े झंझट तलब मामलों से अशांती का
पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय में इन सब ग्रहों में से जो
भी ऊपर लिखी राशियों के अनुसार, जन्म कुण्डली में भी बैठे
तो वह सभी ग्रह, प्रायः सारे जीवन भर उपरोक्त विषयक फल देते र
किन्तु इतना ध्यान अवश्य करें कि जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्ड
में या पंचाँग देखते समय यदि २९ अंश अधिक होगा या जो
ग्रह १ अंश से कम होगा तो वह गृह अपना फल पूरी शक्ति
अनुसार नहीं दे सकते हैं, 'क्योंकि यह निर्बल होते हैं।'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

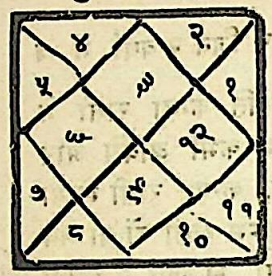
कुं० नं० ३८



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में वृहस्पति, कन्या रासी में या मीन रासी में जब २ कभी आवेंगे और या बुध, जब २ कभी, कन्या रासी में या मिथुन रासी में या कुम्भ रासी में या मेष रासी में या धन रासी में, जब २ आवेंगे और या चन्द्रमा, जब २ कभी, कन्या रासी में या मीन रासी में जब २ आवेंगे ता श्रेष्ठ फल करते हैं और रानी तथा मंगल दोनों में से कोई भी यदि कन्या रासी पर आवेंगे तो कुछ अड़चनों से लाभ करेंगे। और सूर्य जब २ कन्या रासी पर आवेंगे. तब मकान, भूमि तथा माता आदि सुख सम्बन्धों के विषय में श्रेष्ठ फल प्रदान करते हैं। किन्तु इनके विपरीत यदि, बुध, वृषभ रासी में या वृश्चिक राशी में या मकर रासी में, जब २ कभी आवेंगे और शुक्र जब २ कभी कन्या रासी में या मीन रासी में आवेंगे और राहू या केतु कोई भी जब २ कभी कन्या रासी में आवेंगे तब २ सुख शांती में बाधा होगी और मकान भूमि, माता आदि के विषय में कुछ अशांती का योग पैदा होता हैं और यदि जन्म के समय में भी इन २ ग्रहों, में कोई भी, ग्रह, इन्हीं रासियों के अन्दर अगर जन्म कुण्डली में बठे होंगे, तो, वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहते हैं। किन्तु यदि कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ से कम होगा तो वह ग्रह अपना फल पूरी २ तादाद में नहीं देते हैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

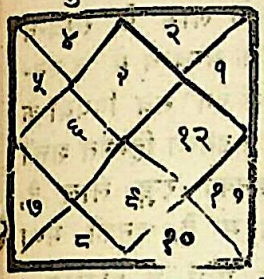
कुं० नं० ३९



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में वृहस्पति कर्क राशी में या कन्या राशि में या मीन राशी में या मेष राशी में जब २ कभी आवेंगे, और मङ्गल जब २ कभी, मीन राशी पर या धन राशी पर या सिंह राशी पर जब २ कभी आवेंगे और चन्द्रमा, जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे और सूर्य-जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे-तब २ पिता स्थान में व राज समाज व मान प्रतिष्ठा के स्थान में व बड़े कारबार के स्थान में अपने २ वित्त अनुसार उन्नति का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि गुरु मकर या वृषभ राशी पर आवेंगे या बुध, मीन राशी पर या कन्या राशि पर आवेंगे, और यदि राहू या केतू, दोनों में से कोई भी मीन राशी पर आवेंगे, और यदि, शनी या शुक्र इन दोनों में से कोई भी मीन राशी पर आवेंगे तो यह इस उपरोक्त विषय में कुछ न कुछ हानिकारक कार्य करते हैं। किन्तु यदि जन्म के समय में, इन सब ग्रहों में से जो २ कोई ग्रह, इन्हीं राशियों में यदि जन्म कुण्डली में भी बैठे होंगे तो, वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही, ऊपर लिखी हुई स्थिति के अनुसार फल देते ही रहते हैं। इसमें इतना और ध्यान रखना आवश्यक है कि, शनी, शुक्र, मङ्गल, यह दोनों ग्रहों में से कोई भी यदि मीन राशी पर बैठे होंगे तो, यह ग्रह कुछ २ हानिप्रद और प्रायः लाभ की ओर भी कार्य करते हैं। इसके अलावा यदि कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १० अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह हमेशा ही बहुत थोड़ा असर करने वाला होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० न० ४०



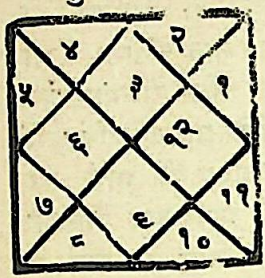
(गु०) इस मिथुन लग्न वाले प्राणियों को राज समाज, कार व्यौपार मान प्रतिष्ठा, पिता का संबंध, स्त्री का संबंध, दैनिक रोजगार, भोग वैभव, इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता बृहस्पति हैं यह हृदय की शक्ति पर रह कर कार्य करते हैं इनका रङ्ग पीला है स्वभाव बड़प्पन का है. उन्नति के मार्ग में रोजाना के कार्य क्रम की प्रधानता से उत्तम शक्ति देते हैं इनकी मणी पुखराज है, इनका जन्म कुण्डली में बैठने की उत्तम राशियां यह हैं–३–४–५–६–७–८–९–११–१२–१ और नेष्ठ राशियां १०–२ हैं यह बुरे से बुरे समय में भी कर्म बल की शक्ति से रोजगार और मान की कुछ न कुछ रक्षा कर ही देते हैं।

(चं०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को कोष के अधिपति मुख्य ग्रह चन्द्रमा है-यह चन्द्रमा-धन की संग्रह शक्ति और कुटुम्ब स्थान की शक्ति के अधिपति फल दाता हैं और मन की गति पर रहते हैं, इनका रङ्ग गौर है, इनकी मणी मोती है, इनका स्वभाव चचल है, उन्नति के मार्ग में, धन जोड़ने की चेष्टा प्रधान है, इनका जन्म कुण्डली में बैठने की उत्तम राशियां यह हैं। ४-५-६-७-९-११-१२-१-३ और नेष्ठ राशियां ८–१०–२ यह तीन हैं,

(बु०) इन मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को-देह, माता-सुख-भूमि-प्राण, आत्मशांती इन सब चीजों के अधिकारी फलदाता, बुध हैं, इनका आत्म विवेक की शक्ति पर रहने का स्थान हैं इनका रङ्ग हरा है इनका स्वभाव स्वरूप, बचपन का है, इनकी मणी पन्ना है, यह उन्नति के स्थान में, आराम का पहिले सोचते हैं, यह शांती प्रधान हैं, इनका जन्म कुण्डली में बैठने की उत्तम राशियां यह हैं,–३–४–५–६–७–९–११–१–और नेष्ठ राशियां–८–१०–१२–२ यह हैं किन्तु इन का ६ अंक पर बैठना उन्नति के लिए अशुभ है और सुख के लिये श्रेष्ठ हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ४१



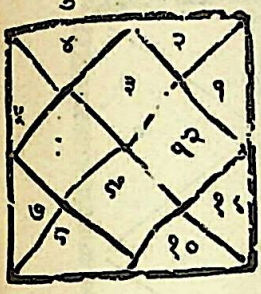
(मं०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को शत्रु पक्ष में आमदनी के लाभ के सम्बन्ध में व रोग झगड़े झंझटों के सम्बन्ध में व ननसाल पक्ष के सम्बन्ध में इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी मङ्गल हैं इनका हिम्मत शक्ती पर रहने का स्थान है, इनका रङ्ग लाल है, इनका स्वभाव बहुत गरम है, इनकी मणी मूंगा है यह उन्नति के मार्ग में परिश्रम व दौड़ धूप व चालाकी व हिम्मत शक्ती से कार्य करते हैं यह लाभ प्राप्ती के हेतु कठिनाइयों की परवाह नहीं करते हैं इनकी जन्म कुण्डली में बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं–१–५–१२–३–७–६–९ और नेष्ट राशियां —२–४ हैं। वाकी की सामान्य राशियां है।

(श०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य धर्म, आयु पुरातत्व, समय व्यतीत करने का दैनिक अमीरी ढङ्ग, यश अपयश, ईश्वर भक्ति,धर्म की वास्तविकता की कमी इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी हैं, इनका रङ्ग गहरा नीला है इनकी मणि नीलम है, इनका स्वभाव हठीला है,वह उन्नति के मार्ग में कुदरती शक्ति का प्रयोग कुछ आडम्बर के साथ करते हैं, और इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं-११-३-५-७–८-९ और १–२ नेष्ठ हैं इनकी सभी राशियां ऐसी हैं जिनमें कुछ व कुछ बुराई और अच्छाई सबमें लगी है।

(सू०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को पुरुषार्थ भाई बहन महनत, तेज इत्यादि शक्तियों के प्रधान अधिकारी ग्रह सूर्य हैं,इनका रङ्ग सुनहला है इनका स्वभाव अत्यन्त गरम है, इनकी मणी मणिक है, वह उन्नति के मार्ग में मह न पुरुषार्थ से काम करते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं-१-१२–९–८–६–३–५ और ७-१०–२ ये तीन नेष्ठ राशियां हैं वाकी की सभी अच्छी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ४२



(शुक्र) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को विद्या, बुद्धी सन्तान, खर्च बाहरी स्थानों के सम्बन्धों बुद्धी का भ्रम, सन्तान की कमजोरी या संतान दुःख, इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी शुक्र हैं। इनका रंग उज्जवल है. स्वभाव में दूरंदेशी व बुजुर्गी का ख्याल है, इनकी मणी हीरा है, इनकी कुण्डली में बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–३–५–७–९–११–१२–१ और इनकी नेष्ठ राशियां–६–८–१०–४–२ हैं। वैसे तो जहाँ भी बैठेंगे वहां कुछ न कुछ कम करते हैं।

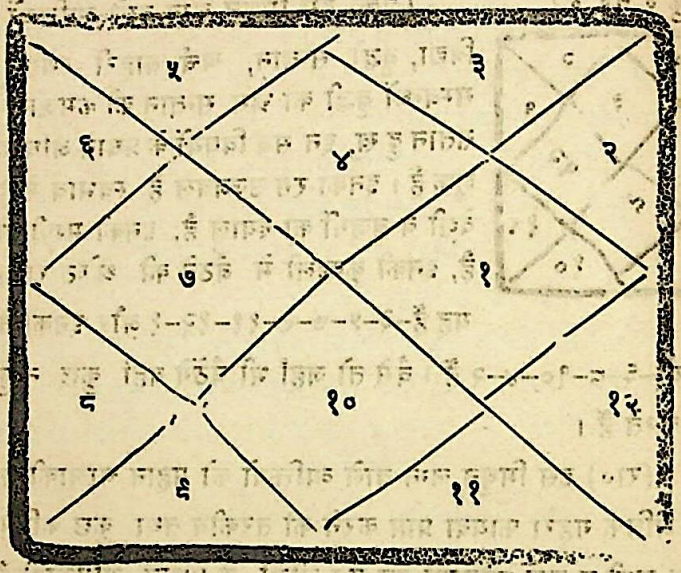
(रा०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को महान चालाकी तथा बहुत अधिक गहरा फायदा प्राप्त करने की तरकीब तथा कुछ कठिनाई व कुछ कमी व कुछ परेशानी इन सब चीजों के प्रधान अधिकारी हैं। इनका रङ्ग काला है, इनका स्वभाव चालाक है, इनकी मणी गोमेध है इनके बैठने की उत्तम राशियां यह हैं–३–५–८ १ और नेष्ट राशियां यह हैं–४–९–१०–११–१२ बाकी की सब राशियाँ मध्यम हैं और वैसे तो यह जहाँ भी बैठते हैं वह शांती नहीं लेने देते।

(के०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को बहादुरी की महान छिपी हुई शक्ति व कठिनाईयां और कुछ चिन्ता व कुछ गुप्त दृढ़ता इन सब बातों के प्रधान अधिकारी ग्रह केतू हैं। इनका रङ्ग काला है इन का स्वभाव हठीला गुप्त धैर्य वाला है, इनकी मणी लहसनियां है। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं–५–९–८–१ और नेष्ठ राशियां यह हैं–४–३–१०–२–१२–१' बाकी दो राशियां ६–७ सामान्य हैं किन्तु इनका बैठना कहीं भी शांत प्रिय नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्क लग्न फलादेश प्रारम्भ

*

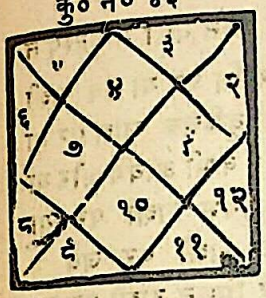


*

इस कर्क लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः सू० शू० मं० गु० चं० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० ४३ से लेकर कुण्डली नं० ५६ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० ४३



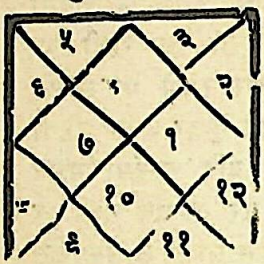
इस कर्क लग्न वालों को पंचांग के अन्दर जिस २ दिनों में चन्द्रमा सिंह राशि पर आवेगा या वृषभ राशी पर आवेंगे या मेंष राशी पर या मीन राशी पर या मकर राशी पर आवेंगे तब तब धन लाभ का योग सुन्दर बनता रहता है और इसके विपरीत यदि चन्द्रमा मिथुन राशी पर या कुम्भ राशी पर या धन राशी पर जब २ आवेंगे तब तब धन लाभ के विपरीत व अशांतप्रद योग पैदा करते हैं और वृश्चिक राशी पर भी जब २ चन्द्रमा आवेगा तब तब अशांत प्रद योग पैदा करता है और यदि जन्म के समय में चन्द्रमा जन्म कुण्डली के अन्दर भी ऊपर लिखी राशियों में से ही कहीं बैठा होगा तो वह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त प्रकार का सा फल हमेशा देता रहेगा और जब चन्द्रमा कन्या या तुला राशी पर भी कहीं होगा तो भी फल अच्छा ही प्रदान करता है।

(धन लाभ का मासिक फलादेश)

इस कर्क लग्न वालों को पंचांग के अन्दर जिस २ मासों में सूर्य सिंह राशी पर या कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर या मेष राशि पर या कर्क राशि पर या मीन राशी या मकर राशी पर जब २ आवेंगे और शुक्र जब २ वृषभ राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर या कर्क राशी पर या मकर राशी पर या वृश्चिक राशी पर या सिंह राशी पर जब २ कभी आवेंगे और मंगल जब २ कभी वृषभ राशी या सिंह राशी या मकर राशि पर या तुला राशि पर या कन्या राशि पर या मेष राशि पर या मीन राशि पर जब२ आवेंगे तब२ धन लाभ की उन्नति का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि सूर्य मिथुन पर या कुम्भ पर या धन राशि पर आवेंगे और या शुक्र मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर या धन राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आवेंगे और मङ्गल जब २ मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर या धन राशि पर या कर्क राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब तब लाभ के सम्बन्ध में विपरीत फल करेंगे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

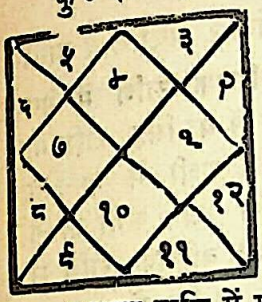
कुं० नं० ४५



पंचांग के अन्दर जिन जिन वर्षों में वृहस्पति मीन राशी पर या मेष राशि पर या कर्क राशी पर या सिह राशी पर या वृश्चिक राशि पर या कन्या राशि पर जब जब २ कभी आवेंगे और या शनी मकर राशी पर या वृषभ राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर जब २ कभी आवेंगे और या राहू मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या वृषभ राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या केतू धन राशि पर या कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर जब जब कभी आवेंगे, तब तब उन वर्षों में धन की उन्नति प्राप्त होती रहती है किन्तु उन्नति वाले वर्षों में मासिक ग्रहों का भी योग अनुकूल होगा तब २ ही प्रायः उन्नति का आनन्द प्राप्त होता रहता है और इसके विपरीत जिन२ वर्षों में वृहस्पति मकर राशिमें या मिथुन राशिमें या कुम्भ राशि में जब २ आयेंगे और राहू जिन २ वर्षों में सिंह राशि पर या कर्क राशि पर या धन राशि पर या मेष राशी पर या मकर कुम्भ राशी पर जब २ आवेंगे और या केतू जिन २ वर्षों में मिथुन राशि पर या कर्क राशि पर या सिंह राशि पर या मेष राशि पर जब २ आवेंगे, तब २ उन वर्षों में लाभ के विपरीत अर्थात् हानि की तरह यह ग्रह अपना फल दिया करते हैं और यह सब ग्रहों में जन्म के समय में, ऊपर लिखो राशियों के अनुसार जो २ ग्रह भी जन्म कुण्डली के अन्दर इस प्रकार बैठे होंगे, तो वह सारे जीवन भर ही प्रायः उपरोक्त लिखे अनुसार ही फल देते रहते हैं। किन्तु यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २८ अंश से अधिक होगा या दो अंश से कम होगा तो वह अपना पूरा २ फल, पूरी, २ शक्ति के अनुसार नहीं देता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

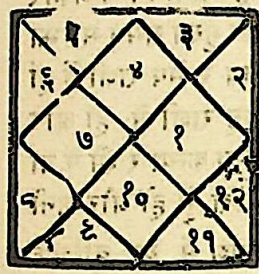
कु० नं० २५



पंचांग के अन्दर जिन २ बर्षों में व दिनों में, व मासों में यह सभी ग्रह प्रायः निम्न प्रकार से आते हैं तब राज योग का मुख्य समय समझा जाता है अर्थात् वृहस्पति जब २ मेष राशी में हों या कर्क राशी में हों या सिंह राशी में हों और मङ्गल जब २ मेष राशी में या कन्या राशी में या मकर राशी में या तुला राशि में हों और शनी जब २ मकर राशि में या धन राशी में या वृषभ राशि में या वृश्चिक राशि में या कन्या राशी में हों और राहू जब २ कन्या राशी में या मिथुन राशि में या वृषभ राशी हों और केतू जब २ कन्या राशि में या धन राशि में या वृषभ राशि में हों और सूर्य जब २ मेष राशि में या वृषभ राशि में या सिंह राशि में या कन्या राशि में या मीन राशी में या कर्क राशि में या वृश्चिक राशी में हों और शुक्र, जब २ मेष राशि में या मोन राशी में या वृषभ राशि में या तुला राशि में या मकर राशी या कर्क राशि में या वृश्चिक राशि में, या सिंह र शी में हों और बुध जब-जब मिथुन राशि पर या कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर हों और चन्द्रमा जब २ कर्क राशि पर या सिंह राशि पर या तुला राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर या मकर राशि पर या कन्या राशि पर है या सबसे प्रमुख मेष राशी पर हों अतः यह सारे ही ग्रहऊपर लिखी राशियों में से, कहीं न कहीं हर एक ग्रह अवश्य ही होना चाहिये, अतः जिन २ वर्षों में यह सभी ग्रह इस २ प्रकार उपरोक्त राशियों में ही आते रहते हैं, और कोई भी ग्रह जब इन उपरोक्त राशियों से, बाहर नहीं होता है, तब उस २ समयों में कर्क लग्न वाले मनुष्यों को, अपने अपने वित्त के अनुसार राजयोग प्राप्त होता है किन्तु यह बात ध्यान रखने की हैं कि यदि जन्म के समय में भी यही ग्रह उपरोक्त राशियों में से ही, किसी न किसी राशि के ही होकर जन्म कुण्डली में भी बैठे होंगे, तो फिर वह मनुष्य प्रायः सारे जीवन भर ही अमीरी के ढङ्ग से जीवन व्यतीत करता है किन्तु कोई ग्रह सन्य अंश या अस्त नहीं होना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

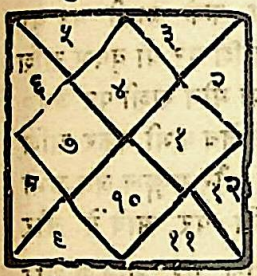
कु० नं० ४६



पचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मंगल, जब २ कभी वृश्चिक राशि में मेष राशि में, या वृषभ राशि में या सिंह राशि में, या मीन राशी में या मकर राशी में या तुला राशी में या कन्या राशि में, जब २ कभी आवेंगे और वृहस्पति, जब २ कभी वृश्चिक राशि में या मीन राशि में या कर्क राशि में जब-जब आवेंगे या शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशि पर आवेंगे तब तब संतान पक्ष में या विद्या बुद्धि के पक्ष में उन्नति व सुख प्राप्त होता है और इसके विपरीत यदि, मङ्गल, धन राशि में, या कुम्भ राशि में, या मिथुन राशि में या कर्क राशि में जब २ कभी आवेंगे और या बुध जब २ कभी वृश्चिक राशि में, या वृष राशि में आवेंगे और या चन्द्रमा जब २ कभी, वृश्चिक राशि में या वृषभ राशि में आवेंगे, और या शनी जब २ कभी, कन्या राशि में या वृश्चिक राशि में या कुम्भ राशि में या वृषभ राशि में जब २ आवेंगे और या राहू या केतू कोई भी जब २ कभी वृश्चिक राशि में व वृषभ राशि में, आवेंगे तब तब संतान पक्ष में व विद्या बुद्धी के पक्ष में, हानिकारक या चिन्ताकारक योग पैदा करते हैं, और जिस २ मनुष्य की जन्म कुण्डली में, जन्म के समय में भी यदि यह ग्रह, ऊपर वाली राशियों के अनुसार ही जन्म कुण्डली में भी बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही, संतान पक्ष में व विद्या बुद्धि के पक्ष में, ऊपर लिखे अनुसार ही अधिकांश रूप में फल देते रहते हैं। इसके अतिरिक्त, कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपनी शक्ति बल के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है। क्योंकि यह ग्रह निर्बल समझा जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

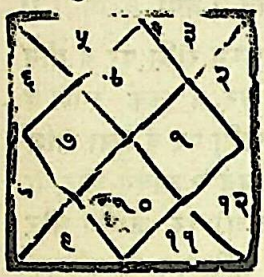
कुं० नं० ४७



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में शनी मकर राशि पर व कुम्भ राशि पर व मीन राशि पर व वृषभ राशि पर व कर्क राशि व सिंह राशि पर व कन्या राशि पर व तुला राशि पर व वृश्चिक राशि पर जब २ आवेंगे और या शुक्र जब २ कभी कुम्भ राशी पर आवेंगे और मंगल जब २ कभी कुम्भ राशि पर या वृश्चिक राशी पर आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी तुला राशी या कुम्भ राशी पर आवे गे तब २ आयू व उदर व पुरातत्व संबंधी एवं जीवन निर्वाह सम्बन्धी मामलों पर उन्नति और लाभ का योग प्राप्त होता रहता है। किन्तु यदि इसके विपरीत शनी जब २ कभी मेष राशी पर या मिथुन राशि पर आवेंगे और बुध जब २ कभी कुम्भ राशी पर आवें गे अथवा राहू या केतु कोई भी जब २ कुम्भ राशी पर आयेगा तब २ जीवन की दिनचर्या पुरातत्व एवं उदर व आयू स्थान की स्थिरता, इन चारों प्रकरणों के सम्बन्ध में चिन्ताकारक योग पैदा करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त यदि यही ग्रह योगों में से कोई भी ग्रह जन्म के समय में यदि जन्म कुण्डली में भी उपरोक्त राशियों के अनुसार ही जो २ ग्रह बैठे होंगे, तो वह ग्रह ऊपर लिखे हुए फलादेश के अनुसार ही प्रायः सारे जीवन भर ही फल देते रहते है, किन्तु यदि जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या २ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा फल जीवन में प्रदान नहीं करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

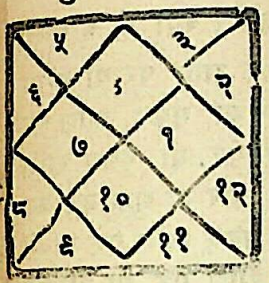
कुं० नं० ४८



पंचांग के अन्दर जिन वर्षों में व मासों में शनो मकर राशी पर या कर्क राशी पर या वृश्चिक राशि या तुला राशि पर या वृषभ राशि पर या कन्या राशि पर या मीन राशी पर जब २ कभी आवेंगे और या शुक्र जब कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आवेंगे और मङ्गल जब कभी मकर राशि या तुला राशि पर आवेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी मकर राशि पर या कर्क राशि पर आवेंगे और सूर्य जब २ कभी मकर राशि पर या कर्क राशि पर आवेंगे तब तब स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में उन्नति व लाभ और सुख की प्राप्ती होती रहती है किन्तु इसके विपरीत यदि जिन २ वर्षों व मासों में शनी कुम्भ राशि पर या मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या धन राशी पर जब २ कभी आवेंगे और बुध जब कभी मकर राशि पर या कर्क राशि पर आवेंगे और वृहस्पति जब २ कभी मकर राशि पर या कर्क राशि पर या वृषभ राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आवेंगे और राहू या केतू जब २ कभी मकर राशि पर व कर्क राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान विघ्न बाधा व परेशानी व हानि आदि कुछ न कुछ गड़बड़ी करते रहते हैं। इसके अतिरिक्ति यदि जन्म के समय में जो २ कोई ग्रह ऊपर लिखी राशियों के अनुसार ही जन्म कुण्डली में भी बैठा होगा तो वह ग्रह ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही सारे जीवन भर प्रायः फल देता रहता है और जो २ कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण प्रायः हमेशा ही पूरा २ फल नहीं दे सकेगा। नोट—यदि शनी जब २ कभी मेष राषि पर आवेंगे या जन्म कुण्डली में मेष राशि पर बैठे होंगे तो वह स्त्री व दैनिक रोजगार के सम्बन्ध में अधूरा लाभ देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ४८

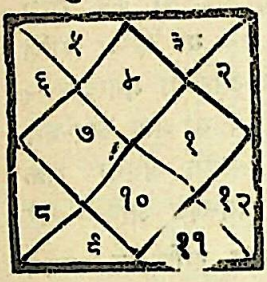


पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में, बृहस्पति मीन राशि पर या कर्क राशि पर या वृश्चिक राशि पर या कन्या राशि पर जब-जब कभी आवेंगे और या मंगल जबर कभी मीन राशि पर आवेंगे या शुक्र जब-जब कभी मीन राशि पर आवेंगे अथवा शुक्र कन्या राशि पर भी जब-जब आवेंगे–और चन्द्रमा जब-जब कभी मीन राशि पर आवेंगे और सूर्य जब-जब कभी मीन राशि पर आवेंगे तब-तब भाग्य और भक्ति तथा देवी शक्ति के गुणों की उन्नति व लाभ प्रदान करते हैं। किन्तु इसके विपरीत यदि बुध जब-जब कभी मीन राशि पर या कन्या राशि पर आवेंगे और या गुरू जब-जब कभी कुम्भ राशि पर या मिथुन राशि पर या मकर राशि पर जब-जब कभी आवेंगे या राहू या केतू जब २ मीन राशी पर आवेंगे तब-तब भाग्य, भक्ति, धर्म व ईश्वरीय शक्ति के सम्बन्धों में अनेक प्रकार की विघ्न-बाधा व विपरीत योगों की प्राप्ति होती रहती है, इसके अतिरिक्त यदि इसी प्रकार के ग्रह योग जन्म के समय जन्म कुण्डली में भी ऊपर लिखे अनुसार इन्हीं २ राशियों में जो-जो ग्रह बैठा होगा, तो वह ग्रह हमेशा ही प्रायः सारे जीवन भर उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल देता रहता है, और जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २८ अंश से अधिक होगा या जो कोई ग्रह दो अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा फल नहीं कर सकता है।

नोट—इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य और धर्म के सम्बन्ध में कुछ न कुछ परेशानी किसी अंशों में बनी रहेगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

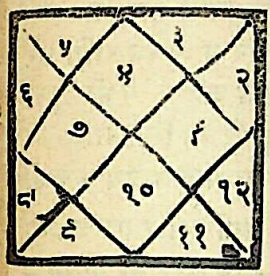
कुं० नं० ५०



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में चन्द्रमा कर्क राशि पर या कन्या राशि पर तुला राशि पर या मकर राशि पर या मीन और मेष राशी पर या वृषभ राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या शुक्र जब-जब कभी कर्क राशि पर या मकर राशि पर आवेंगे कर्क राशि पर या मीन राशि पर या वृश्चिक राशि पर आवेंगे तब-तब देह को आराम और सुख शान्ति, सुन्दरता वा रात्मबल एवं ख्याति प्रदान करते हैं। किन्तु इसके विपरीत जब २ कभी चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर या धन या कुम्भ या मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आवेंगे और या शनी जब २ कभी कर्क राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर या वृषभ राशि पर जब २ आवेंगे और या बुध जब कभी कर्क राशि पर आवेंगे और या मङ्गल जब २ कभी कर्क राशि पर या मकर राशि पर या मेष राशि पर या धन राशि पर जब २ आवेंगे और या राहू व केतू कोई भी जब २ कर्क राशि पर व मकर राशि पर आवेंगे तब २ देह पक्ष को सुन्दरता व शाँति को व आत्मबल को हानि पहुँचाते हैं। इसके अलावा यदि जन्म के समय में इन्हीं ग्रहों में से कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर ऊपर लिखी राशियों के अनुसार कोई बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे अनुसार फल प्रदान करता रहेगा, किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा २ फल नहीं दे सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

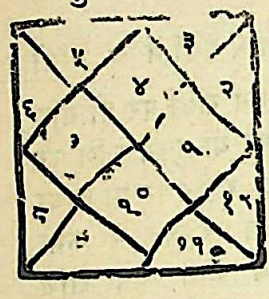
कु० नं० ५१



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में वृहस्पति, धन राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ कभी आवेंगे या केतू जब-जब कभी धन राशि पर आवेंगे और या मङ्गल जब-जब कभी धन राशि पर या कन्या राशि पर या बृषभ राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या सूर्य जब २ कभी धन राशि पर आवेंगे और या शनी जब २ कभी धन राशि पर या मीन राशि पर, तुला राशि पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब शत्रु व रोग तथा झगड़े-झंझटों के सम्बन्धों में विजय प्रदान करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशि पर या धन राशि पर आवेंगे और या राहू जब कभी धन राशि पर आवेंगे और या बुध जब २ कभी मिथुन राशि पर या धन राशि पर आवेंगे और या वृहस्पति जब २ कभी मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मिथुन राशी पर जब २ आवेंगे तब २ शत्रु-रोग या झगड़े-झंझटों के सम्बन्ध में परेशानियां पैदा करते हैं। इसके अतिरिक्त यदि जन्म के समय में इन ऊपर वाले ग्रहों में से कोई भी ग्रह इन ऊपर वाली राशियों में जो २ कोई जन्म कुण्डली के अन्दर बठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही अधिकाँश रूप में फल देता रहता है, किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा २ फल, नहीं दे सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

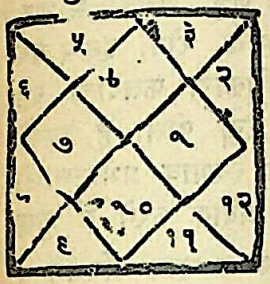
कुं० नं० ५२



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में, शुक्र जब २ कभी तुला राशि पर या मकर राशि पर या मेष राशि पर या कर्क राशी पर या मोन राशि पर या बृषभ राशि पर जब २ आवेंगे और या शनी जब २ कभी तुला राशि पर या मकर राशि पर या सिंह राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या मङ्गल जब २ कभी तुला या मीन राशि पर आवेंगे और या चन्द्रमा जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर आवेंगे और या बृहस्पति जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आवेंगे तब २ माता, भूमि मकान व सुख सम्बन्धी मामलों की उन्नति व लाभ का योग पैदा करते हैं, किन्तु यदि इसके विपरीत शुक्र जब २ कभी मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर या कन्या और धन राशी पर जब २ आवेंगे और सूर्य जब २ तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आवेंगे और राहू या केतू जब २ कभी तुला राशि पर व मेष राशि पर आवेंगे तब २ माता भूमि सुख सम्बन्धों में कमी या क्लेश का योग पैदा करते हैं। इसके अलावा यदि जन्म के समय में यह सभी ऊपर वाले ग्रहों में कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर यदि किसी प्रकार की उपरोक्त राशियों में से जो २ बैठा होगा तो वह ग्रह ऊपर वाले फलादेश के अनुसार ही अधिकांश सारे जीवन भर ही प्रायः फलदेता रहेगा और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २९ अंश से अधिक या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने से अपना फल पूरी शक्ति के अनुसार नहीं दे सकता है।

CC-0. Kangri Gurukul Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

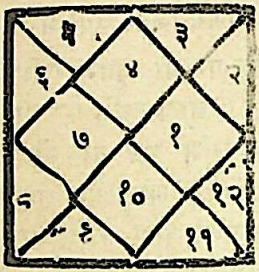
कुं० नं० ५३



पंचाँग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में व मासों में मंगल, मेष राशि पर या वृषभ राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर या सिंह राशि पर या मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या शुक्र जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे या बृहस्पति जब २ कभी मेष राशि पर या सिंह राशि पर या तुला राशि पर या धन राशि पर जब २ आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मेष राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे तब २ पिता स्थान व राज समाज कारबार व मान प्रतिष्ठा आदि की उन्नति व लाभ का योग पैदा करते हैं। किन्तु इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशि पर या धन राशि या कुम्भ राशि पर या कर्क राशि पर जब २ आवेंगे या बुध जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे या शनी जब २ मेष राशि पर या तुला राशि पर या कुम्भ राशि पर या कर्क राशि पर जब २ आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे तब २ पिता स्थान में व कारबार तथा मान-प्रतिष्ठा राज-समाज के स्थान में कमी व हानि व क्लेश का योग पैदा करते हैं, और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह इन ऊपर वाली राशियों में से किसी भी राशि पर यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह इसी प्रकार का फलादेश प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में देते रहते हैं और जो २ कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो २ कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ५५



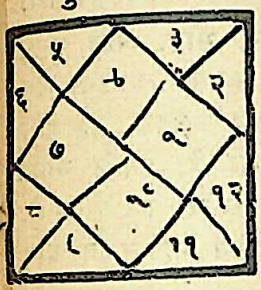
(गु०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य, धर्म, यश, शत्रु, झगड़े, झंझट, दैवी सफलता, ईश्वर भक्ति, रोग, इन २ सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह वृहस्पति हैं। इनका रङ्ग पीला है, इनकी मणि पुखराज है, इनका स्वभाव प्रभावशाली दयालु है, यह उन्नति प्रदान करने में कुछ कुदरती शक्ति का प्रयोग व कुछ परिश्रम व कुछ भेद युक्तियों का प्रयोग, इन तीनों शक्तियों के द्वारा कार्य करके भाग्योन्नति करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां ये हैं–१२–१–२–४–५–६–७–८–९ और नेष्ठ राशियां १०–११–३ यह हैं।

(मं०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को राज्य, व्यापार, मान प्रतिष्ठा, पिता, सन्तान, विद्या, बुद्धि उन्नति मार्ग के कर्म, इन २ सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मङ्गल हैं, इनका रङ्ग लाल है, इनकी मणि मूंगा है, इनका स्वभाव स्वाभिमानी गरम है, यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धिबल और कर्मबल से कार्य करते हैं, इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह–१–२–५–६–१०–१२–८ और नेष्ठ राशियां ३–४–११–९ यह हैं।

(शु०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को धन लाभ, आवश्यक पदार्थों का लाभ, माता भूमि सुख की प्राप्ति, इन, २ सब विषयों के प्रधान अधिकारी ग्रह शुक्र हैं, इनका रङ्ग सफेद है, इनकी मणि हीरा है, इनका स्वभाव शान्तियुक्त गम्भीर चतुर है, यह लाभोन्नति प्रदान करने में गहरी शांति और क्षमा के योग से कार्य करते है। इनका कुण्डली में बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं—२–४–७–८–१०–१२–१ और नेष्ठ राशियां यह हैं–३-६-९-११ और इनकी सामान्य राशि ५ हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ५५



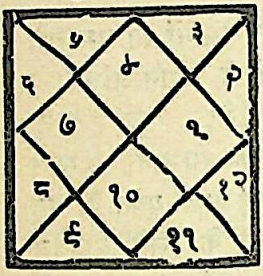
(बु०) इस कक लग्न वाले व्यक्तियों को खर्च, भाई-बहन, दूसरे स्थानों का सम्बन्ध, पुरुषार्थ इन २ सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं। इनका रङ्ग हरा है, एनकी मणि पन्ना है, इनका स्वभाव, हिम्मत और कमजोर को लिये हुए बाल युक्त है, यह खर्च शक्ति में उन्नति करने के लिये बाहुबल की शक्ती तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में विवेक बल से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली में बैठने को श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं—६-२-३ और नेष्ठ राशियाँ ९-११-१२ हैं और शेष सभी राशियों में यदि कहीं बैठेंगे तो खर्च की अधिकता के कारणों से जहाँ जिस घर में बैठेंगे उस घर को हानि पहुँचाते हैं।

(चं०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को देह, आत्मबल, स्वरूप, मनोबल, ख्याति, शांति इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं। इनका रङ्ग उज्ज्वल चमकीला है. इनकी मणि मोती है, इनका स्वभाव शांत, तत्वग्राही है, यह उन्नति के मार्ग में आत्मबल व मनोबल की शक्ति से कार्य करते हैं, इनकी कुण्डली में बैठने की उत्तम राशियां हैं—४-१-१२-२-७-६-५-१० और नेष्ठ राशियां यह ३-८-९-११ हैं।

(सू०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को धन संग्रह की शक्ति, कौटम्बिक शक्ति, तेज प्रदान की शक्ति, इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं। इनका रङ्ग सुनहला है, इनकी मणि माणिक है। इनका स्वभाव महान तेजस्वी व उग्र है, यह उन्नति के मार्ग में, जन धन की शक्ति के अन्तर्गत प्रकाशवान शक्ति से कार्य करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं, ५-६-८-१ १२-२-४ और नेष्ठ राशियां यह हैं, ७-११-३ और सामान्य राशि ९ हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ५६



(श०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, आयु, मृत्यु, पुरातात्व, दिनचर्या, उदर का सम्बन्ध, इन२ सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी हैं, इनका रङ्ग नीला काला है, इनकी मणि नीलम है, इनका स्वभाव कठोर, कटु व दृढ़ है, यह उन्नति के मार्ग में कठिन महनत व दौड़ धूप और गूढ़ युक्तियों से काम करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–१०–१२–२–४–६–७ ८–९–और नेष्ठ राशियां यह–३–१ हैं और सामान्य राशियां ११–५–हैं।

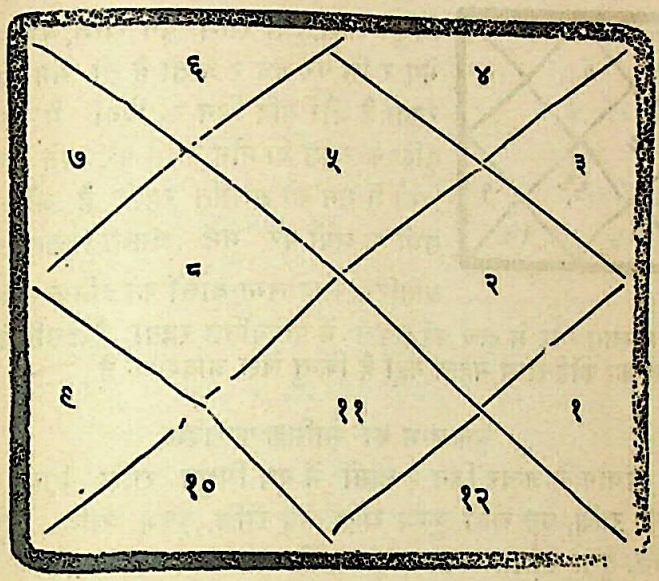
(रा०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को कपट, झूंठ, कष्ट, चिन्ता इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू हैं, इन का रङ्ग काला है, इनकी मणि गोमेध है, इनका स्वभाव छिपाव युक्त कटु है, यह उन्नति के मार्ग में पेचीदा चालों से कार्य करते हैं, इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–६–२–३ और नेष्ठ राशियां यह हैं–५–४–७–९–१०–११–१ और सामान्य १२–८ हैं। इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी दिमाग की बहुत गुप्त व बहुत गम्भीर युक्ति से सहारा प्रदान करते हैं।

(के०) इस कर्क लग्न वाले व्याक्तियों को गुप्त धैर्य, गुप्त वीरत्व, चिन्ता इन विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं, इनका रङ्ग काला है, इनकी मणि लहसनियां है, इनका स्वभाव कठिन धैर्य धारण करने वाला है, यह उन्नति के मार्ग में महान गुप्त शक्ति बाहुबल के द्वारा कार्य करते हैं, इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह है–६–९–२ और नेष्ठ राशियां ४–५–७–३–१–११–२ हैं और सामान्य राशियां १२–८ हैं। इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी गुप्त शक्ति, गुप्त दौड़-धूप से सहारा प्रदान करते रहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिंह लग्न फलादेश प्रारम्भ

*

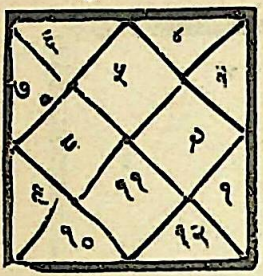


*

इस सिंह लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः बु० शु० मं० सू० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० ५७ से लेकर कुण्डली नं० ८५ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० ५७



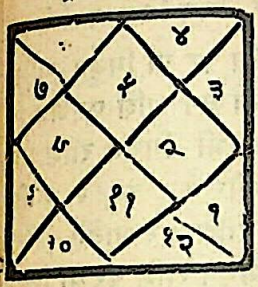
पंचाँग के अन्दर जिन २ दिनों में चन्द्रमा मिथुन राशि,तुला राशि, धन राशि, कर्क राशि, मेष राशि पर जब २ आता है तो मन प्रसन्न रहता है और यदि जिन २ दिनों में चन्द्रमा वृश्चिक राशि या मीन राशी पर आते हैं उन २ दिनों में मन को अशांति रहती है और शेष सभी राशयों पर मन प्रसन्न रहता है इसके अतिरिक्त सिंह लग्न वालों को दैनिक लाभ का योग खास तौर से खर्चे को शकल में परिवर्तित रहता है इसलिये इस लेख का कोई खास महत्व नहीं है किन्तु लेख आवश्यक है

धन लाभ का मासिक फलादेश

पंचांग के अन्दर जिन २ मासों में बुध मिथुन राशि, सिंह राशि कन्या राशि, धन राशि, कुम्भ राशि, मेष राशि, वृषभ राशि, वृश्चिक राशि, तुला राशि पर जब २ भी आवेंगे या जिन २ मासों में शुक्र मिथुन राशि, सिंह राशि. तुला राशि वृश्चिक राशि, धन राशि, कुम्भ राशि, मेष राशि, वृषभ राशि पर जब २ भी आवेंगे और सूर्य मिथुन राशि, सिंह राशि, कन्या राशि, धन राशि, कुम्भ राशि, मेष राशि, वृषभ राशि पर जब भी आवेंगे और मङ्गल मिथुन राशि, सिंह राशि, कन्या राशी, तुला राशि वृश्चिक राशि, धन राशि, मकर राशि कुम्भ राशि, मेष राशि, वृषभ राशि, पर जब २ भी आवेंगे, तब तब इन मासों में धन लाभ योग श्रेष्ठ रहता है । किन्तु इसके विपरीत यदि जिन २ मासों में बुध कर्क राशि. मकर राशि, मीन राशि पर जब २ भी आवेंगे और शुक्र जब २ भी कर्क राशि कन्या राशि मकर राशि मीन राशी पर जब २ भी आवेंगे और मंगल या सूर्य जब २ कर्क राशि पर या मकर या मीन राशी पर आयेगे तब तब इन मासों और दिनों में धन लाभ को कमी या हानि का योग पैदा करते हैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

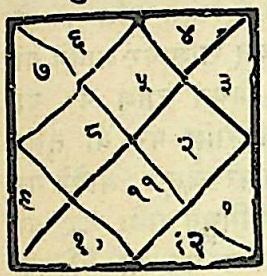
कुं० नं० ५८



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में केतू तुला, धन, मकर, इनमें से किसी राशि पर हो या राहू तुला मकर मिथुन राशि पर आवेंगे या शनी जिन जिन वर्षों में मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आवेंगे या वृहस्पति जिन २ वर्षों में मिथुन राशि पर या सिंह राशि या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर जब २ आवेंगे, तब-तब इन वर्षों में उन्नति और लाभ के साधन प्राप्त होते हैं। किन्तु यह बात विचार में अवश्य रखें कि इन लाभ के वर्षों में उन मासिक लाभ के ग्रहों का योग भी जब २ अनुकूल होगा, तब २ ही इन वर्षो के लाभ के सुन्दर ढङ्ग प्राप्त होते रहेंगे। किन्तु विपरीत जिन २ वर्षों में केतू मिथुन राशी पर या सिंह राशी या कन्या राशि पर या मेष राशी पर या वृषभ राशि पर जब २ आवेंगे या राहू धन राशि पर या मीन राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आवेंगे या शनी जिन २ वर्षों में मेष राशि पर या कर्क राशि पर या मीन राशी पर जब २ आवेंगे या जिन २ वर्षों में वृहस्पति मकर राशि पर या कर्क राशि पर या कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर जब आवेंगे, तब २ इन वर्षों में कुछ अशांति व कुछ हानि कारक योग पैदा होता रहता है। इसी प्रकार यह ध्यान देने योग्य बात है कि जन्म के समय जिन मनुष्यों की जन्म कुण्डली में यदि ऊपर लिखे अनुसार जो २ कोई ग्रह इसी प्रकार की राशियों में बैठा होगा, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे अनुसार ही फल देता रहेगा, इसके अतिरिक्त जो २ कोई ग्रह जिस किसी समय में या जन्म कुण्डली में सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २९ अंश से जो ६ और १ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकता है,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

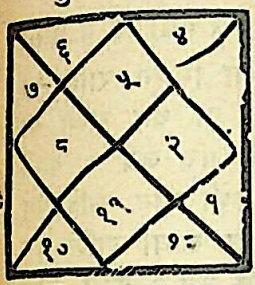
कुं० नं० ५९



पंचांग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में व मासों में शनि वृषभ राशि पर या मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या धन राशि पर जब २ आवेंगे और राहू जब २ कभी मिथुन राशि या मकर राशि पर आवेंगे और केतू जब २ कभी धन राशि पर या मकर राशि पर आवेंगे और वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर जब-जब आवेंगे और सूर्य जब २ कभी सिंह राशि या मेष राशि या मिथुन राशि पर या वृषभ राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ कभी आवेंगे और मङ्गल जब २ कभी मेष राशि पर या वृषभ राशि पर या मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे और बुध जब कभी मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर या वृषभ राशि पर या तुला राशि पर जब २ आवेंगे और शुक्र जब २ कभी वृषभ राशि पर या मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या वृश्चिक राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर या तुला राशि पर जब २ आवेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या कुम्भ राशि पर या कर्क राशि पर जब जब कभी आवेंगे अर्थात् यह उपरोक्त सभी ग्रह एक ही समय में इन २ ऊपर वाली राशियों में हो कहीं न कहीं अवश्य होने चाहिये, तब तब ही मनुष्य का राजयोग उस समयों में समझना चाहिये इसके अतिरिक्त जन्म के समय में जिन मनुष्यों को जन्म कुण्डली के अन्दर यदि उपरोक्त ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार ही जो २ कोई बैठे होंगे तो वह श्रेष्ठ फलदाता प्रायः सारे जीवन के लिये समझे जावेंगे, किन्तु जो ग्रह सूर्य से अस्त होंगे या शून्य अंश होंगे तो वह निर्बल समझे जायँगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

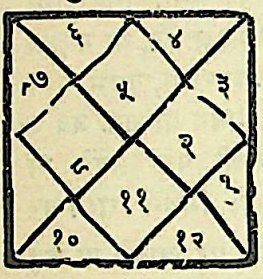
कुं० नं० ६०



पचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति धन राशी, मेष राशी, सिंह राशी मिथुन राशी पर जब २ कभी आवेंगे, या मङ्गल जब २ कभी धन राशि, कन्या राशी, वृषभ राशी मिथुन राशी पर जब २ आवेंगे या शुक्र जब २ कभी धन राशी, मिथुन राशी पर आवेंगे या सूर्य जब २ कभी धन राशी, मिथुन राशी पर आवेंगे वा बुध जब २ कभी धन राशी मिथुन राशी पर आवेंगे या केतू जब २ कभी धन राशी पर आवेंगे, तब २ विद्या, बुद्धि व संतान पक्ष में उन्नति व मुख के कारण उत्पन्न होते हैं और इसके विपरीत यदि वृहस्पति मकर राशी, मीन राशी, कर्क राशी, कन्या राशी पर जब २ कभी आवेंगे या चन्द्रमा जब जब कभी धन राशी, मिथुन राशी पर आवेंगे या शनी जब कभी धन राशी, मीन राशी, तुला राशी, मिथुन राशी पर जब २ कभी आवेंगे या राहू जब २ कभी धन राशी पर आवेंगे, तब २ विद्या बुद्धि व संतान पक्ष के विषय में अशाँती व कुछ कमजोरी का योग पैदा करते हैं और वृहस्पति उपरोक्त राशियों से बची हुई राशियों में, जब २ आवेंगे तब तब सामान्य फल प्राप्त करेंगे और यदि जन्म के समय में जो २ कोई ग्रह इस प्रकार की उपरोक्त राशियों में से, जिस किसी भी राशी का जो कोई ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह विद्या और संतान पक्ष के विषय में उपरोक्त फल के अनुसार ही प्रायः सारे जीवन भर ही फल प्रदान करता रहेगा, किन्तु जिसकी कुण्डली में या पंचांग गति के अन्दर जो कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना फल पूरी पूरी शक्ति के अनुसार नहीं दे सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

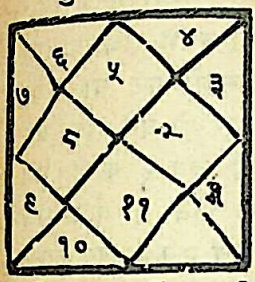
कुं० नं० ६९.



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में, वृहस्पति, मीन राशि या मिथुन राशि या सिंह राशि, वृश्चिक नाशि या धन राशि या मेष राशि या कन्या राशि पर जब २ कभी आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी मीन राशि या सिंह राशि या धन राशि या कन्या राशि पर जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कभी मीन राशि पर आवेंगे या सूर्य जब कभी कन्या राशी पर आवेंगे तब-तब आयु, व उदर और पुरातत्व सम्बन्धी विषयों में लाभकारी व उन्नतिदायक फल प्राप्त करते हैं किन्तु इसके बिपरीत यदि वृहस्पति, मकर राशि पर जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे या बुध जब २ कभी मीन राशि पर या कन्या राशि पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मीन और कन्या राशि पर आवेंगे तब २ आयू व उदर और पुरातत्व सम्बन्धों में परेशानी का योग पैदा करते हैं और यदि वृहस्पति जब २ कभी, वृषभ राशि या कर्क राशि या तुला राशि या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे तब २ इस प्रकरण में सामान्य फल देवेंगे, और इसी प्रकार के ग्रह यदि जन्म के समय ऊपर लिखे अनुसार जिस प्रकार की राशियों में जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त प्रकार का फल सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को देते रहेंगे, किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो चाहे वह जन्म कुण्डली में हो, चाहे पंचाग गोचर में हो किन्तु निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा पूरा फल नहीं दे सकता है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ६२



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी कुम्भ राशी पर या वृषभ राशि पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कभी कुम्भ राशो पर या सिंह राशी पर आयेंगें या मंगल जब-जब कभी कुम्भ राशि पर या वृश्चिक राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे, या बुध जब २ कभी कुम्भ राशि पर या सिंह राशि पर आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशि पर या तुला राशि पर जब २ आवेंगे तब १ स्त्री व दैनिक रोजगार के सम्बन्ध में लाभ की सूरतें पैदा करेंगे किन्तु इसके विपरीत यदि शनी मकर राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर या कर्क राशि पर या किसी अंशों में कन्या राशी पर जब२ आवेंगे या वृहस्पति जब २ कुम्भ राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी कुम्भ राशि पर व सिंह राशि पर आयेंगे तब-तब स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान पर अशांति व कुछ हानियों के योग पैदा करते हैं। इसी प्रकार यदि जन्म के समय में इन सभी उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी ग्रह इन उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही इसी ऊपर लिखे अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे और यदि जो कोई भी ग्रह जन्म कुन्डली में या पंचांग की गोचर प्रणाली में सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति का पूरा २ फल नहीं देता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

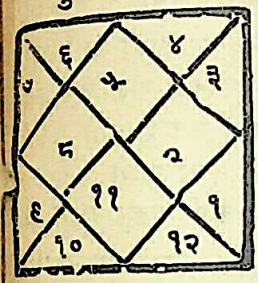
कुं० नं० ६३



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मेष राशी पर आवेंगे या शुक्र जब २ कभी मेष राशी पर आवेंगे या बुध जब २ कभी मेष राशी पर आवेंगे या किसी अंशों में मङ्गल जब २ कभी वृश्चिक राशी पर या मकर राशी पर आवेंगे तब २ भाग्य और धर्म व दैवी सफलताओं की शक्ति अनुकूल प्राप्त होती है और इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी मीन राशी पर या कर्क राशी पर जब जब आवेंगे या शनी जब २ कभी मेष राशी पर या तुला राशी पर या कर्क राशी पर जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशी पर या तुला राशी पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मेष राशी पर या तुला राशी पर आवेंग तब २ धर्म भाग्य और दैवी सफलता अर्थात् भक्ति भावना इन सब विषयों में कमी व कुछ अशांती पैदा करते हैं और इन्हीं ऊपर वाले सब ग्रहों में से कोई भी ग्रह यदि जन्म के समय में जन्म कुण्डली के अन्दर इसी २ प्रकार की राशियों में जो २ कोई भी बैठे होंगे, वह सभी ग्रह प्राय: सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे किन्तु यदि जन्म कुण्डली में या पंचांग गोचर प्रणाली में जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या जो कोई ग्रह १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना पूरा २ फल पूरी शक्ति के अनुसार नहीं दे सकेगा क्योंकि वह निर्बल होते हैं और वृहस्पति का फल इस उपरोक्त विषयों में सामान्य रहेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

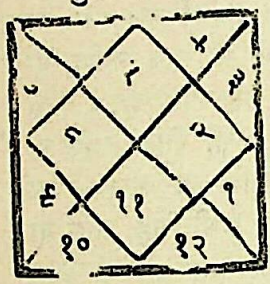
कुं० न० ६४



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में सूर्य, सिंह राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या कुम्भ राशि या मेष राशि या वृषभ राशि या मिथुन राशि पर जब २ कभी आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी सिंह राशि या वृषभ राशि या मकर राशि या कुम्भ राशि पर आवेंगे या शुक्र जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर आवेंगे या बुध जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे तब २ देह और आत्मबल व सुन्दरता के सम्बन्ध में, उन्नति और लाभ का योग पैदा करते हैं। और यदि इनके विपरीत सूर्य जब २ कभी कर्क राशि या तुलाराशि या मीनराशी या कन्या राशीया मकर राशिमें आवेंगे या शनी जब २ कभी सिंह राशि या मिथुन राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे, राहू या केतू जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर दोनों में से आवेंगे तब तब देह और आत्मबल व सुन्दरता के विषय में कमी व कमजोरी व अशांती का योग पैदा करते हैं। और इन्हीं ऊपर वाले ग्रहों में से यदि जन्म के समय में जन्म कुण्डली के अन्दर इसी २ प्रकार की राशियों में से कोई ग्रह आकर बैठेगा तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ऊपर लिखे फल के अनुसार ही फल देता रहता है। किन्तु जब कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली में या पंचांग की गोचर प्रणाली के अन्दर यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकता है वृहस्पति का फल भाव में सामान्य होने के कारण नहीं लिखा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

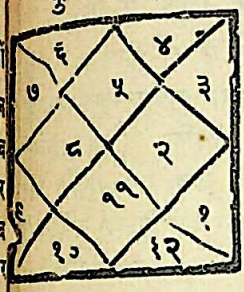
कुं० नं० ६५



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में, शनी, मकर राशि या वृषभ राशी या मिथुन राशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी पर जब २ जब कभी आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी मकर राशि या मिथुन राशी या तुला राशी पर जब २ जब आवेंगे या सूर्य जबर कभी मकर राशी पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मकरराशि या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे तब २ शत्रु पक्ष झगड़े झंझट रोगादिक पक्ष में विजय और लाभ के योग पैदा करते है। और यदि शनी जब २ कभी कुम्भ राशि या सिंह राशी या धनु राशि या कन्या राशी पर जब २ आयेंगे तब २ शत्रु पक्ष में रोगादिक झगड़े झंझटों के सम्बन्ध में कुछ दिक्कतों के साथ कामयाबी की सूरत पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि शनी जब कभी मीन राशी पर मेष राशी या कर्क राशी पर जब २ आवेंगे या वृहस्पति जब जब कर्क मकर राशी या कर्क राशी या वृषभ राशी या कन्या राशी पर जब-जब आवेंगे या बुध जब २ कभी मकर राशी या कर्क राशी पर आवेंगे या चन्दमा जब कभी मकर राशी पर आवेंगे तब-तब शत्रु, झगड़े झंझट रोगादि के विषय में, परेशानी व अशाँती के कारण पैदा होते हैं। और इसी प्रकार के ग्रहों में से जो-जो कोई भी ग्रह, जन्म के समय यदि इन्हीं २ राशियों में से किसी भी राशि का होकर जो कोई ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठेगा तो वह सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहेगा और जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली या पचाँग की गोचर प्रणाली अन्दर यदि सूर्य से अस्त होगा या कोई ग्रह २१ अंश से अधिक हो या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ६६

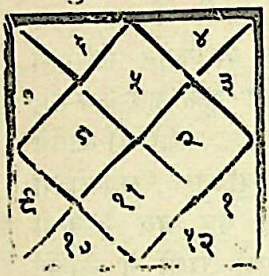


पंचांग के अन्दर जिन २ मासों में मंगल वृश्चिक राशी में या मेष राशी में या वृषभ राशी में या सिंह राशि में या मिथुन राशि में जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कर्भा, वृश्चिक राशी में या वृषभ राशी में आयेंगे या सूर्य जब २ कभी वृश्चिक राशी में या वृषभ राशी में आयेंगे या बुध जब २ कभी वृश्चिक राशि में या वृषभ राशी में आयेंगे तब २ मकान भूमि व माता सुख शाँती आदि के विषय में लाभप्रद व उन्नतिदायक सुखद सिद्ध होते हैं। किन्तु इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ मीन राशी पर या कर्क राशी पर जब २ कभी आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभो वृश्चिक राशी पर या वृपभ राशी पर आयेंगे या शनी जब २ कभी वृश्चिक राशि पर या कुम्भ राशी पर या कन्या राशो पर या वृषभ राशी पर आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभी वृश्चिक राशो पर या कर्क राशी पर या मीन राशी पर जब २ आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभो वृश्चिक रा।श पर या वृषभ राशी पर आयेंगे, तब २ माता व मातृ स्थान व सुख शाँती के सम्बन्धों में अशाँती व कमी का योग पैदा करते हैं और यदि मंगल जब २ कभो कन्या राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर जब जब आयेंगे तब२ माता व सुख शांती और मकानादि के सम्बन्धमें कुछ सामान्य लाभदायक होते हैं। और इन सभी राशियों में से किसी भी राशी का कोई ग्रह यदि जन्म के समय में जन्म कुण्डली के अन्दर ऊपर लिखे अनुसार जो कोई ग्रह बैठा होगा, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रुप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल करेगा। और जो कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निबंल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 सिंह लग्न वालों को, मान, प्रतिष्ठा, पिता कारबार राज
समाज का फल

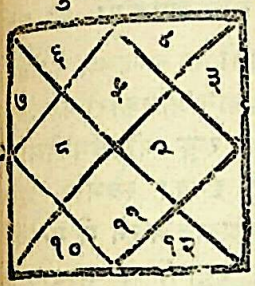
कुं० नं० ६७



पंचांग के अन्दर [जिन २ वर्षों में
मासों में शुक्र वृषभ राशि में या मिथुन राशि
में या सिंह राशि में या तुला राशि में या
वृश्चिक राशि में या धन राशि में या कुम्भ
राशि में या मेष राशि में जब २ आवेंगे या
मङ्गल जब २ कभी वृषभ राशि में या वृश्चिक
राशि में या तुला राशि में या कुम्भ राशि में
जब २ आवेंगे या बुध जब २ कभी वृषभ राशि
में या वृश्चिक राशि में आवेंगे या सूर्य जब २ कभी वृषभ राशि में
या वृश्चिक राशि में आयेंगे या शनी जब २ कभी वृषभ राशो में या
सिंह राशि में आवेंगे तब-तब मान प्रतिष्ठा कार व्यापार-पिता राज
समाज आदि सम्बन्धों में लाभकारी व उन्नतिदायक योग पैदा करते
हैं। और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी कर्क राशि में या कन्या
राशि में या मकर राशि में या मीन राशिमें जब२ आयेंगे या वृहस्पति
जब २ वृषभ राशि में या कन्या राशि में या मकर राशि में जब २
आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशि में आयेंगे या राहू या केतु
जब २ कभी वृषभ राशि में व वृश्चिक राशि में आवेंगे तब तब उन्नति
के मार्ग में व पिता सम्बन्ध में व मान प्रतिष्ठा के विषयों में हानि
कारक व अशांतिदायक योग पैदा करते हैं और यदि इन्हीं २ उपरोक्त
राशियों वाले ग्रहों में से जो २ कोई ग्रह जन्म के समय यदि जन्म
कुण्डली में उपरोक्त लिखे हुये स्थानों में से जिस किसी भी स्थानों में
बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप से
ऊपर लिखे हुये फलादेश के अनुसार ही फल देता रहेगा किन्तु जन्म
कुण्डली में या पंचांग की गोचर प्रणाली के अन्दर जो कोई भी ग्रह
सूर्य से अस्त होगा या जो कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या
१ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण से अपनी शक्ति
के अनुसार पूरा-पूरा फल नहीं देता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ६८



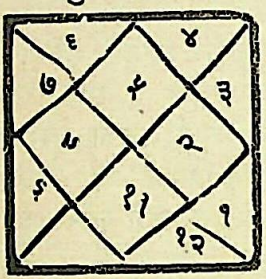
(मं०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य धर्म, ईश्वर भक्ति, यश देवी सफलता, माता, भूमि, मकानादि सुख परलोक इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी ग्रह मङ्गल हैं, इनका रङ्ग लाल है, इनकी मणी मूँगा है, इनका स्वभाव न्यायोक्त गरम और शांत प्रिय है यह उन्नति प्रदान करने में दैवी योगों से शांती पूर्वक कार्य करके सफलता प्रदान करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं–१-२-३-५-६-७-८-९-१०-११ हैं और ४-१२ नेष्ठ राशि हैं।

(शु०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को राज्य पिता, कारबार कर्म मान प्रतिष्ठा, भाई बहन, पराक्रम, लेखन शक्ति इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं,इनका रङ्ग सफेद है इनकी मणी हीरा है इनका स्वाभाव बड़ा कलाधारी कर्मठ है यह उन्नति प्रदान कर में बाहुबल की शक्ति अर्थात् अपने हाथों की शक्ति से रचनांत्मक कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं— २-३-५-७-८-११-१-९ हैं और नेष्ठ राशियां ४-६-१०-१२-यह हैं।

बु०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को धनलाभ, धनसंग्रह आवश्यक पदार्थों का लाभ, कुटुम्ब शक्ति, धनोपार्जन को बिवेक शक्ति, इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं, इनका रङ्ग हरा है, इनकी मणी पन्ना है, इनका स्वभाव कोमल विवेकी स्वार्थ युक्त है यह उन्नति प्रदान करने में विवेक की शक्ति से कार्य करते हैं उनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं १-३-५-६-८-९-११-२-७ और नेष्ठ राशियां ४-१०-१२ हैं। इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी विवेक की शक्ती से धर्म की कार्य पूर्ती कर देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ६९



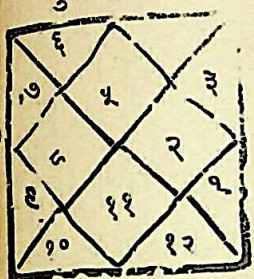
(च०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को ख
की शक्ति, बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, मनोब
इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदात
ग्रह चन्द्रमा हैं इनका रङ्ग गौरचमकीला है
इनकी मणी मोती है, इनका स्वभाव शां
चिन्तित है, यह उन्नतिप्रदान करने में मनोब
की शक्ति तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध
कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अंदर बैठ
की उत्तम राशियाँ यह हैं ४–७–३ और ने
राशियाँ ६–८–१०–१२ हैं शेष सामान्य हैं।

(सू०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को देह आत्म-बल स्वरूप तेज
इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं। इनका र
सुनहला लाल है, इनकी मणी माणिक है इनका स्वभाव महान गर
ज्ञान युक्त है। यह उन्नति प्रदान करने में देह व आत्मबल की शक्ति
कार्य करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह
५-८–९–१-२-३-११ हैं और नेष्ट राशियाँ यह–४–१२–७ हैं और सामा
राशियाँ यह–६–१० हैं।

(गु०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को बिद्या, सन्तान, वाणी, आ
मृत्यु पुरातत्व, जीवन की दिनचर्या हृदय का गूढ़ ज्ञान इत्यादि
विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह वृहस्पति हैं इनका रंग पीत
है, इनकी मणी पुखराज है, इनका स्वभाव बुजुर्गी युक्त लौकिक ज्ञान
गहराई का है यह उन्न त प्रदान करने में बुद्धी के गहरे विचारों से क
करते है। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह–५
८–१–५ हैं और नेष्ट राशि यह–१० हैं और सामान्य राशियाँ ११-
२–४–६ हैं। इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी जीवि
निर्वाह करने की साधन शक्ति को पूर्ण बुद्धी योग से करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ७०



(श०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को स्त्री, दैनिक, रोजगार, रोग, शत्रु, झगड़े, झंझट, भोग ससुराल, पाप, ननसाल, इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी हैं इन का रङ्ग काला है, इनकी मणी नीलम है, इनके स्वभाव गरम और स्वार्थयुक्त है। यह उन्नति प्रदान करने में रोजाना के कठिन परिश्रम युक्त कार्यों से काम लेते हैं, इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह है ११-२-३-५-७-८-९ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं १२-१-४ और सामान्य राशा यह १०-६ हैं।

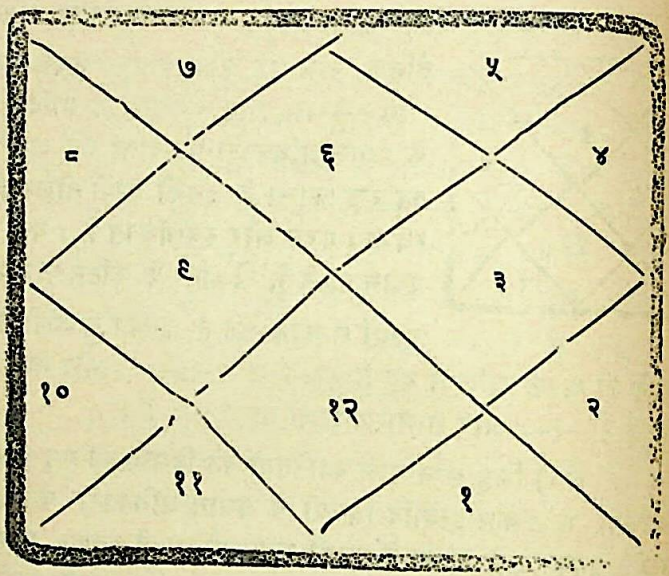
(रा०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को दिमाग की गुप्त चालाकियों व चिंता, झूंठ कष्ट इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू हैं इनका रङ्ग काला है इनकी मणी गोमेध है इनका स्वभाव गुप्त युक्ति से अधिक लाभ करने का है यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त तरकीबों से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने को श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ३-९-१० और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ५-९-२-१२-६-१ और सामान्य राशी ११-२ हैं।

(के०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को गुप्त धैर्य, गुप्त वीरत्व, चिंता कष्ट इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी ग्रह केतू हैं इनका रङ्ग काला है इनकी मणि लहसनियां है इनका स्वभाव कष्ट युक्त गुप्त धैर्य वाला है यह उन्नति प्रदान करने में कष्ट साध्य कर्म से निरंतर लगातार कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ९-७-१० और नष्ठ राशियाँ यह हैं ६ १२-५-१-४ और सामान्य राशियाँ यह हैं ११-२-३ इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी आन्तरिक धैर्य और आत्मिक वीरत्व से काम लेकर सहारा देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कन्या लग्न फलादेश प्रारम्भ

*

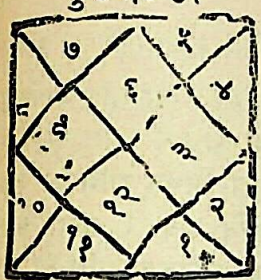


*

इस कन्या लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः गु० शु० बु० चं० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० ७१ से लेकर कुण्डली नं० ८४ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० न० ७।



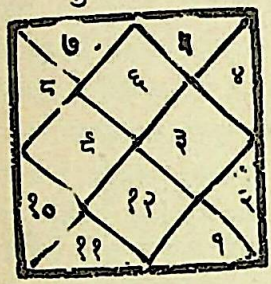
इस कन्या लग्न में जन्म लेने वालों को जिस २ दिनों में पचांग के अन्दर चन्द्रमा कर्क राशि या कन्या राशि या तुला राशि या धन राशि या मकर राशि या मीन राशि या वृषभ राशि या मिथुन राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब धन लाभ एवं अन्य आवश्यक लाभ करते हैं और मन को प्रसन्नता रहती है और इसके विपरीत यदि चन्द्रमा सिंह राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि या मेष राशि पर जब २ कभी आयेंगे तब २ धन लाभ और आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति में कुछ न कुछ कमी व मन को अशांति प्रदान करते हैं और यदि इसी २ प्रकार की राशियों में चन्द्रमा जन्म कुण्डली में भी ऊपर लिखे अनुसार कहीं बैठा होगा तो वह अधिकांश रूप से सारे जीवन भर उपरोक्त रूप के अनुसार ही फल देता है।

(धन लाभ का मासिक फलादेश)

कन्या लग्न वालों को पंचांग के अन्दर जिन २ मासों में शुक्र वृषभ राशि या मिथुन राशि या कर्क राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मकर राशि या मीन राशि पर जब २ भी आवेंगे या बुध जब २ कभी वृषभ राशि में या मिथुन राशि में या कर्क राशि में या कन्या राशि में या तुला राशि में या वृश्चिक राशि में या धन राशि में या मकर राशि में जब २ आयेंगे या सूर्य जब २ कभी कर्क राशि में या सिंह राशि में या वृश्चिक राशि में आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी मेष राशि में या वृश्चिक राशि में या कन्या राशि में जब २ आवेंगे तब तब इन मासों में लाभप्रद उत्तम समय व्यतीत होगा और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी सिंह राशि या कन्या राशि या कुम्भ राशि या मेष राशि पर जब २ आयेंगे या बुध जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि या मीन राशि या मेष राशि पर जब कभी आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी कर्क राशि या सिंह राशि या तुला राशि पर जब२ आयेंगे या सूर्य जब २ कभी तुला राशि पर आयेंगे तब-तब इन मासों में लाभ की हानि व कुछ कमी का योग पैदा करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

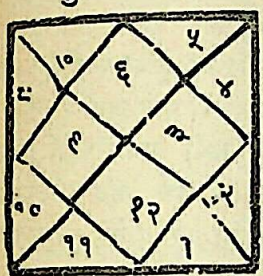
कु० नं० ७२



पचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में ब मासों में वृहस्पति, कर्क राशि या कन्या, राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मीन राशि या वृषभ राशि या मिथुन राशि पर जब जब कभी आवेंगे या शनि जब २ कभी कर्क राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मकर राशि या वृषभ राशि पर जब २ भी आवेंगे या राहू जब २ कभी कर्क राशि में या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि या मिथुन राशि में जब २ आयेंगे या केतू जब २ कभी कर्क राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि या धन राशि में जब कभी आवेंगे तब २ इन वर्षों में धन लाभ व उन्नति के साधन प्राप्त होते हैं किन्तु इस उन्नति वाले वर्षों में जब मासिक धन लाभ के ग्रह योग भी जब अनुकुल आते हैं तब २ इन उन्नति के वर्षों में अच्छा धन लाभ योग प्राप्त होता रहता है और इसके विपरीत यदि वृहस्पति जब २ कभी सिंह राशि या मकर राशि या मेष राशि में जब आवेंगे या शनि जब २ कभी सिंह राशि या मेष राशि या मीन राशि में जब २ आवगे या राहू जब २ कभी तुला राशि या धन राशि या मेष राशि या मीन राशि में जब २ आवेंगे या केतू जब २ कभी तुला राशि या मिथुन राशि या मेष राशि या मीन राशि में जब २ कभी आवें तब-तब उन वर्षो में हानिकारक प्रतिकूल, अशांतप्रद फल प्राप्त होता रहता है, और जन्म के समय यदि इसा प्रकार की राशियों में से ऊपर लिखे अनुसार जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है, किन्तु जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त हो या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण जन्म कुण्डली या वार्षिक धन लाभ के विचार में उत्तम फल नहीं दे सकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

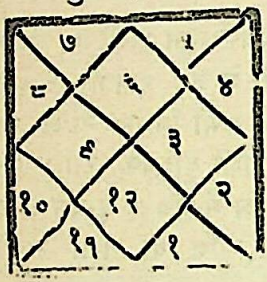
कु० नं० ७३



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व जिन २ मासों में व दिनों में बुध मिथुन राशी या वृषभ कर्क, कन्या, धन राशी में जब २ कभी आवेंगे और वृहस्पति जब-जब कभी मिथुन राशि या कर्क राशी या कन्या राशी वृश्चिक राशि या धन राशि या मीन राशि में जब २ आवेंगे और शनी जब २ कभी कर्क राशि या तुला राशी या वृषभ या मकर राशि या वृश्चिक राशि में जब २ आवेंगे और शुक्र जब २ कभी वृषभ राशि या मिथुन राशि या कर्क राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मीन राशि या मकर राशि में जब २ आवेंगे और मङ्गल जब २ कभी कन्या राशि या मकर राशि या मेष राशि या वृश्चिक राशि में जब २ आवेंगे और सूर्य जब २ कभी सिंह राशि या मेष राशि या वृश्चिक या कर्क राशि में जब २ आवेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशि या तुला राशि या धन राशी या मीन राशि या वृषभ राशि या मिथुन राशि या कन्या राशि या मकर राशि में जब आवेंगे, और राहू जब २ कभी मिथुन राशि या कर्क राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि में जब २ आवेंगे और केतू जब २ कभी धन राशि या कर्क राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि में जब-जब आवेंगे अर्थात् इन ऊपर लिखे हुए सभी ग्रहों में से हर एक ग्रह इन्हीं २ उपरोक्त राशियों में से ही किसी न किसी राशियों में ही जब २ यह सभी ग्रह, एक साथ जिन वर्षों में व मासों में आवेंगे, तब तब ही कन्या लग्न वाले प्राणियों का भाग्य विविध प्रकार से उदय होकर राजयोग प्राप्त होता रहता है। यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह निर्बल समझा जायगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

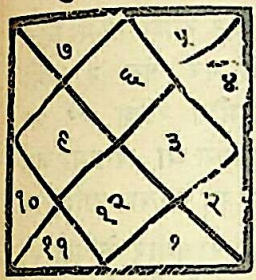
कुं० नं० ७४



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में शनी मकर राशि या कर्क राशी या कन्या राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या मिथुन राशि या वृषभ राशि पर जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आवेंगे या बुध जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आवेंगे या मंगल जब २ कभी तुला राशि या मिथुन राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आवेंगे तब २ संतान पक्ष को व विद्या स्थान को उन्नति व लाभ, सुख का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि शनी, कुम्भ राशि या मेष राशि या सिंह राशि में जब-जब कभी आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि में आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मकर राशि व कर्क राशि पर आवेंगे या वृहस्पति जब २ मकर राशि या कक राशि या कन्या राशि या बृषभ राशि पर आवेंगे तब २ विद्या व सतान पक्ष को कुछ हानिकारक या परेशानी कारक योग पैदा होता है और शेष ग्रह जो शेष स्थानों में आवेंगे वह सामान्य फल प्रदान करते हैं, इसके अतिरिक्त ऊपर लिखी स्थिति के अनुसार जो ग्रह जन्म के समय इन्हीं राशियों में जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह अपना फल ऊपर लिखे अनुसार ही प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में विद्या और सन्तान पक्ष में देता रहेगा और यदि कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली में या पंचांग गोचर प्रणाली में सूर्य से अस्त होगा या जो कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या जो कोई ग्रह १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा फल नहीं देता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

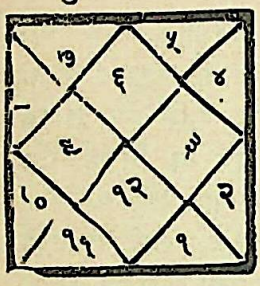
कुं० नं० ७५



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल मेष राशि पर या कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या धन राशि पर या तुला राशि पर या मिथुन राशि पर या वृषभ राशि पर या मीन राशि पर जब२ कभी आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभी मेष राशि पर या धन राशि पर या तुला राशि पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी मेष राशि या तुला राशि पर आयेंगे या बुध जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर जब२ आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आयेंगे तब-तब आयु एवं उदर पुरातत्व सम्बन्धों में लाभकारी सुखदायक योग उत्पन्न करते हैं और इसके विपरीत यदि मङ्गल सिंह राशि में या कर्क राशि में या कुम्भ राशि में जब २ कभी आयेंगे या शनी जब २ कभी मेष राशि पर या कर्क राशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ आयेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर जब २ आवेंगे तब २ आयु, उदर पुरातत्व सम्बन्धों में चिंताकारक कष्टप्रद योग उत्पन्न करते हैं, और यदि जन्म के समय इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी इन्हीं उपरोक्त राशियों मे जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फल के अनुसार ही फल देत रहेगा और जन्म कुण्डली में या पंचांग गोचर प्रणाली में यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण पूरा २ फल नहीं दे सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

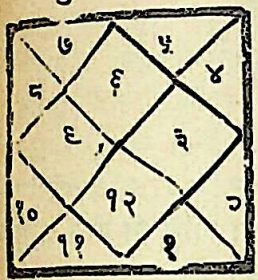
कुं० नं० ७३



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व माहों में वृहस्पति, कर्क राशि पर या कन्या राशि पर य वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या मीन राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ कभी आयेंगे या शुक्र जब कभी मीन राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे या चन्द्रमा जब जब कभी, मीन राशि पर या कन्या राशि पर आयेंगे, तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में, उन्नति व सुख लाभ का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि, वृहस्पति जब २ कभी, मेष राशि पर या सिंह राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि या तुला राशि पर जब २ कभी आयेंगे या मङ्गल जब-जब कभी मीन राशि पर या धन राशि पर या कन्या राशि पर या सिंह राशि पर जब २ कभी आयेंगे या सूर्य, जब २ कभी मीन राशि पर या कन्या राशि पर आवेंगे या बुध जब २ कभी, मीन राशि पर या कन्या राशि पर आवेंगे या शनि जब २ कभी, मीन राशि पर या मकर राशि पर कन्या राशि पर या मिथुन राशि पर जब-जब कभी आयेंगे या राहू या केतू जब-जब कभी मीन राशि पर या कन्या राशि पर आयेंगे तब-तब स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में परेशानी व कष्ट और हानि के योग पदा करते हैं और यदि यही उपरोक्त ग्रहों में से कोई ग्रह, जन्म कुण्डली के अन्दर इन ऊपर वाली राशियों में से जो २ कोई ग्रह जन्म के समय बैठा होगा तो वह प्रायः सारे जीवन भर हो अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देता रहेगा और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो चाहे जन्म कुण्डली में से हो चाहे पंचांग गोचर में हो, किन्तु वह निर्बल होने के कारण पूरा फल नहीं दे सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

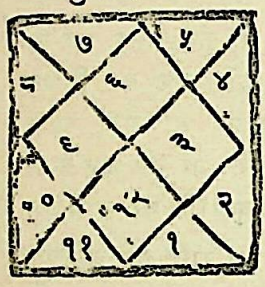
कुं० नं० ७



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शुक्र वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या वृश्चिक राशि या मकर राशि पर या मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे या बुध जब कभी वृषभ राशि पर या वृश्चिक राशि पर आयेंगेया वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशि या वृश्चिक राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशि वा वृश्चिक राशि पर आयेंगे या शनि जब २ कभी वृषभ राशि पर आयेंगे, तब-तब भाग्य भक्ति-धर्म आदि दैवी शक्ति के गुणों की वृद्धि उत्पन्न करते हैं और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे या सूर्य जब २ कभी वृषभ राशि या वृश्चिक राशि पर आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी वृषभ राशि पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या कुम्भ राशि पर जब२ आयेंगे या राहू या केतू जब २ कभी वृषभ या वृश्चिक राशि पर आयेंगे तब २ धर्म भाग्य ईश्वर भक्ति आदि के विषयों में कुछ हानिकारक व अशाँत प्रद योग पैदा होते हैं और इन्ही उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी यदि जन्म के समय इसी २ प्रकार की उपरोक्त राशियों के अनुसार जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा,तो वह ग्रह ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही प्रायः अधिकाँश रूप में सारे जीवन भर ही फल देता रहता है और जन्म कुण्डली में या पंचाँग गोचर के अन्दर यदि जब २ कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या जो कोई ग्रह १ अंश से कम होगा. तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी पूरी २ शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

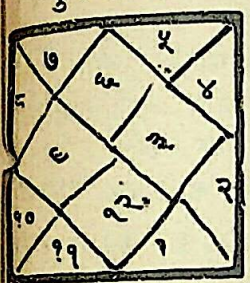
कुं० नं० ७८



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध कन्या राशि या मिथुन राशि या धन राशि या मकर राशि या वृषभ राशि या कर्क राशि या वृश्चिक राशि पर जब कभी आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभी कन्या राशि या मीन राशि या वृषभ राशि पर जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी कन्या राशि या मीन राशि पर आयेंगे तब तब देह की सुन्दरता व आत्म-बल की बृद्धि व ख्याति आदि प्राप्त करने का योग पैदा होता है और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि या मीन राशि या मेष राशि पर आयेंगे या सूर्य जब २ कभी कन्या राशि या मीन राशि पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी कन्या राशि पर आयेंगे या शनि जब २ कभी कन्या राशि या मीन राशि या कर्क राशि या धन राशि पर जब २ आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशि या मीन राशि या कुम्भ राशि या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे या राहू या केतू जब-जब कभी कन्या राशि या मीन राशि पर आयेंगे, तब-तब देह की सुन्दरता में व आत्म-बल ख्याति आदि में कमी पैदा करते हैं। किन्तु कन्या या मकर का मङ्गल, ख्याति के विषय में सहायक रहता है और इसी २ प्रकार के ग्रह योगों में से यदि जन्म के समय में उपरोक्त लिखे अनुसार जो २ कोई ग्रह ऊपर लिखी राशियों के अन्तर्गत जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो वह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहते हैं. और जो कोई ग्रह जन्म कुण्डलीं में या पंचांग गोचर प्रणाली में सूर्य से अस्त होगा या जो २ कोई ग्रह २१ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ७६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी कुम्भ राशि या मिथुन राशि या कर्क राशि या वृषभ राशि या वृश्चिक राशि धन राशि या तुला राशि पर जब २ कभी आयेंगे या मंगल जब २ कभी कुम्भ राशि या वृश्चिक राशि पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी कुम्भ राशि पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कुम्भ राशि या सिंह राशि पर आवेंगे या सूर्य जब २ कभी कुम्भ राशि पर आवेंगे तब-तब शत्रु पक्ष में विजय और रोग झगड़े-झंझट आदि पक्षों में शांती मुक्ति प्रदान करते हैं—और इसके विपरीत यदि शनि, मेष राशि या सिंह राशि पर और चन्द्रमा या बुध जब कभी कुम्भ राशि या सिंह राशि पर आवेंगे तब २ शत्रु रोगादिक झगड़े झंझटों की तरफ से कुछ चिन्ता व अशांती का योग उत्पन्न करते है किन्तु यह बात ध्यान रहे कि शत्रु स्थान व रोग झगड़े, झंझटों की मुक्ति के अनुकूल समय में भी कुछ कठिनाइयों के अनुभव होते हैं क्योंकि इस स्थान के स्वामियों का व सहयोगियों का प्राकृतिक स्वभाव ही विषाद है और जन्म के समय यदि इन्हीं ग्रहों में से जो कोई भी ग्रह इन्हीं २ उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत, जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो, वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे अनुसार फलादेश के मुताबिक फल प्रदान करता रहेगा किन्तु जन्म कुण्डली में या पंचांग की गोचर प्रणाली में जो २ कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा पूरा फल नहीं करता है। और शनि जब २ कन्या, मकर, मीन पर आयेंगे तब २ भी कुछ अच्छा बुरा फल करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

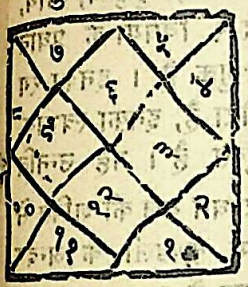
कुं० नं० ८०



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मा
में वृहस्पति धन राशि या मीन राशि, या मिथु
राशि या कर्क राशि या कन्या राशि या वृ
राशि पर जब २ आये गे या बुध जब २ क
धन राशि या मिथुन राशि पर आये गे या शु
जब २ कभी धन राशि या मिथुन राशि प
आये गे या चन्द्रमा जब २ कभी धन राशि
मिथुन राशि पर आये गे या केतू जब २ क
धन राशि पर आये गे तब २ माता. मकानादि, सुख शाँती, की सफल
के कारण पैदा करते हैं, और इसके विपरीत यदि वृहस्पति जब २ क
मकर राशि या कुम्भ राशि या मेष राशि या सिह राशी या तुला रा
पर जब २ कभी आये गे या सूर्य जब २ कभी धन राशी या मिथुनरा
पर आये गे या मगल जब २ कभी धन राशी या मिथुन राशी या क
राशी या वृषभ राशी पर जब २ आये गे या राहू जब २ कभी धनरा
पर आये गे तब २ माता भूमि मकानादि सुख शांती के सम्बन्धों में क
और अशान्ती का योग पैदा करते हैं और जन्म के समय यदि इ
उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी ग्रह उपरोक्त राशियों के अन्तगत जो
कोई भी ग्रह, जन्म कुण्डली के अन्दर बठा होगा तो वह ग्रह उपरो
फलादेश के अनुसार ही प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में फ
देता रहेगा। और जन्म कुण्डली में अथवा पचांग गोचर प्रणाली
जो २ कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २९ अ
से अधिक होगा या ५ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने
कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा और
राशी का शनी जब २ कभी आवेगा या धन राशी पर शनी
कुण्डली में बठा होगा तो माता भूमि मकानादि के सम्बन्धों में
अजीब गरीब उतार चढ़ाव के योगों की प्राप्ती होती रहेगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

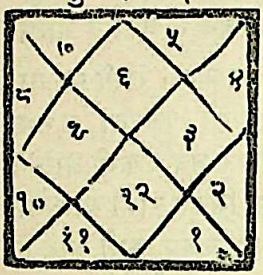
कु० नं० ८१



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में बुध मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या धन राशी पर या कर्क राशी पर या वृषभ राशी पर या तुला राशी पर जब २ कभी आयेंगे या बृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी या तुला राशी पर या धन राशी पर जब२ कभी आयेंगे या शुक्र जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर जब जब आयेंगे या राहू जब २ मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा कुछ अंशों तक बुध भी जब २ मकर राशी पर व वृश्चिक राशी पर आयेंगे तब२ मान प्रतिष्ठा, राज समाज, कारबार, पिता आदि के विषयों में उन्नति एवं लाभ सुख का योग प्राप्त करते हैं और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी सिंहराशी पर या कुम्भ राशी पर या मीनराशी पर या मेष राशी पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशी पर या मीन राशी पर या धन राशी पर जब २ आयेंगे या शनी जब २ कभी मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर जब आयेंगे अथवा केतू जब कभी मिथुन राशी पर आयेंगे तब २ पिता, राज समाज प्रतिष्ठा कारबार आदि के बिषयों में कुछ कमजोरी या कष्ट एवं अशांती का योग उत्पन्न करते हैं और जन्म के समय यदि इसी प्रकार की राशियों में से ऊपर लिखे अनुसार जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है। किन्तु जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० ८२



(शु०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य, धर्म, यश, धनकोष, कुटुम्ब, स्वार्थ, परमार्थ, चातुर्य, इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं । इनका रंग गौर है । इनकी मणि हीरा है, इनका स्वभाव, धर्म स्वार्थ व कला से युक्त है । यह उन्नति प्रदान करने में दैवी और धन बल की शक्ति से कार्य करते हैं इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–२–३–४–७–८–९–१०–१२ और नेष्ठ राशियाँ ५–६–११–। यह हैं इनकी विशेषता यह है कि, बुरे से बुरे समय में भी भाग्य की शक्तियों से धन की सहायता कुछ न कुछ करते रहते हैं ।

(बु०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को राज्य, समाज, पिता, देह स्वरूप, आत्मबल, कर्म, मान, प्रतिष्ठा, व्यौपार, वैभव इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं इनका रंग हरा है इनकी मणी पन्ना है इनका स्वभाव कोमल और स्वभिमानी है उन्नति प्रदान करने में महान विवेक की कर्म शक्ति से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ३–४–६–७–९–१०–८–। और नेष्ठ राशियाँ यह ५—११–१२–१ हैं ।

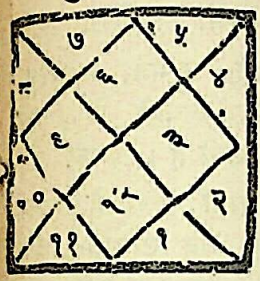
(चं०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को धन लाभ एवं अन्न वस्तुओं का लाभ करने के अधिकारी एवं मन शक्ति के स्वामी हैं इनका रंग उज्ज्वल गौर है इनकी मणि मोती है इनका स्वभाव शीतल और स्वार्थयुक्त है यह उन्नति प्रदान करने में मनोबल की प्रधान शक्ति से कार्यकरते हैं इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ४–६–७–९–१०–१२–२–३ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ५–८–११–१ और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे समय में भी मन के विचारों की शक्ति के द्वारा आवश्यकताओं की पूर्ति कुछ कर ही देते हैं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. .....5030.....

कन्या लग्न वालों को, रेस आदि सभी व्या ार कार्यों के लिए, [१०१
लाभकारी रंग मणियां तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फल

कुं० न० ८३



(सू०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को खर्च तथा वाहरो अन्य स्थानों की सम्पर्क शक्ति इन दोनों के प्रधान अधिकारो फलदाता ग्रह सूर्य हैं। इनका रंग गुलाबी लाल है, इनकी मणि मणिक है, इनका स्वभाव बहुत गरम और हानिक.रक है, यह उन्नति प्रदान करने में तेज-बल की शक्ति से दूसरे स्थान के सम्बन्धित संपर्क मे कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां १२ हैं इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी अपने प्रभाव की शक्ति से खर्च संचालन की पूर्ति कुछ न कुछ कर ही देते हैं।

(मं) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को बाहुबल पुरुषार्थ, भाई-वहन आयु, मृत्यु, पुरातत्य, उदर इत्यादि प्रकारों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मङ्गल हैं इनका रङ्ग लाल है, इनकी मणी मूंगा है, इनका स्वभाव गरम कष्टप्रद है यह उन्नति प्रदान करने में बड़ी भारी मेहनत से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह है ८, ११, १६ और नेष्ट राशियां यह हैं ७, ४, १२, ९, ५ और सामान्य राशियाँ यह हैं १०, ३, २, इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी अपनी मेहनत की शक्ति से जीवन का निर्वाह किसी न किसी प्रकार करा ही देते हैं।

(बृ० , कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को माता, भूमि, मकान, जायदाद, सुख, स्त्री गृहस्थ, दैनिक रोजगार, भोग इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारो फलदाता ग्रह वृहस्पति हैं, इनका रङ्ग पीला है इनकी मणी पुखराज है इनका स्वभाव बड़प्पन युक्त शाँत प्रिय है यह उन्नति प्रदान करने में हृदय कर्म की शक्ती से शाँतयुक्त होकर कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह ४, ६, ९, ८, १२, ३ हैं और नेष्ट राशियां यह है ११, १, २, १०, ७ हैं।

CC-0. Jangamawadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ८४



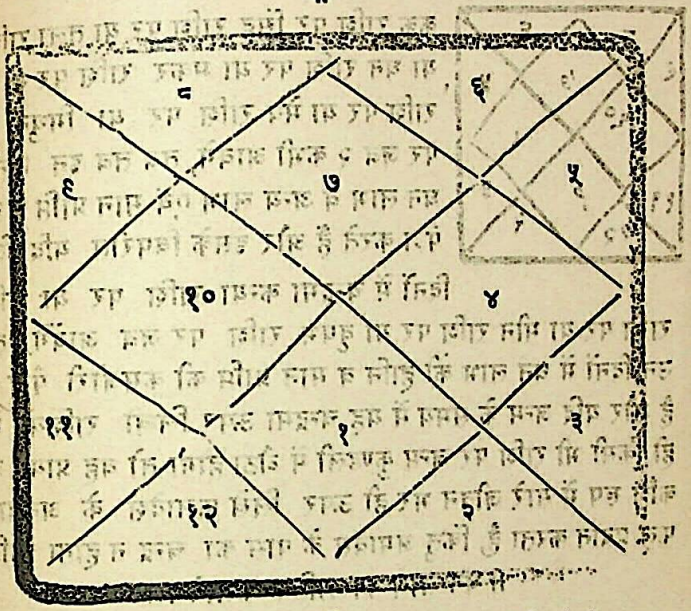
श०) कन्या लग्न वालों को विद्या संतान वाणी, शत्रु, रोग, झगड़े, झंझट, ननसाल, दिमागी थकान इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी हैं। इनका रंग काला नीला है, इनकी मणी नीलम है, इनका स्वभाव कठोर पेचीदा है, यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धी की कठिन युक्तियों से कार्य करते हैं। इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं १०–४–७–८–९–२–६ और नेष्ट राशियाँ यह हैं १-५ और सामान्य राशियां यह ६–११–१२ हैं।

(रा०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को दिमाग की गुप्त चालें चिन्ता, झूंठ कष्ट इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू हैं इनका रंग काला है इनका-मणी गोमेध है, इनका स्वभाव कटु हैं यह उन्नति प्रदान करने में दिमाग की गुप्त शक्ति से कार्य करते हैं। इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ३,४,६,११ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ७, ९, १२, १ और सामान्य राशियाँ ६–१०–२–५।

(के०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को बाहुबल की गुप्त शक्ति गुप्त धैर्य, चिन्ता, मुसीबत के बाद आनन्द कटुता अन्त में विजय, इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं इनका रंग काला है इनकी मणी लहसनियाँ है इनका स्वभाव कठोर है, यह उन्नति प्रदान करने में महान कठिनाइयों के कार्य से काम करते हैं इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह ४-८-९-११ हैं और नेष्ठ राशियां यह हैं ७–१–३–६–१२ और सामान्य राशियाँ यह १०–२ हैं और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी आन्तरिक बल की शक्ति से पुनः सफलता की आशा कुछ न कुछ करके ही मानते हैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

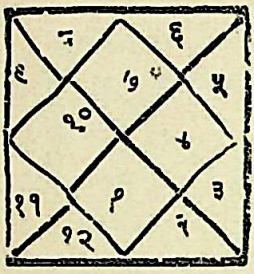
तुला लग्न फलादेश प्रारम्भ



इस कन्या लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः सू० बु० मं० चं० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० ८५ से लेकर कुण्डली नं० ९८ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ८५ ।



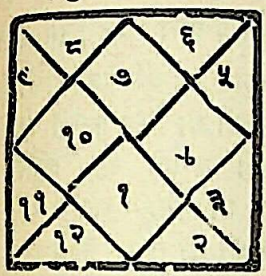
पंचाँग के अन्दर जिन २ दिनों में चंद्रमा कक राशि पर सिंह राशि पर या तुला राशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब तब इन दनों में धन लाभ व अन्य लाभ एवं मान प्राप्ति के साधन पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि जिन दिनों में चन्द्रमा कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर जब आयेंगे, तब उन दिनों में धन लाभ की हानि व मान प्राप्ति की कमजोरी पैदा करते हैं और यदि जन्म के समय में यह चन्द्रमा ऊपर लिखो राशियों में से ही किसी भी राशि पर जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो वह प्रायः अधिक काँश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार फल प्रदान करता है, किंतु अमावस के पास का चन्द्र न होना चाहिये ।

॥ धन लाभ का मासिक फलादेश ॥

पंचाँग के अन्दर जिन २ मासों में-सूर्य या मङ्गल सिंह राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर आवेंगे अथवा मङ्गल तुला राशि पर आवेंगे या सूर्य कर्क राशि पर आवेंगे अथवा शुक्र या बुध व चन्द्र जब २ कभी सिंह राशि पर आवेंगे तब उन मासों में धन का लाभ पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि कोई भी ग्रह जब२ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर आवेंगे तो उन मासों में धन की कमी य हानि का योग बनता है और जन्म के समय जो २ कोई से ग्रह यदि ऊपर लिखो राशियों में से किसी भी राशि पर जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार फल देता रहेगा किन्तु जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा तो उसका फल शुभ कारक नहीं माना है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

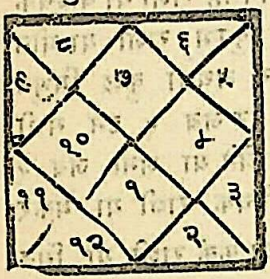
कुं० नं०८६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति, कर्क राशि या सिंह राशी या वृश्चिक राशी या धन राशि या कुम्भ राशी या मीन राशी या मेष राशी पर अथवा कुछ मिथुन राशी और तुला राशी पर जब २ इन सभी राशीयों पर कहीं भी आयेंगे या शनी जब २ कभी तुला राशी या वृश्चिक राशी या मकर राशी या मिथुन राशी या कर्क राशी या सिंह राशी या धन राशो पर जब २ कभी आयेंगे या राहू जब २ कभी मिथुन राशी या सिंह राशो या मीन राशी पर जब २ आवेंगे और या केतू जब २ कभी धन राशी या सिंह राशी या मीन राशी पर जब २ कभी आयेंगे तब २ इन २ वर्षों में समय लाभप्रद रहेगा, किन्तु इन २ वर्षों में भी वह मास उत्तम रहेंगे जिनमें कि इस बराबर पहिले पेज वाले-फारमूले के अनुसार मासिक ग्रह भी अनुकूल चल रहे हों, और वार्षिक लाभ योग के विपरीत यदि जिन २ वर्षों में शनी, कन्या राशी या मेष वृषभ राशी पर जब २ कभी आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी कन्या राशी मकर राशी या वृषभ राशी पर जब २ कभी आयेंगे, या राहू जब २ कभी धन राशी या मेष राशी या वृश्चिक राशी या वृषभ राशी या तुला राशी या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे या केतू जब २ कभी मिथुन राशी या कक राशी या वृश्चिक राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या मकर राशी पर जब २ कभी आयेंगे तब २ वह वर्ष निषेध समझे जाते हैं किन्तु उन वर्षों में भी खास तौर से वह मास निषेध होते हैं जिनमें मासिक ग्रह भी खोटे हो जाते हैं यहीं सब उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी जन्म के समय यदि जन्म कुण्डली में भी जो २ कोई भी ऊपर लिखी राशियों के अनुसार कहीं बैठा होगा तो वह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल देता रहेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ८७



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व जिन २ मासों में वृहस्पति, कर्क राशी या वृश्चिक राशी या मीन राशी या धन राशी या सिंह राशी या मेष राशी पर जब २ कभी आयेंगे और शनी जब २ कभी मकर राशी या सिंह राशी या वृश्चिक राशि या धन राशी या तुला राशी या कर्क राशी या मिथुन राशी पर जब २ आवेंगे और राहू जब २ कभी मिथुन राशी या सिंह राशी पर या मीन राशी पर जब २ आवेंगे और केतू जब २ कभी धन राशी या सिंह राशि या मीन राशी पर जब २ आवेंगे और मङ्गल जब २ जब कभी तुला राशी या सिंह राशी या मकर राशी या मेष राशी पर जब आवेंगे और सूर्य जब कभी कर्क राशी या सिंह राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी या मेष राशी या मिथुन राशी पर जब आवेंगे और बुध जब कभी मिथुन राशी या सिंह राशी या तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे; और शुक्र जब २ कभी तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी या मिथुन राशी या कर्क राशी या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या सिंह राशी या तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मेश राशी या मिथुन राशी पर जब २ आवेंगे अर्थात् यह सभी नव ग्रह ऊपर लिखा हुई राशियों में से ही, किसी न किसी राशी पर एक ही समय में आवेंगे, और जितने २ समय तक यह रहा करेंगे तब २ वह समय राजयोग का माना जायगा और यदि जन्म के समय में यह नवग्रहों में से अधिकतर इसी उपरोक्त राशियों में से ही जितने २ ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह प्राय : अधिकांश रूप मे सारे जीवन भर राजयोग कारक फल देते रहेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

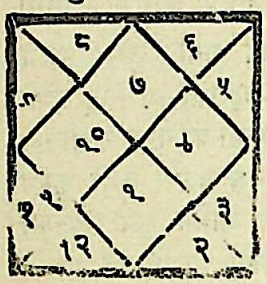
कु० नं० ८८



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में खास तौर से मुख्य ग्रह शनी, कुम्भ राशी या मिथुन राशी या कर्क राशी या सिंह राशी या तुला राशी या धनं राशी या मकर राशी पर जब २ कभी आयेंगे या बुधे जब २ कभी कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आवेंगे सूर्य जब-जब कभी कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आयेंगे या मंगल जब २ कभी वृश्चिक राशी या सिंह राशी पर आवेंगे या शुक्र जब २ कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आयेंगे तब २ संतान पक्ष एवं विद्या वाणी के सम्बन्ध को शुभ फलदायक रहते हैं। किन्तु इसमें उपरोक्त लिखे अनुसार शनी किसी न किसी राशी पर अवश्य होने चाहिये, और इसके विपरीत यदि शनी, जब २ मीन, वृश्चिक, या मेष राशी या वृषभ राशी या कन्या राशी पर जब २ आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी कुम्भ राशी पर दोनों में से कोई आयेंगे तब-तब विद्या व संतान पक्ष को व वाणी की सुन्दरता को नुकसान देय फल देते हैं यदि जन्म के समय इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे हुए फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे किन्तु जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो कोई भी ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण जन्म कुण्डली के अन्दर अच्छे घर में बैठकर भी शुभ फल प्रदान करने की शक्ती नहीं कर पाता है, और, पंचांग गोचर से भी जो ग्रह सूर्य से अस्त होगा वह उत्तम फल प्रदान नहीं कर पाता है।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

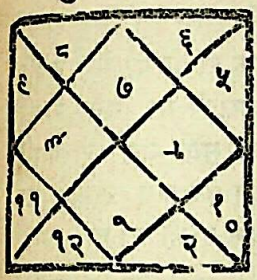
कुं० नं० ८१



पंचांग के अन्दर जिअ २ वर्षों में व मासों में शुक्र वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर या सिंह राशी पर या तुला राशी पर वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशि पर या मेष राशी जब २ कभी आयेंगे या शनी जब २ कभी वृषभ राशि पर या सिंह राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशी पर जब २ आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशी पर वृश्चक राशी पर आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर आयेंगे या सूर्य जब २ कभी वृषभ राशी पर या वृश्चिक राशी पर आयेंगे या बुध जब २ कभी वृशभ राशी पर या वृश्चिक राशी पर आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशी पर आयेंगे तब-तब आयु एवं उदर और पुरातत्व सम्बन्धों में कुछ सहायक शक्ति व उन्नति प्राप्त करते हैं और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी कन्या राशि पर आयेंगे या राहू वृषभ राशी पर आयेंगे या केतू जब २ कभी वृषभ राशी पर आयेंगे तब २ आयु, उदर पुरातत्व सबंधों में कुछ परेशानी का योग पैदा करते हैं किन्तु इस लग्न में मङ्गल वृहस्पति, बुध यह तीनों ग्रह जब भी वृषभ राशी पर आकर पुरातत्व उदर और आयु के सम्बन्ध में शुभ करते हैं तो कुछ अड़चने भी पैदा करते हैं और यही सब उपरोक्त ग्रह जन्म के समय यदि इन में उपरोक्त राशियों में से जिस २ किसी भी राशी पर जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह अधिकांश रूप में प्रायः सारे जीवन भर ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा' तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी पूरी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

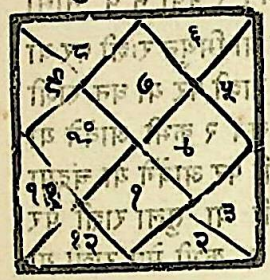
कुं० न० ९०



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य जब२ कभी मेष राशी पर आवेंगे या चंद्रमा जब २ कभी मेष राशी या तुला राशी पर आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी मेष राशी या सिंह राशी या तुला राशि या धन राशी पर जब २ आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में शक्ति व उन्नति पैदा करते हैं और मङ्गल जब कभी कन्या राशी या वृश्चिक राशी या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे या शुक्र जब २ कभी मेष राशी या तुला राशो पर आवेंगे या शनी जब २ कभी या तुला राशी पर या कर्क राशी पर आवेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ सामान्य बुरा फल करते हैं और इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी वृषभ राशी या मीन राशि पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मेष राशी या तुला राशी पर आयेंगे या शनो जब २ कभी मेष राशी पर आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ कभी व कष्ट का योग पैदा करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो-जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार हो फल प्रदान करते रहेंगे और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक हो गया १ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा चाहे वह ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा हो और चाहे वह ग्रह पंचांग गोचर प्रणाली वाला हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

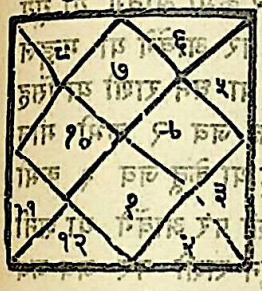
कुं० नं० ९१



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध मिथुन राशी या कर्क राशी या सिंह राशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी या मेष राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या धन राशी पर जब २ कभी आयेंगे या सूर्य जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशी पर जब आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे या शनी जब २ कभी मिथुन राशि पर या धन राशी जब २ आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशी पर या मीन राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभी तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे या राहू जब २ कभी मिथुन राशी पर आयेंगे, तब २ भाग्य की वृद्धी व धर्म और ईश्वर में श्रद्धा उत्पन्न होती है और यदि इसके विपरीत बुध जब २ कभी मीन राशी में या वृषभ राशी में आवेंगे या केतू जब २ कभी मिथुन राशी में आवेंगे तब २ भाग्य और धर्म में कमजोरी पैदा करते हैं और यदि बुध जब २ कभी कन्या राशी में आवेंगे, तो भाग्य और धर्म को सामान्य शक्ति देते है, और इसी प्रकार जन्म के समय यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह इन्हीं उपरोक्त २ राशियों के अन्तर्गत, जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे और जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

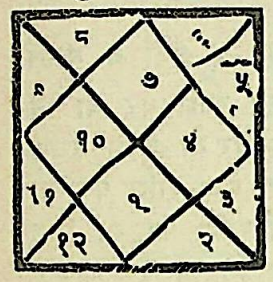
कु० नं० ९२



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में शुक्र जब २ कभी, तुला राशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर या कर्क राशि पर या सिंह राशि पर जब २ कभी आवेंगे या बुध जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आवेंगे या शनी, तुला राशि पर या सिंह राशी पर या मकर राशि पर जब २ कभी आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभी कुम्भ राशि मिथुन राशि तुला राशी पर जब २ आयेंगे तब २ देह की सुन्दरता ख्याति व आत्मबल के लिये उन्नति प्रदान करते हैं और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी वृषभ राशि व कन्या राशी पर जब २ आवेंगे या सूर्य जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे या राहू या केतू कोई भी जब २ कभी तुला राशि पर आवेंगे तब देह की सुन्दरता व आत्मबल की शक्ति में कमी व कमजोरी पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे अनुसार फलादेश के मुताबिक ही फल प्रदान करता रहेगा यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

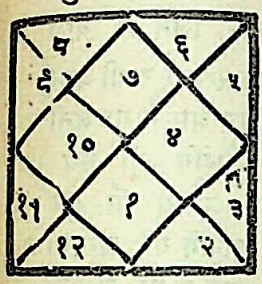
कुं० नं० ९३



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में वृहस्पति, धन राशी या मीन या कर्क वृश्चिक या सिंह राशी पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी मान राशी या धन राशी या सिंह राशी पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मीन राशी व कन्या राशी पर आवेंगे या शनी जब २ कभी मीन राशी या मकर राशी या मिथुन राशी पर जब-जब आयेंगे तब तब रोग व शत्रु पक्ष में एवं झगड़े झंझटों में विजय प्रदान करते हैं और ननसाल पक्ष में कुछ प्रभाव पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशी या कन्या राशी या मकर राशी पर जब २ आयेंगे या बुध जब २ मीन राशी पर आयेंगे तब २ रोग या शत्रु पक्ष या झगड़े-झंझटों की ओर से व ननसाल पक्ष की ओर से अशांतप्रद वातावरण पैदा करते हैं और यदि चन्द्रमा जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी या तुला राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी पर जब २ आवेंगे तब २ रोग शत्रु झगड़े झंझट, व ननसाल पक्ष की ओर सामान्य रूप से फल प्रदान करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो कोई भी ग्रह, ऊपर लिखी राशियों में ही यदि जन्म कुण्डली में बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में ऊपर लिखे अनुसार ही जीवन भर फल करते रहते हैं और जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा फल नहीं करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

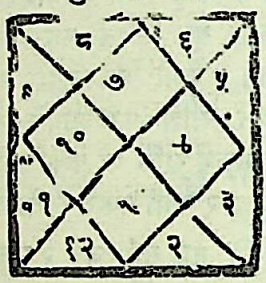
कुं० नं० ६४



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी, मकर राशि या कर्क राशी या वृश्चिक राशि या सिंह राशी या मिथुन राशी पर आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी मकरराशि या तुला राशि या मिथुन राशि पर आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आयेंगे या सूर्य जब २ मकर राशि या कर्क राशि पर आयेंगे तब माता, भूमि मकानादि एवं सुख शान्ती, के सम्बन्ध में सफलता एवं सुख प्रदान करते हैं और इसके विपरीत यदि शनो, मीन राशि या वृषभ राशि या मेष राशि या कन्या राशि पर जब २ कभी आवेंगे या बृहस्पति जब २ मकर राशि या कर्क राशि या वृषभ राशि या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे या राहू या केतू कोई भी जब-जब कभी मकर राशि या कर्क राशि पर जब २ आयेंगे तब २ सुख शांती व मातृ स्थान व मकान भूमि आदि के सम्बन्धों में क्लेश व कमी का योग पैदा करते हैं और जन्म के समय यह उपरोक्त सभी ग्रह, यदि इन्हीं उपरोक्त २ राशियों के अन्तर्गत ही यदि जन्म कुण्डली में जो कोई बैठे होंगे तो वह ग्रह अधिकाँश रूप में प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल देते रहते है और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो यह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

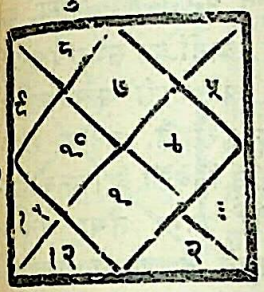
कुं० नं० ६५



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में
मासों में वृहस्पति, जब २ कर्क राशी या वृश्चिक
राशि या मीन राशि पर आयेंगे या शनी जब
कभी कर्क राशि पर आयेंगे या सूर्य जब
कभी कर्क राशि पर आयगे या बुध जब
कभी कर्क राशि पर आयेंगे या चन्द्रमा जब
कभी कर्क राशि पर आयेंगे या चन्द्रमा तु
राशि या मकर राशि या सिंह राशी पर आ
या शुक्र जब २ कभी कर्क राशि पर आयेंगे, त
मान प्रतिष्ठा, राज काज, ऊँचा व्यापार व पिता सम्बन्ध में उन्नति
सुख प्राप्ति के साधन प्रदान करते हैं और इसके विपरीत यदि चन्द्रम
जब जब कभी, कन्या राशि या वृश्चिक राशि या मीन राशि पर आ
या मङ्गल जब २ कभी कर्क राशि य धन राशि पर आयेंगे या राहू
केतू कोई भी जब २ कभी कर्क राशी पर आयेंगे तब पिता, मान, प्रति
ऊचा, कारबार, समाज, राज के सम्बन्धों में कुछ हानि युक्त कमी
का योग पैदा करते हैं। और चन्द्रमा जब कभी धन राशि या
राशी या वृषभ राशि या मिथुन राशि या मेष राशि पर आयेंगे
मंगल मेष राशि पर आयेंगे तो इस प्रकरण में सामान्य फल प्रद
करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं सब उपरोक्त ग्रहों में से
भी ग्रह इन्हीं उपरोक्त २ राशियों के अन्तर्गत जन्म कुण्डली में जो
कोई भी बैठा होगा, तो वह ग्रह अधिकांश रूप में प्रायः सारे जी
भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहे
किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २० अंश से अधि
होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कार
अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ शुभ फल नहीं दे सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० ९६



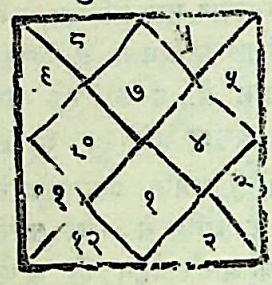
(चं०) तुला लग्न वाले व्यक्तियों को पता राज समाज ऊंचा व्यापार मान प्रतिष्ठा, कर्म आदि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं, इनका रंग गौर उज्ज्वल है, इन का स्वभाव शाँति प्रिय शीतल है, इनकी मणी मोती है, उन्नति प्रदान करने में मनोबल के कर्म की शक्ति से कार्य करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह है–४–५–७–३–१०–१–९–११ और नेष्ठ राशियां और सामान्य राशियां यह २–६–८–२–हैं।

(सू० तुला लग्न वाले व्यक्तियों को आमदनी, आवश्यक पदार्थों की प्राप्ती, तेज इत्यादि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फल दाता सूर्य हैं। इनका रंग लाल है इनका स्वभाव बहुत गरम है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करने में प्रभाव की शक्ति से कार्य रकते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं, ५-८-९-१०-११-१-३-४ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं–६-७-२ और सामान्य राशि १२ है।

(शु०) तुला लग्न वालों को देह, आत्मबल, सुन्दरता, आयु, मृत्यु, पुरातत्व, उदर जीवन की दिनचर्या इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं, इनका रंग सफेद है, इनका स्वभाव महान् चतुर है, इनकी मणी हीरा है, यह उन्नति प्रदान करने में आत्म-बल की शक्ति के कार्य करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ७-९-१०-११-१-३-४-५ और नेष्ठ राशि यह ६-है और सामान्य राशि –८-१२-२ है इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी आत्मबल की शक्ति के द्वारा जीवन निर्वाह की कार्य पूर्ति कर ही देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० ६७



(बु०) तुला लग्न वालों को भाग्य, धर्म भक्ति, खर्च, बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्र बुद्ध हैं। इनका रङ्ग हरा है, इनका स्वभा बड़ा नरम और महान विवेकी है। इनकी म पन्ना है, यह धर्म और भाग्य तथा खर्च शक्ति से कार्य करते हैं इनका कुण्डली अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ ३-४-५-८-९ -११-१-७ हैं और नेष्ट राशियाँ यह हैं–१२–२ और सामान्य राशि ६ है

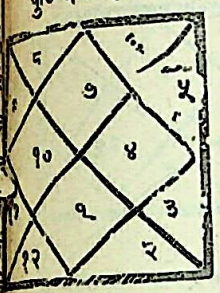
(मं०) तुला लग्न वाले व्यक्तियों को धन कोष कुटुम्ब स्त्री दैनि रोजगार इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मङ्गल इनका रङ्ग लाल है इनका स्वभाव गरम है इनकी मणी मूंगा है उन्नति प्रदान करने में दैनिक कर्मके परिश्रम योग से कार्य करतेहैं इन कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ७-८-९-१०-१-३-५ और नेष्ठ राशियाँ यह ४-६-२-१२ है और सामान्य राशियाँ यह ११ है

(बृ०) तुला लग्न वाले व्यक्तियों को भाई, बहन, पराक्रम, झगड़े-झंझट, शत्रु, ननसाल, बाहुबल के परिश्रमी विशेष कार्य इत्या विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बृहस्पति हैं इनका स्वभा बड़प्पन युक्त बहादुराना तेज है इनका रंग पीला है इनकी मणी पुखरा है यह उन्नति प्रदान करने में बाहुबल और हृदयबल की परिश्रम श से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ ७-३-९-१२-५-१-४-८ हैं और नेष्ठ राशियाँ यह १०-२-६ है और साम राशि ११ हैं इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी ग्रह की शक्ति के द्वारा प्रभाव की रक्षा किसी न किसी प्रकार कर देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाभकारी रङ्ग मणियाँ, ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कु० नं० ६८



(श०) तुला लग्न वालों को विद्या सन्तान वाणी, माता, भूमि, जायदाद सुख शाँती मकान, इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी हैं इनका रङ्ग काला नीला है, इनकी मणी नीलम है, इनका स्वभाव शाँती युक्त है यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धी की गम्भीर युक्तियों से कार्य करते हैं। इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ,८,६,१०,११,३,४,५ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं २-६-१ और सामान्य राशि १२ हैं।

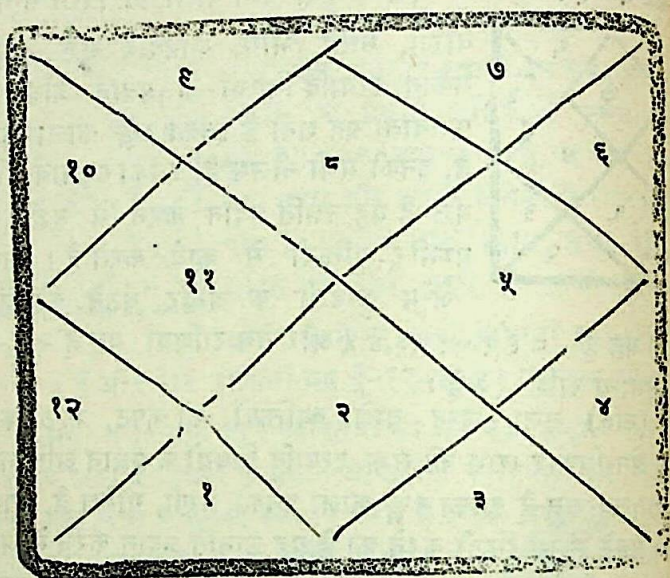
(रा०) तुला लग्न वाले व्यक्तियों को कपट, झूंठ, कष्ट, चिन्ता, अनाधिकार लाभ की सूझ इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू है इनका रङ्ग काला इनकी मणी, गोमेध है, इनका स्वभाव गहरे स्वार्थ सिद्धी करने का है यह उन्नति प्रदान करने में अति कठिन कार्य की पूर्ति करने का मार्ग, आन्तरिक बुद्धि के योग से पकड़ कर अग्रसर होते हैं इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह ३-५-१२ हैं और नेष्ठ राशियाँ यह हैं २-८-४-१ और सामान्य राशियां यह ७-१०-११-६ हैं।

(के०) तुला लग्न वाले व्यक्तियों को गुप्त धैर्य, वीरत्व, चिंता छिपाव इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं इनका स्वभाव कठिन कार्यों की पूर्ति करने के हेतु गरम हैं इनका रंग काला है इनकी मणि लहसनियां है, यह उन्नति प्रदान करने में महान कठिनाइयों के कार्य से कर्म करते हैं इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह ६-१२-५ हैं और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ८-१-२-४ और सामान्य राशियाँ यह ७-१०-११-३-६ हैं इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी बाहुबल और हृदयबल की आन्तरिक शक्ती के द्वारा मुसीबतों में से अच्छाइयां निकाल लेते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वृश्चिक लग्न फलादेश प्रारम्भ

*

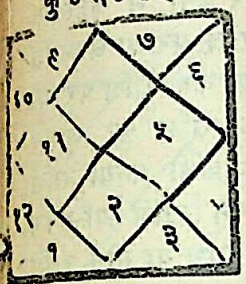


*

इस वृश्चिक लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः चं० सू० बु० गु० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० ९९ से लेकर कुण्डली नं० ११२ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० ८९



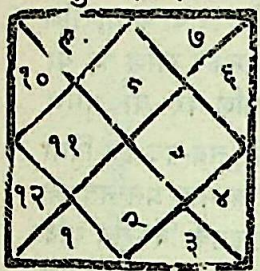
पंचांग के अन्दर जिन २ दिनों में चंद्रमा कर्क राशि पर या सिंह राशि पर या कन्याराशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर जब२ कभी आवेंगे, तब-तब इन दिनों में धन लाभ की प्राप्ती व मन प्रसन्नता के कारण पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि चंद्रमा जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आवेंगे, तब-तब मन को अशाँती व हानि के कारण पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय में यह चन्द्रमा ऊपर लिखी राशियों में से ही किसी भी राशि पर यदि जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो वह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भरही ऊपर लिखे अनुसारही फल प्रदान करता रहता है

॥ धन लाभ का मासिक फलादेश ॥

पंचांग के अन्दर जिन २ मासों में सूर्य जब २ कभी सिंह राशि पर या कन्याराशि पर या वृश्चिकराशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भराशि पर या मीनराशि पर या मेषराशि पर या वृषभराशि पर या कर्कराशि पर जब २ कभी आयेंगे या बुध जब २ सिंह राशि पर या कन्याराशि पर या वृश्चिक राशि पर या धनराशि या मकर राशि पर या कुम्भ राशि या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर जब २ कभी आवेंगे और मंगल जब २ कभी कन्या राशि पर या मकर राशि पर या सिंह राशि पर या कुम्भ राशि पर वृश्चिक राशि पर या वृषभ राशि पर या मीन राशि पर जब २ आवेंगे तब २ इन महीनों में धन लाभ का योग उत्तम रहता है और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशि पर या मिथुन राशि पर आवेंगे या बुध जब कभी तुला राशि पर या मेषराशि पर या मिथुन राशि पर या मीन राशि पर जब २ आवेंगे या मंगल जब २ कभी तुला राशि या कर्कराशि पर जब २ आयेंगे तब २ धन लाभ के सम्बन्ध में परेशानी का योग पैदा करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

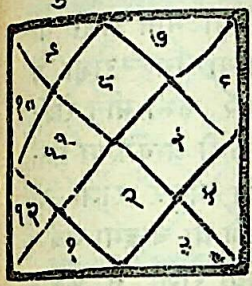
कुं० नं० १००



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में वृहस्पति सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या धनराशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या मीन राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ आयेंगे और शनी जब २ कभी कन्या राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मकर राशि या कुम्भ राशि या वृषभ या मीन राशि पर या कर्क राशि पर जब २ कभी आयेंगे या राहू जब २ कभी कन्या राशि पर या मकर राशि पर या मिथुन राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे या केतू जब २ कभी कन्या राशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या मेष राशि पर जब२ आयेंगे तब २ वर्षों में धन लाभ का योग उत्तम रहता है। किन्तु इन लाभकारी वर्षों में यदि मासिक ग्रह भी लामकारी जब २ आतेहैं तब-तब अधिक लाभ होता है और इसके विपरीत यदि वृहस्पति जब २ कभी तुला राशि पर या म.र राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ कभी आवेंगे और शनी जब २ कभी तुला राशी पर या मेष राशि या मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे और या राहू जब २ कभी धन राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे, या केतू जब कभी मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे तब २ इन वर्षों में लाभ सम्बन्धी मामलों में परेशानी का योग पैदा करते हैं, किन्तु जब २ मासिक ग्रह भी हानिकारक आ जाते हैं तब तब इन वर्षों में खास तौर से हानिकारक योग पैदा होते हैं और जन्म के समय यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जो जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार कोई भी बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः अधिकाँश रूप में, सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देता रहता है और जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होता है या २९ अंश से अधिक होता हैं या १ अंश से कम होता है तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी पूरी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

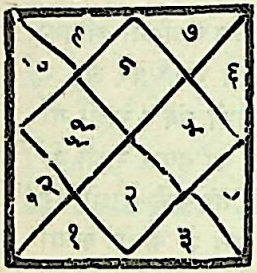
कुं० नं० १०१



पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृ स्पति सिंह राशी या धन राशी या वृश्चिक राशी या कर्क राशी या मीन राशी पर जब २ आयेंगे और शनी, जब २ कभी मकर राशी या कुम्भ राशी या कन्या राशी या वृषभ राशी या वृश्चिक राशि या धन राशी या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे और राहू जब २ कभी कन्या राशी या मकर राशी या तुला राशी या मेष राशी या मिथुन राशी या मीन राशी पर जब २ आयेंगे और केतू जब-जब कभी कन्या राशी या मकर राशी या धन राशी या मेष राशी या तुला राशी पर जब २ आयेंगे और मङ्गल जब२ कभी वृश्चिक राशी या मकर राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या वृषभ राशी पर जब आयेंगे और सूर्य जब २ कभी सिंह राशी या वृश्चिक राशी या कन्या राशी या कर्क राशी या कुम्भ राशी या मोन राशी या मेष राशी या धन राशी या वृषभ राशी या मकर राशी पर जब २ आयेंगे और बुध जब २ कभी कन्या राशी या वृश्चिक राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या धन राशी या कर्क राशी या वृषभ राशि जब २ आयेंगे और शुक्र जब कभी तुला राशी या मकर राशी या वृषभ राशी या मीन राशी या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे, अर्थात् यह सभी ग्रह ऊपर लिखी हुई राशियों के अन्तर्गत ही जिन २ वर्षों में या मासों में एक ही साथ आया करेंगे तब २ ही राजयोग भाग्योदय कारक उन्नति के अवसर प्राप्त हुआ करते हैं किन्तु जिस समय कोई ग्रह सूर्य से अस्त होता है वह कम जोर फल प्रदान करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

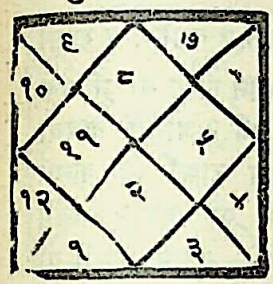
कुं० नं० १०२



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति, वृश्चिक राशी या मीन राशी या कर्क राशी या कन्या राशी या सिंह राशी में जब २ आयेंगे या सूर्य जब २ कभी मीन राशी या कन्या राशी में जब २ कभी आयेंगे या शनी जब २ कभी मीन राशी या मकर राशी या कन्या राशि में जब २ अ वेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मोन राशी या कन्या राशी में जब २ आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी सिंह राशी या कन्या राशी या धन राशी या मीन राशी में जब २ आवेंगे या शुक्र जब २ कभी मीन राशी में आवेंगे तब २ विद्या व सन्तान पक्ष और वाणी की शक्ति में उन्नति प्रदान करते हैं किन्तु इसके विपरीत यदि वृहस्पति जब २ कभी मेष राशी या मिथुन राशि या तुला राशी या मकर राशी में जब २ आयेंगे या बुध जब २ कभी मीन राशी या कन्या राशी में जब २ आयंगे, या राहू अथवा केतु कोई भी मीन राशी पर आयेंगे तब २ संतान पक्ष की एवं विद्या या वाणी की शक्ती को कमजोर करके अशांती उत्पन्न करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं सब ग्रहों में से जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर यदि इन्हीं उपरोक्त राशयों में से जिस किसी भी राशि में बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार फल देते रहते हैं किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होता है या २९ अंश से अधिक होता है या १ अंश से कम होता है तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण पूरा २ फल नहीं देता है और वृहस्पति जब २ कभी धन राशी या कुम्भ राशी या वृषभ राशी पर होते हैं तो विद्या व संतान पक्ष में साधारण फल देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

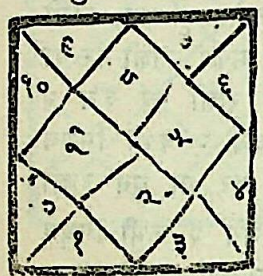
कुं० नं० १०३



पंचांग के अन्दर जिन वर्षों व मासों में बुध मिथुन राशी पर या कर्क राशी या सिंह राशी या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर जब २ आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी पर या कुम्भ राशी पर या धन राशी पर आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी मिथुन राशि या कन्या राशी पर या धन राशी पर जब २ कभी आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी मिथुन राशी पर आवेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी मीन राशी पर या वृश्चिक राशी पर आवेंगे, तब-तब आयु की वृद्धी तथा पुरातत्व का लाभ और पेट की बीमारियों को आराम तथा दिनचर्या में रौनक पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी तुला राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर जब २ आवेंगे और अथवा शुक्र जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा केतू जब २ कभी मिथुन राशी पर आवेंगे, तब २ आयु व उदर और पुरातत्व एवं दिनचर्या आदि सभी के सम्बन्धों में कुछ हानिकारक व परेशानियों के कार्य पैदा करते हैं और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त सभी ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह यदि जन्म कुण्डली के अन्दर इन्हीं उपरोक्त राशियों में से किसी भी राशी में कोई ग्रह बैठा होगा, तो वह प्रायः अधिकांश सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देता रहेगा और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

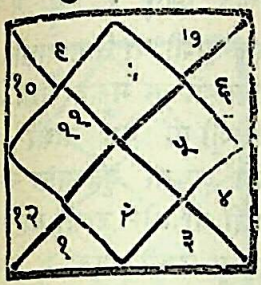
कुं० नं० १०४



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी, वृषभ राशी या मीन राशी या वृश्चिक राशी या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशी या कन्या राशी या वृश्चिक राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी, वृषभ राशी या वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी, वृषभ राशी या वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशी या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी कुम्भ राशी या वृश्चिक राशी या तुला राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशी या मीन राशी या कुम्भ राशी या कक राशी या मकर राशी या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के लिये लाभप्रद सुखदायक रहेंगे किन्तु इसके विपरीत यदि राहू या केतू जब २ कभी वृषभ राशी या वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मेष राशी या मिथुन राशी या कन्या राशि या तुला रा श या धन राशि पर जब २ आयेंगे तब २ स्त्री पक्ष में व दैनिक रोजगार के पक्ष में कुछ कमी व अशांति का योग पैदा करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं सब ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार ही यदि जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है, यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर पाता है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

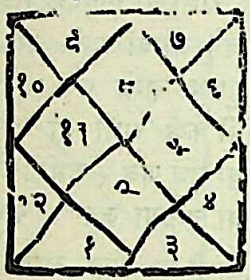
कुं० नं० १०५



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति कर्क राशी या वृश्चिक राशी या मीन राशी पर आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी कर्क राशी या वृषभ राशी पर आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी कर्क राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या धन राशी मीन राशी या वृषभ राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ भाग्य और धर्म व इश्वर-भक्ति व देवीशक्ति की वृद्धी करते हैं तथा मन प्रसन्न रहता है और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी कर्क राशी पर आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी कर्क राशी या मेष राशी या मकर राशी या धन राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब-जब कभी तुला राशी या वृश्चिक राशी या मेष राशी या मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू कोई जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे तब २ भाग्य, धर्म, ईश्वर भक्ति दैवी शक्ति तथा मन की प्रसन्नता, आदि विषयों में कमी व अशांती के कारण पैदा करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं ग्रहों में से जो २ भी उपरोक्त राशियों के अनुसार कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली में बैठे होंगें तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकाँश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

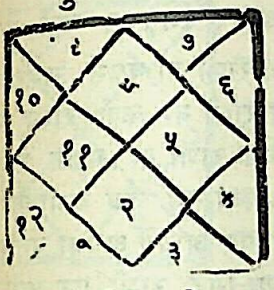
कुं० नं० १०६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल वृश्चिक राशी या सिंह राशी या वृषभ राशी या कन्या राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या मेष राशी पर जब-जब कभी आयेंगे अथवा वृहस्पति जब-जब कभी वृश्चिक राशी या मीन राशी या कर्क राशी में आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी वृश्चिक राशी में आयेंगे अथवा सूर्य जब-जब कभी वृश्चिक राशी में आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी मिथुन राशी पर आयेंगे तब २ देह व ख्याति, सुन्दरता, आत्मबल मान इत्यादि विषयों की वृद्धी करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशी या कर्क राशी या तुला राशी या धन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आयें अथवा चन्द्रमा जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आयगे अथवा, राहू या केतू कोई भी जब कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे तब २ देह पक्ष एवं सुन्दरता, ख्याति मान, आत्मबल आदि के विषय में अवनति का कार्य करते हैं, और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त ग्रहों में से को भी ग्रह इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली के अन्दर जो २ कोई भी बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल, लिखे अनुसार नहीं दे सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

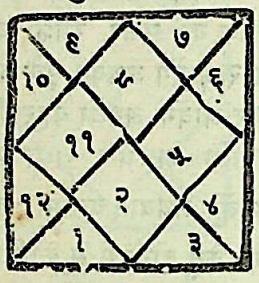
कु० नं० १०७



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में मंगल मेष राशि या सिंह राशि या कन्या राशी या वृश्चिक राशि या मकर राशि या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मेष राशि पर आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मेष राशि या धन राशि या सिंह राशि पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशि पर आवेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब २ कभी मेष राशि या तुला राशि या पर आयेंगे, तब२ शत्रु, रोग, झगड़े झंझटों से मुक्ति पाने का योग प्राप्त होगा और निर्भयता प्राप्त होगी, किन्तु इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशि या कर्क राशि या धन राशि या तुला राशी पर जब २ आवेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मेष राशि पर आयेंगे अथवा शनी जब२ कभी मेष राशि पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी मेष राशि पर आयेंगे तब २ कुछ झगड़े झंझट, रोग, शत्रु आदि की ओर से कुछ परेशानी प्राप्त करते हैं किन्तु शनि जब २ कर्क राशी पर तुला राशी पर कुम्भ राशी पर आयेंगे तब२ झगड़े झंझट शत्रु पक्षसे कुछ अशान्ति सी प्रतीत होती है और जन्म के समय में यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह, ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर जो कोई ग्रह बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः आधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार फल प्रदान करते रहते हैं, और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

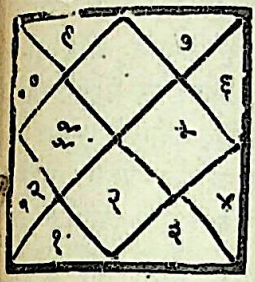
कुं० नं० १०८



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी कुम्भ राशी या वृषभ राशी या धन राशी या कन्या राशी या कर्क राशी या सिंह राशी या वृश्चिक राशी या मकर राशी पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब कभी कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आयेंगे या गुरु जब २ सिंह राशी पर आवेंगे अथवा किसी अंशों में मंगल या गुरू भी जब २ कुम्भ राशी पर आयेंगे, तब-तब माता, भूमि, मकानादि, सुख प्राप्ती के साधनों की वृद्धि करते हैं किन्तु इसके विपरीत यदि शनी, जब २ कभी मेष राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी कुम्भ राशी पर आवेंगे अथवा किसी अंशों में बुध जब कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब २ कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आयेंगे, तब-तब माता, भूमि, मकानादि एवं सुख के साधनों की कमी प्राप्त होगी और जन्म के समय यदि इन्हीं सब ग्रहों में से जो २ कोई भी, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही, अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहेगा और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा फल नहीं करता है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

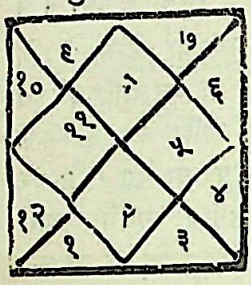
कुं० नं० १०६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में सूर्य सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या कर्क राशि पर या मकर राशि पर या मेष राशि पर पर या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा वृहस्पति जब जब कभी सिंह राशि पर या धन. राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि जब २ आवेंगे अथवा मंगल जब २ कभी सिंह राशि पर या मकरराशि पर या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर आयेंगे तब २ मान, प्रतिष्ठा, राज, समाज पिता, बड़ा कारबार आदि सम्बन्धों की उन्नति प्रदान करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि सूर्य जब कभी तुला राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंहराशि पर आयेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब कभी सिंह राषि पर या कुम्भ राशि पर आवेंगे तब तव पिता, राज समाज, बड़ा कारबार, मान प्रतिष्ठा आदि के विषय में हानिकारक या कष्टप्रद कार्य करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह प्रायः अधिकाँश रूप में सारे जीवन भर हो ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहता हैं। और यदि कोई भी ग्रह, सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ११०



(चं० वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य, धर्म, यश ईश्वर भक्ती, मनो शांती आदि विषयों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं, इनका रंग गौर उज्ज्वल है इनका स्वभाव शाँत, शोतल सुखद है इनकी मणी मोती है यह उन्नति प्रदान करने में मनोबल की सतागुणी शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं ९-४-५-६-१०-१२-११-९ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ७, १, ३ और सामन्य राशि यह ८ हैं।

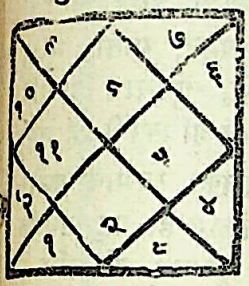
सू०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को-राज, व्यापार, पिता कीर्ति, वैभव, मान, प्रतिष्ठा प्रभाव आदि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं, इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव महान् गर्म व प्रकाशदाता है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करने में महान प्रभावशाली कर्म की शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ,५-६-८-९-११-१२-१० २-१ हैं और नेष्ठ राशियां यह ७—३ तुला मिथुन है।

(बु०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को धन लाभ आवश्यक पदार्थों की प्राप्ती, आयु, मृत्यु उदर का सम्बन्ध, विदेश इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं, इनका रंग हरा है, इनका स्वभाव नरम है इनकी मणी पन्ना है, यह उन्नति प्रदान करने में दूसरे स्थानों से सम्बन्धित विवेक शक्ति की दौड़ धूप के कार्यों से काम करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं कन्या से लेकर ६, ८, ९, १०, ११, २, ४, ५ सिंह तक और नेष्ठ राशियाँ यह ७, १२, १ तुला मीन मेष हैं और सामान्य राशि ३ है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाभकारी रंग मणियां यथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं० १।१



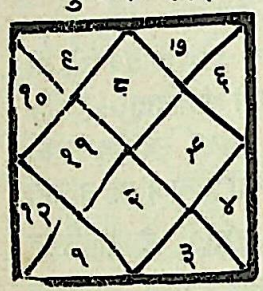
(शु०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को-खर्च, बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, ससुराल इत्यादि विषयों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र है, इनका रंग सफेद है, इनका स्वभाव कला युक्त कोमल है,इनकी मणी हीरा है,यह उन्नति प्रदान करने से, बाहरी स्थानों के सबन्धित संपर्क से रोजगार में उन्नति करने का कार्य करते हैं ! इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशिमां यह वृश्चिक से लेकर ८-१०-११-१२-२-४ कर्क तक है और नेष्ठ राशियाँ यह ६-१ ३-९ हैं और सामान्य राशियां यह ५-७ हैं

(मं०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को, देह आत्मबल, स्वरूप, ख्याति शत्रु, रोग झगड़े झंझट, पाप, ननसाल इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मङ्गल हैं। इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव अहंभावीय गरम है, इनकी मणी मूंगा है, यह उन्नति प्रदान करने में देह के परिश्रम की शक्ति से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह बृश्चिक से लेकर ८-१०-११-१२-१-३-५-६ और नेष्ठ राशियां यह हैं ७-३-४ और सामान्य राशि ९ है।

(बृ०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्यिों को धन की संग्रह शक्ति, कुटुम्ब, विद्या, बुद्धि वाणी सन्तान आदि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बृहस्पति हैं इनका रंग पीला है, इनका स्वभाव बड़प्पन युक्त आदश है, इनकी मणी पुखराज है यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धिबल व धनबल की शक्ति से कार्य करते हैं। इनका कुण्डली के अंदर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ८-१२-२-४-५-६-९ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ७-१०-३ और सामान्य राशी यह ११. १ हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ११२



(श०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों बाहुबल, का कार्य भाई-बहन, माता, भूमि, मकानादि सुख, मातृभूमि, पुरूषार्थ इत्यादि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी ग्रह शनी हैं इनका रंग श्याम है, इनका स्वभाव कठोर कोमल है इनकी मणी नीलम है, यह उन्नति प्रदान में धैर्य, साहस व पुरुषार्थ की शक्ति से कार्य करते हैं। इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं मकर से लेकर १०-११-२-४-६-८-९-१२-५ और नेष्ट राशियाँ यह है १, ३ और सामान्य राशियाँ यह ७ तुला हैं।

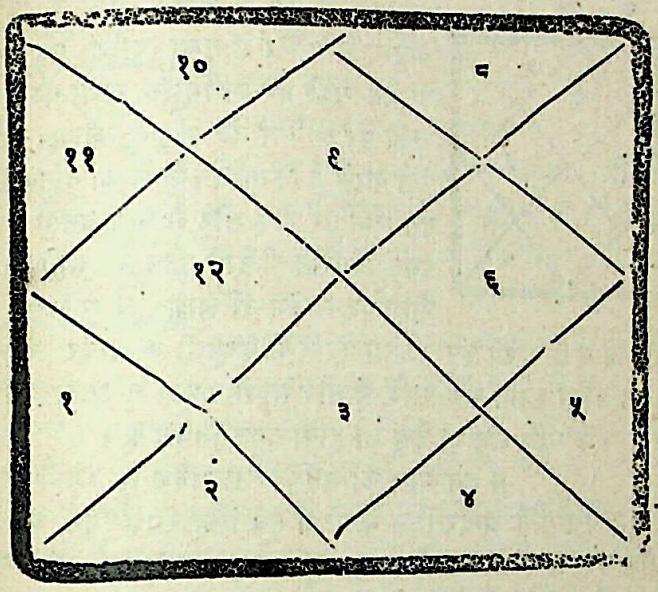
(रा०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को, असत्य, छिपाव, चिंता कष्ट, अनाधिकार लाभ के लिये विशेष प्रयत्न वाली गुप्त बुद्धी इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू है इनका रंग काला है इनकी मणी गोमेध है, इनका स्वभाम स्वार्थी है यह उन्नति प्रदान करने में कष्टका ी मार्ग के द्वारा महान लाभ की प्राप्ती के लिये गुप्त सूझ की शक्ति से कार्य करते हैं इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने क श्रेष्ठ राशियाँ यह १०, ६, १, ३, हैं और नेष्ठ राशियां यह हैं ९, ५ और सामान्य राशियाँ यह ८, ११, १२, २, ४, ७, हैं।

(के०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को–असत्य चिन्ता कष्ट, अनाधिकार लाभ के लिये विशेष प्रयत्य, गुप्त बाहुबल की निष्ठुरता इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं इनका रंग काला है इनका स्वभाव कठोर हैं इनकी मणी लहसनियाँ है, यह उन्नति प्रदान करने में हृदय बल की गुप्त कठिन शक्ति से कार्य करते हैं इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं धन से लेकर ९, १०, १, ६ और नेष्ठ राशियां यह ३, ५, ८ है और सामान्य राशियां यह १२, ११, २, ४, ७ तुला हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धन लग्न फलादेश प्रारम्भ

*

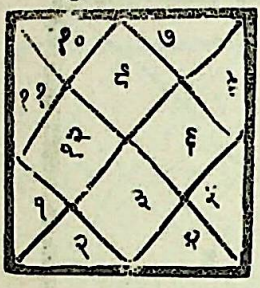


*

इस धन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः सू० बु० शु० श० गु० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० ११३ से लेकर कुण्डली नं० १२८ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ११३



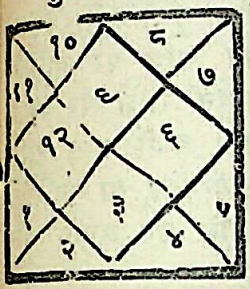
पंचाँग के अन्दर जिन २ दिनों में चन्द्रमा खासतौर से तुला राशि पर आवेगा या मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर आवेगा तब २ कुछ लाभ का योग पैदा करते हैं किन्तु धन लाभ का दनिक विचार इस लग्न पर ठीक तौर से नहीं बनता है किन्तु इसके विपरीत चन्द्रमा जब २ कभा वृश्चिक राशि पर आवेंगे तो खाश तौर से खराब रहेगा और जन्म के समय इस चन्द्रमा का जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने का सबसे उत्तम स्थान कर्क राशि है और सबसे खराव वृश्चिक राशि है, चन्द्रमा के साथ राहू या केतू का होना वहुत निषेध है।

॥ धन लाभ का मासिक फलादेश ॥

पंचाँग के अन्दर इन मासों में सूर्य सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या धन राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भी राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आवेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी तुला राशि पर या धन राशि पर या मेष राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशी पर या मोन राशि पर या मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर जब आयेंगे तब २ इन मासों में सदैव लाभ होता रहेगा किन्तु इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशि पर या वृश्चिक राशी पर या कर्क राशि पर जब २ कभी आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर जब २ आवेंगे या शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या कन्या राशि पर जब आयेंगे तब २ उन उन महीनों में धन लाभ की कमजोरी रहेगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

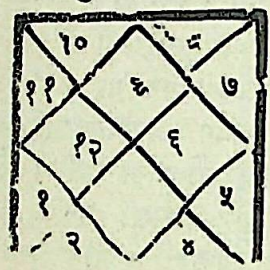
कुं० नं०११८



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में ब मासों में शनी, मकर राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या कन्या राशी पर जब २ कभी आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी सिंह राशि पर या कन्या राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशी पर या मिथुन राशी या तुला राशी जब २ आवेगे अथवा राहू जब २ कभो तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा केतू जब २ कभी तुला राशी पर या कुंम्भ र शी पर या वृषभ राशी पर या धन राशी पर जब २ आयेंगे, तब २ उन २ वर्षों में धनलाभ की प्राप्ती का योग उत्तम रहेगा किन्तु जिन २ वर्षों में, मासिक धनलाभ का योग भी साथ में उत्तम रहेगा, वही समय ज्यादा उत्तम रहेगा; और इसके विपरीत जिन २ वर्षों मे, शनी कर्क राशी पर या वृश्चिक राशी पर या मेष राशी पर या वृषभ राशी पर होगा अथवा वृहस्पति जिन २ वर्षों में वृश्चक राशी में या वृषभ राशी में या कर्क र शी में या मकर राशी में आवेंगे अथवा राहू जिन २ वर्षों में धन राशी पर या मकर राशि पर या कर्क राशी पर या मीन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा केतू जब २ कभी मिथुन राशा पर या मकर राशी पर या कर्क राशी पर या मीन राशी पर आयेगा तब २ उन वर्षों में धन की कुछ हानि व अशांती के कारण उत्पन्न होते रहेंगे, और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर, यदि उपरोक्त राशियों के अनुसार बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या सन्ध अश होगा तो उसका फल कमजोर रहता है।

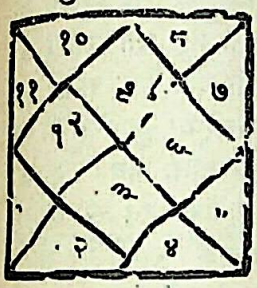
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० ११५



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में २ मासों में वृहस्पति सिंह या तुला राशि पर या कन्या राशि पर या धन राशि पर या मेष, मीन राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे और शनी. जब २ कभी तुला राशि पर या मकर राशि पर या सिंह या धन राशि पर या कन्या, कुम्भ राशि पर आयेंगे और राहू जब २ कभी मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या वृषभ राशि पर आयेंगे और केतू जब २ धन राशि पर या कुम्भ राशि पर या वृषभ राशि या तुला राशि पर आवेंगे और मंगल जब २ कभी मेष राशि पर या वृश्चिक राशि पर या कुम्भ राशि पर या तुला राशि पर आयेंगे और बुध जब २ कभी कन्या राशि पर या तुला राशि पर धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ मेष, मिथुन, सिंह राशि पर आयेंगे और सूर्य जब २ कभी सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या धन राशि पर या मोन राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ पर जब २ आयेंगे और शुक्र जब २ कभी तुला राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या मिथुन राशि पर या मेष राशि पर जब जब आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशि में या तुला राशि में या कुम्भ राशि में या वृषभ राशि में जब २ आयेंगे अर्थात् यह सभी ग्रह ऊपर लिखे अनुसार किसी भी राशि में आवेंगे तब तब ही राजयोग, कारक उन्नति दायक कार्य हुआ करेंगे किन्तु इनमें से कोई भी ग्रह यदि जन्म के समय में इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो वह प्रायः सारे जीवन भर ऊपर लिखे अनुसार, शुभ फल का दाता ही माना जाता है। किन्तु कोई भी ग्रह अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ठीक फल नहीं दे सकेगा।

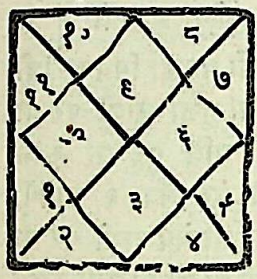
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशि पर या तुला राशी पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशी पर जब २ आवेंगे, अथवा वृहस्पति जब २ कभी मेष राशी पर या सिंह राशी पर या धन राशो पर या तुला राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा, बुध जब २ कभी मेष राशी या तुला राशी पर आयेंगे, अथवा सूर्य जब २ कभी मेष राशो पर आवेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशी पर आवेंगे तब २ विद्या व संतान पक्ष के विषय में एवं मस्तिक के विचारों के संबंध में उन्नति का सुखद कार्य पैदा करते हैं, और इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी वृषभ राशी पर या कर्क राशी पर या वृश्चिक राशो पर जब २ आयेंगे, अथवा शनी जब २ कभी मेष राशी में या कुम्भ राशी में या कर्क राशी में या तुला राशी में जब-जब आवेंगे, अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशी में या तुला राशी में आवेंगे, अथवा राहू या केतू जब कभी कोई मेष राशी पर या तुला राशी पर आवेंगे तब २ विद्या व सन्तान पक्ष में एवं मस्तिष्क व वाणी के कार्यों में परेशानी का कार्य प्रदान करते हैं, और इन्हीं सब ग्रहों में से यदि जन्म के समय में जो २ कोई भी ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर यदि बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार हो फल प्रदान करते रहते हैं। किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निबल होने के कारण अपना पूरा २ फल पूरो २ शक्ति के अनुसार नहीं दे सकते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० ११७

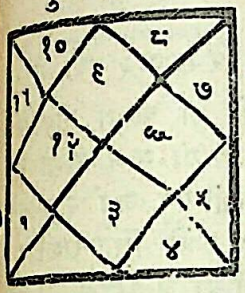


पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में चन्द्रमा कर्क राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या मीन राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या मिथुन राशी या कुम्भ राशी पर जब २ आवेंगे अथवा बृहस्पति जब २ कभी मीन राशी या कर्क राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी कर्क राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे तब २ आयु, दिनचार्या, पुरातत्व, पेट इत्यादि सम्बन्धों में सुखद कार्य करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि चन्द्रमा जब जब कभी वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी कर्क राशी या मेष राशी या मकर राशी या धन राशी पर जब आवेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी, जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे तब २ आयु, पुरातत्व, दिनचर्या, पेट इत्यादि संबंधों में परेशानी का योग उत्पन्न करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बठा होगा तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही उपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है। और यदि कोई भी ग्रह, सूर्य से अस्त होगा, या ९९ अंश से अधिक होगा, या १. अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान कर सकता है।

नोट—इस धन लग्न वाले प्राणियों को चन्द्रमा, शुक्र, मङ्गल इन तीनों ग्रहों के द्वारा, अच्छे से अच्छा फल का समय आने पर भी कुछ न कुछ परेशानी अवश्य कराते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० ११८

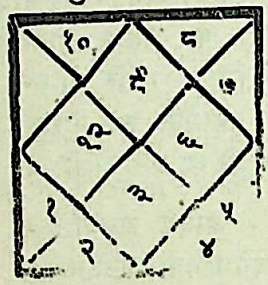


पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध मिथुन राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या तुला राशी या धन राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशि पर आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी या तुला राशी या धन राशी या कुम्भ राशी पर जब २ आवेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी मिथुन राशी या कन्या राशी या धन राशी में जब २ आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी मिथुन राशी पर आवेंगे तब २ के समयों में स्त्री व दैनिक रोजगार की वृद्धी व सुख, लाभ खूब प्राप्त होता है किन्तु इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी कर्क राशी या वृश्चिक राशी या मीन राशी या वृषभ राशी पर जब २ अथवा मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशी या मीन राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी २ मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे अथवा केतू जब कभी मिथुन राशी पर आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार में हानि व परेशानी के योग उत्पन्न होते हैं और यदि जन्म के समय में इन्हीं सब ग्रहों में से जो २ कोई भी, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः जीवन भर ही अधिकाँश रूप में ऊपर लिखे अनुसार ही फल करता रहेगा और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार अपना पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है और मकर का बुध कुछ अच्छा कुछ बुरा फल करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का फलादेश

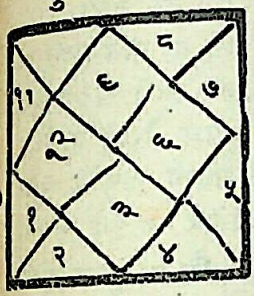
कु० नं० ११९



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में सूर्य सिंह राशी या कन्या राशी या धन राशी या कुम्भ राशी या म न राशी या मेष राशि या मिथुन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी सिंह राशी या धन राशी या मेष राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंह राशी या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी सिंह राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी सिंह राशी आवेंगे तब २ भाग्य और धर्म व ईश्वर भक्ति व दैवी शक्ति का चमत्कार प्राप्त करते हैं, और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशि या कर्क राशी या तुला राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशी या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू कोई जब २ कभी सिंह राशी पर आयेंगे, जब २ भाग्य, धर्म, ईश्वर भक्ति, दैवी शक्ति, बरक्कत, आदि विषयों में कमी व अशान्ती के कारण पैदा होते हैं, और यदि सूर्य जब-जब कभी मकर राशी पर आवेंगे तो सामान्य फल प्रदान करते हैं और यदि जन्म के समय इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जो २ कोई भी ग्रह यदि जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो वह ग्रह प्राय, सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान क ते रहेंगे, और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेता है और मकर का मंगल भी कुछ खिलाफ कार्य करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

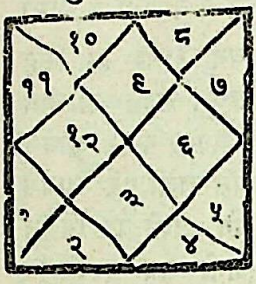
कु० नं० १२०



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति जब २ कभी धन राशी या सिंह राशा या मेष राशी या मिथुन राशी या मीन राशो या कन्या राशी पर जब २ कभी आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी धन राशी पर आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी धन राशी या मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ मिथुन या धन राशी पर आपेंगे अथथा केतू जब २ कभी धन राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे तब २ देह व ख्याति, सुन्दरता आत्मबल, इत्यादि के विषय में उन्नति प्रदान करते है, किन्तु इसके विपरीत यदि वृहस्पति जब २ कभी मकर राशी या वृषभ राशी या वृश्चिक राशी या कर्क राशी पर जब २ आवेंगे अथवा मङ्गल जब२ कभी धन राशी या वृषभ राशो या मिथुन राशा पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी धन राशो पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी २ धन राशी पर आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी धन राशी पर आयेंगे तब २ देह, ख्याति, सुन्दरता, आत्मबल आदि के विषय में अशान्ति का योग पैदा करते हैं, और यदि जन्म के समय में इन्ही उपरोक्त ग्रहों में से, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर हो उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते हैं और यदि कोई भो ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अफिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल, लिखे अनुसार नहीं दे सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

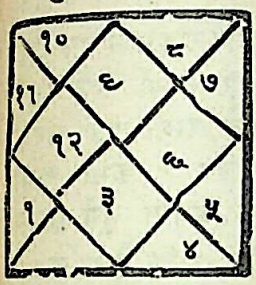
कुं० नं० १२१



पंचांग के अन्दर जिन वर्षों व मासों में शुक्र जब २ कभी वृषभ राशी या तुला राशी या धन राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या कभी मेष राशी या सिंह राशी पर आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी वृषभ राशी या सिंह राशी या मान राशी पर आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कन्या राशी पर आवेंगे अथवा मंगल जब २ कभी कुम्भ राशि या वृषभ राशी या तुला राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब २ कभी वृषभ राशी पर आयेंगे, तब २ शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझट, रोग आदि विषयों के सम्बन्धों में शान्ती, एवं विजय का योग पैदा करते हैं किन्तु इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी कर्क राशी या कन्या राशी या वृश्चिक राशी पर जब २ आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशी पर आवेंगे तब २ शत्रु पक्ष व रोगादिक एवं झगड़े-झंझट, आदि के विषय में कुछ अशांती पैदा करते हैं और ऊपर जो वृषभ के मङ्गल को श्रेष्ठ लिखा है वह कुछ परेशानी के साथ शत्रु पक्षे में विजय करता है, और जन्म समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर यदि जो कोई ग्रह बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकाँश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार फल प्रदान करते है, और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण पूरा फल नहीं करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

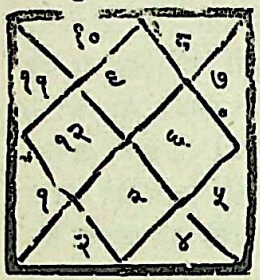
कु० नं० १२२



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति जब २ कभी मीन राशी या कन्या राशी या धन राशी या सिंह या मेष राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मीन राशी कन्या राशी पर आयंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मोन राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे तब २ भूमि मकान, सुख, माता आदि के विषयों में उन्नति प्रदान करते हैं किन्तु इसके बिपरीत यदि वृहस्पति जब २ कभी वृषभ, मकर या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मङ्गल जब२ कभी मीन राशी या धन राशी या सिंह राशी या कन्या राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मोन राशी या कन्या राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू जब २ कभी मोन राशी या कन्या राशी पर आवेंगे तब २ माता भूमि, मकानादि, सुख शांती के सम्बन्धों में हानिकारक योग पैदा करते हैं, और वृहस्पति जब २ कभी कर्क राशी पर आवेंगे, तो उपरोक्त विषयों में कुछ अच्छा कुछ बुरा फल पैदा करते हैं, जन्म के समय में यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार इन्हीं ग्रहों में से जो २ कोई भी, जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्राप्त होता रहेगा, और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार अपना पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

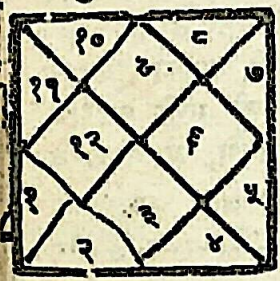
कु० नं० १२३



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध कन्या राशि या तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशो या मेष राशी या मिथुन राशी या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा वृहस्पति जब २ कभी कन्या या मीन राशी पर आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कन्या राशी या मीन राशि पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी कन्या राशी या धन राशी पर जब २ आयेंगे तब २ पिता स्थान में व राज समाज, मान, प्रतिष्ठा, कारबार आदि के सम्बन्धों में उन्नति एवं लाभ का शक्ती प्रदान करते हैं किन्तु इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशी या कर्क राशी या मीन राशी में आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब जब कभी कन्या राशी या मीन राशी में आवेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी कन्या राशी या मीन राशी में आयेंगे अथवा किसी अंशो में मङ्गल भी जब २ कभी कन्या राशी या मिथुन राशी या मीन राशी या कुम्भ राशी में जब २ आयेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब २ कभी कन्या राशी या मीन राशी में आयेंगे तब २ पिता, राज-समाज, मान, प्रतिष्ठा, कारबार आदि के विषयों में कुछ हानिकारक परेशानियाँ का सा योग पैदा करते हैं,. और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जो ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बठा होगा तो वह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है और यदि कोई भी ग्रह, सूर्य से अस्त होगा, या २६ अंश से अधिक होगा, या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० १२४



(सू०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को-भाग्य, धर्म, यश, ईश्वर, भक्ती, दैवीबल, तेज इत्यादि शक्तियों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं, इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव महान् गरम है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करने में ईश्वरीय भक्ति एवं भाग्य बल की शक्ति से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ, यह हैं ५-६-९-११-१२-१३-१०और नेष्ट राशियाँ, यह

श
१
२ हैं ८-७-४-२ है।

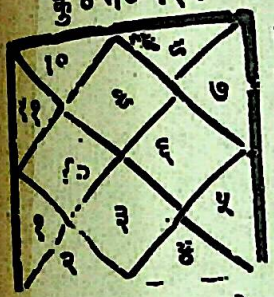
गु (बु०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को-बड़ा कारबार, राज समाज, सम्मान, प्रतिष्ठा, दैनिक रोजगार, स्त्री, भोग, वैभव, इत्यादि विषयों वा स्वशक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं, इनका रंग हरा है, गुइनका स्वभाव कोमल है इनकी मणी पन्ना है,यह उन्नति प्रदान करने में विवेक शक्ती सहित नित्य प्रति के कर्मयोग से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह ९-१०-११-१-३-५-६-७ है और नेष्ट राशियां यह ८-१२-२-४ हैं

(शु०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को धन लाभ,अनेक वस्तु लाभ शत्रु, रोग, झगड़े, झंझट, ननसाल पक्ष इत्यादि विषयों की शक्ति के प्रधानी अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र है, इनका रंग सफेद है इनका प्रभावभाव मध्यम है इनकी मणी हीरा है यह उन्नति प्रदान करने में बड़ी कोचीदा तरतकीबोंसे व परिश्रम से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अंनन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं ७-९-१०-११-१२-१-३-५ और साष्ट राशियां ८-४-६ और सामान्य राशि २ हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 न लग्न वालों को, रेस आदि सभी व्यापार कार्यों के लिए लाभकारी रंग मणियां तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं० १२५



(वृ०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को देह व सुन्दरता, ख्याति, आत्मबल, सुख शान्ती माता, मकान जायदाद इत्यादि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बृहस्पति हैं इनका रंग पीला है, इनका स्वभाव बड़प्पन युक्त दयालु है इनकी मणी पुखराज है, यह उन्नति प्रदान करने में, आत्मबल व शांतीबल, हृदयबल, देहबल से कार्य करते हैं। इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ९–११–१२–१—३–५–६–७ और नेष्ट राशियां यह १०–२–५–८ हैं।

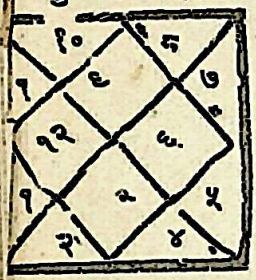
(श०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को धन संग्रह की शक्ति कुटुम्ब भाई-बहन, बाहुबल की शक्ति इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी है, इनका रंग श्याम है इनकी मणी नीलम है, इनका स्वभाव कठोर है यह उन्नति प्रदान करने में बाहुबल की शक्ति से कार्य करते हैं इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह ९–१०–११–१२–६–७–३–५ हैं और सामान्य नेष्ठ राशियां यह १–४–२–८ हैं इनकी विशेषता यह है कि बुरे सेबुरे समय में भी बाहुबल शक्ति के द्वारा कुछ न कुछ धन प्राप्त करा ही देते है।

(चं०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को–आयु, मृत्यु, पुरातत्व, उदर का सम्बन्ध, दिनचर्या का ढंग इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं इनका रंग उज्वल है इनका स्वभाव शीतल अग्नि स्वरूप है इनकी मणी मोती है, यह उन्नति प्रदान करते हैं मनोयोग की पुरातत्व सम्बन्धित कर्मयोग पद्धति से कार्य करते हैं और इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह है ७–८–९ १०,११,१२,१,२,३,५,६ और नेष्ट राशि यह ८ वृश्चिक है और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी मनोबल की कर्म शक्ति से जीवन निर्वाह का साधन कुछ न कुछ कर ही लेते हैं।

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

लाभकारी रंग मणियां तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फल

कु० नं० १२६



(मं०) धन लग्न में जन्म लेने वालों को खर्च बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, विद्या बुद्धी संतान, वाणी, इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकार फलदाता ग्रह मंगल हैं। इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव गरम और चंचल है, मूंगा है। यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धी के के द्वारा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कार्य करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–१ मेष ५ मेष ६ कन्या ७ तुला ८ वृश्चिक ९ धन १० मकर ११ कुम्भ १२ मीन और नेष्ठ राशियां यह हैं ४ कर्क, २ वृषभ और सामान्य राशियाँ यह ३ मिथुन है।

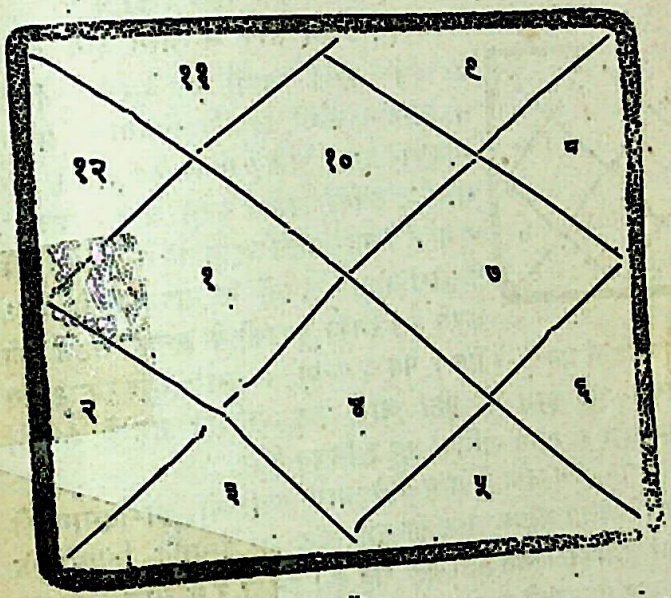
(रा०) धन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को–दिमाग की गुप्त चालें, चिन्ता अधिक लाभ की सूझ झूंठ कष्ट, इत्यादि विषयों के के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू हैं। इनका रंग काल है, इनका स्वभाव कटु है, इनकी मणी गोमेध है। यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त तरकीबों से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–३ मिथुन ७ तुला ११ कुम्भ २ वृषभ और नेष्ठ राशियाँ यह है–९ धन १० मकर १२ मीन ४ कर्क राशियाँ यह ५ सिंह १ मेष कन्या ८ वृश्चिक हैं।

(के०) धन लग्न में जन्म लेने वालों को–गुप्त धैर्य, गुप्त चिन्ता गुप्त वीरत्व, कष्ट अधिक लाभ के लिये कठिन प्रयत्न इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकार फलदाता ग्रह केतू इनका रंग काला है इनका स्वभाव अति कटु है, इनका मणीलहसनियाँ है। यह उन्नति प्रदान करने में कष्ट साध्य कर्मयोग द्वारा कार्य करते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ हैं–७ तुला ९ धन ११ कुम्भ २ वृषभ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं–१० मकर १२ मीन ३ मिथुन ४ कर्क और सामान्य राशियाँ यह ५ सिंह ६ कन्या ८ वृश्चिक १ मेष है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मकर लग्न फलादेश प्रारम्भ

*

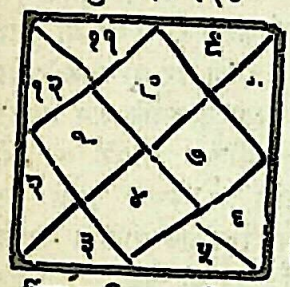


*

इस मकर लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः मं० शु० श०बु० चं० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० १२७ से लेकर कुण्डली नं० १४० तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० १२७



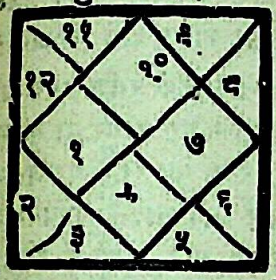
मकर लग्न वालों को पचाग के अन्दर जिन जिन दिनों में चन्द्रमा, कर्क राशि या कन्या राशी या तुला राशि या मकर राशि या कुम्भ राशि या मीन राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे, तब २ रोजगार की लाइन फायदेमंद रहेगी एवं वह दिन लाभ और कुशी के रहेंगे, किन्तु इसके विपरीत जिन २ दिनों में चन्द्रमा सिंह राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मिथुन राशि पर आयेंगे उन २ दिनों में लाभ की कमजोरी के मनको अशांती रहेगी, और जब २ चन्द्रमा वृषभ राशि पर आवेंगे तो तो मन को प्रसन्नता व लाभ की कमी पैदा करेंगे, और यदि जन्म के समय में इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि चन्द्रमा जन्म कुण्डली में भी कहीं बैठा होगा तो वह प्राय सदैव ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहेगा।

* धन लाभ का मासिक फलादेश *

मकर लग्न वालों को पंचाँग के अन्दर जिन २ मासों में शुक्र तुला राशि या वृश्चिक राशि या मकर राशि या कुम्भ राशि या मीन राशि या मेष राशि या वृषभ राशि या कर्क राशि पर जब २ आयेंगे अथवा बुध कन्या राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या मकर राशि या कुम्भ राशि या मेष राशि या वृषभ राशि या कर्क राशि पर जब २ आयेंगे अथवा मंगल तुला राशि या वृश्चिक राशि या मकर राशि या कुम्भ राशि या मीन राशि या मेष राशि, या वृषभ राशि या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे तब २ उन महीनों में धन लाभ की उन्नति व आनन्द प्राप्त होगा और इसके विपरीत यदि जिन २ मासों में शुक्र धन राशि या मिथुन राशि या सिंह राशि या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे अथवा बुध जिन २ महीनों में धन राशि या मीन राशि या मिथुन राशि या सिंह राशि पर आयेंगे या मंगल जिन २ महीनों में धन राशि या मिथुन राशि या कर्क राशि या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे तब २ इन मासों में धन लाभ की कमी व अशांती के कारण पैदा होंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

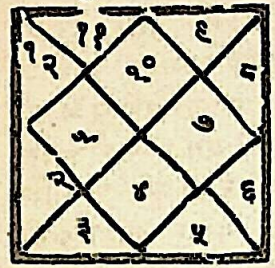
कु० नं० १२८



पंचांग के अन्दर जिस २ वर्षों में शनी मकर राशि पर या कुम्भ राशी पर या मीनराशि पर या वृषभ राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या कर्क राशि पर जब २ आयेंगे, अथवा वृहस्पति जब २कभी वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर या कर्क राशि पर या मेष राशि या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे, अथवा राहू जब २ कभी मिथुन राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर या कन्या राशि पर आयेंगे अथवा केतू जब २ कभी धन राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे, तब २ इन वर्षों में धन की उन्नति होगी, किन्तु इन उन्नति वाले वर्षों में जब २ कभी धन लाभ के मासिक ग्रह भी अनुकूल होंगे, तब २ अधिक लाभ योग होता रहेगा और इसके विपरीत जिन २ वर्षों में शनी मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या मेष राशि पर या धन राशि पर जब २ कभी आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मकर राशि में या कुम्भ राशि में या सिंह राशि में या वृषभ राशि में या तुला राशि में जिन २ वर्षों में आवेंगे अथवा राहू जिन २ वर्षों में धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर या कर्क राशि पर या सिंह राशि पर जब२ राशि पर या मेष राशी पर या कर्क राशि पर या सिंह पर जब २ आयेंगे, अथवा जिन २ वर्षों में केतू मकर राशि पर कुम्भ राशि पर या कुम्भ मिथुन राशि पर जब आयेंगे तब २ इन वर्षों में धन लाभ और सुख शांती की कमी रहेगी, किन्तु जब २ कभी धन लाभ के मासिक ग्रह भी विपरीत अवस्थामें इन खोटे वर्षोंमें आयें तब अनेक तब २यह वर्ष अधिक अशांतप्रद कष्टदायक रहेंगे और इन ऊपर लिखे हुए ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर भी यदि इन्हीं ऊपरवाली राशियों के अनुसार कोई ग्रह बैठा होगा तो वह ग्रहप्रायः अधिकांश सारे जीवन भर ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार फल देता रहेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

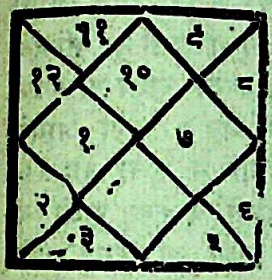
कुं० नं० १२९



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनि, मकर राशी व तुला राशी या वृश्चिक राशी या कर्क राशी या कन्या राशो या वृषभ राशी या कुम्भ राशी में जब २ कभी आयेंगे और शुक्र जिन २ महीनों में तुला राशी व मकर राशो व मेष राशी व कर्क राशी व वृश्चिक राशी व मीन राशी या कुम्भ राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे और मङ्गल जब २ कभी मकर राशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी या मेष राशी या मीन राशी या कन्या राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे और वृहस्पति जब २ कभी मीन राशी पर या वृश्चिक राशी या कर्क राशी या मेष राशी या धन राशी पर जब २ आयेंगे और बुध जब २ कभी कन्या राशी या तुल राशी या वृश्चिक राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी या वृषभ राशो या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे और सूर्य जिन २ महोनों में वृश्चिक राशी या मीन राशी या मेष राशी या मिथुन राशी या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या कन्या राशी या तुला राशी या मकर राशी या मीन राशी या मेष राशी या वृषभ राशी जब २ आयेंगे और राहू जिन २ वर्षों में वृश्चिक राशी या मीन राशी या मिथुन राशी या वृषभ राशो या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे और केतू जब २ कभी वृश्चिक राशी या धन राशी या मीन राशी या कन्या राशो या वृषभ राशी पर जबर आयेंगे, अर्थात् जिन २ वर्षों व मासों में यह सभो ग्रह ऊपर लिखे अनुसार एक ही समय में जब २ रहा करेंगे, तब २ राजयोग बुद्धी कारक प्रभावशाली समय प्राप्त होगा और इनका नव ग्रहों में से जन्म के समय, जो २ कोई ग्रह यदि जन्म कुण्डली के अन्दर ऊपर लिखित राशियों के अनुसार बैठे होंगे, तो तह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही शुभ रहेंगे। और जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा २ फल नही दे सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

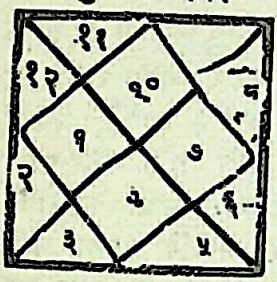
कु० नं० १३०



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शुक्र वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी वृषभ राशि पर या मीन राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी वृषभ राशि पर या तुला राशि वृश्चिक राशि पर ता कुम्भ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा बुध जब जब कभी वृषभ राशि पर या वृश्चिक राशि पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशि पर या वृश्चिक राशि पर आयेंगे, अथवा वृहस्पति जब २ कभी कन्या राशि पर या वृश्चिक पर आयेंगे, तब तब उन वर्षों व मासों में विद्या एवं सन्तान पक्ष की उन्नति व सुख प्राप्त होता है और वाणी व विवेक की वृद्धि होती है। किन्तु इसके विपरीत यदि शुक्र, जब २ कभी मिथुन राशी में या सिंह राशि में या कन्या राशि में या धन राशि या कुम्भ राशि में जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी वृषभ राशि या वृश्चिक राशि मे आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशि में आयेंगे, अथवा राहू या केतू कोई भी, जब २ वृषभ राशि में व वृश्चिक राशि में आयेंगे तब २ विद्या और सन्तान पक्ष को कुछ हानि व अशान्ती पदा करते हैं और वाणी व विवेक को कमजोर शक्ति देते है। और जन्म के समय यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश सारे जीवन भर ही सन्तान और विद्या के पक्ष में उपरोक्त फल देते रहेंगे और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी पूरी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

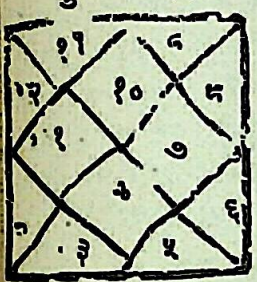
कु० नं० १३१



पंचाँग के अन्दर जिन वर्षों में व मासों में सूर्य सिंह राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर कुम्भ राशी पर या मीन राशी का कर्क राशी या वृषभ या मकर राशी पर या मेष राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी सिंह राशी पर या मकर राशी पर या वृषभ राशी पर या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आयें अथवा बुध जब कभी सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आवेंगे तब २ आयु एवं पुरातत्व सम्बन्ध व पेट के सम्बन्धों में अच्छाई का शुभ योग पैदा करते हैं, और सूर्य का मिथुन राशी पर आना भी किसी तरीके से इस प्रकर्ण में शुभ फल ही देता है और शनी का सिंह राशी पर आना भी इस प्रकर्ण में कुछ शुभ ही रहता है, और इसके विपरीत सूर्य जब २ कभी धन राशी पर आते हैं, अथवा वृहस्पति जब २ कभी सिंह राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू जब २ कभी कोई सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आवेंगे तब २ इस प्रकर्ण में कुछ अशाँती या कुछ हानिकारक योग पैदा करते हैं, और जन्म के समय में यदि इन्हीं राशियों के अनुसार इन्हीं ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह प्रायः अधिकाँश रूप में ऊपर लिखे अनुसार ही जीवन में फल प्रदान करते रहेंगे, और जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होंगे या शून्य अंश होंगे तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

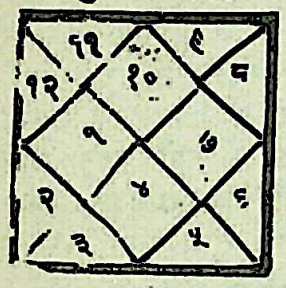
कु० नं० १३२



पंचांग के अन्दर जिन वर्षों में व मासों में वृहस्पति कर्क राशि पर या मीन राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ आयेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी कर्क राशि पर या मकर राशि पर आयेंगे, अथवा बुध जब २ कभी कर्कराशि पर या मकर राशि पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी कर्क राशि पर या वृषभ राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशि में या कन्या राशि में या वृषभ राशि में या मकर राशि में या मीन राशि में या मेष राशि या तुला राशि में जब २ आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में उन्नति, लाभ और सुख प्रदान करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशि में या वृश्चिक राशि में या धन राशि में या कुम्भी राशि में या मिथुन राशि में जब जब आयेंगे अथवा मंगल जब-जब कभी कर्क राशि में मकर राशि में या धन राशि में या मेष राशि में आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कर्क राशि या मकर राशि में आयेंगे, अथवा राहू या केतू कोई भी जब-जब कभी राशी या मकर राशि में आयेंगे तब तब स्त्री व दैनिक रोजगार में अशाति व हानि के कारण उत्पन्न होते हैं, और वृहस्पति का ऊपर लिखे अनुसार उत्तम फल भी कुछ कमी लिये हुए होता है, और जन्म के समय में यदि इन ऊपर लिखे अनुसार राशियों सहित जो जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के बैठे होंगे तो वह प्रायः अधिकांश रूप में हमेशा ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं, और जो जो कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होंग या २९ अंश से अधिक या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

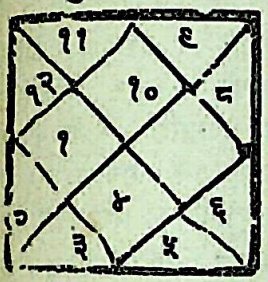
कुं० नं० १३३



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध कन्या राशि पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेषराशि पर या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी कन्या राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब कभी कन्या राशि पर या कर्क राशि पर या मीन राशि पर या धन राशि पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर जब २ आवेंगे अथवा किसी अंशों में वृहस्पति भी कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर या मीन राशि पर जब आयेंगे तब २ भाग्य, धर्म आदि दैवी शक्ति के विषय में उन्नति प्रदान करते हैं और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी सिंह राशि पर या धन राशि पर या मिथुन राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे अथवा राहू या केतू जब कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे तब २ भाग्य धर्म भक्ति आदि के विषय में कमजोरी पैदा करते हैं, और यदि जन्म के समय में जो २ ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ऊपर लिये अनुसार, फल का दाता माना जाता है, और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

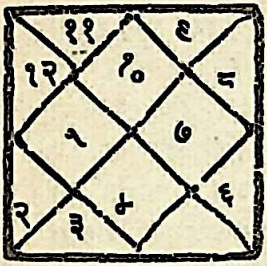
कु० नं० १३४



पंचांग के अन्दर जिन वर्षों में व मासों में शनी मकर राशी पर या वृश्चिक राशी पर या तुला राशी पर या मीन राशी पर या कर्क राशी पर या कन्या राशी पर जब २ कभी आवेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मकर राशी या कर्क राशी पर आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी मकर राशी पर या तुला राशी पर या मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी मकर राशी पर या कर्क राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मकर राशी पर या कर्क राशी पर आयेंगे, तब २ देह की सुन्दरता, आत्मबल ख्याति आदि के सम्बन्ध में उन्नति प्राप्त करते हैं, और इसके विपरीत यदि शनी जब २ कभी सिंह राशी पर या धन राशी पर या मेष राशी या मिथन राशी पर आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मकर राशी पर या कर्क राशी पर आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मकर राशी पर या वृषभ राशी पर या कन्या राशी पर या कर्क राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ मकर राशी पर या कर्क राशी पर आयेंगे तब तब देह पक्ष को सुन्दरता, शांती, आत्मबल, ख्याति, आदि के विषय में हानि या कुछ कमी कष्ट का योग पैदा करते हैं, और जन्म के समय में यदि इस ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती अनुसार पूरा २ फल लिखे अनुसार नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

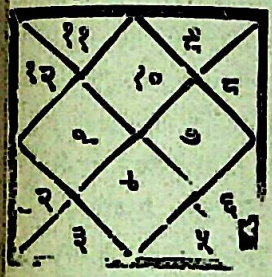
कु० नं० १३५



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में बुध मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर या मेष राशी पर या कर्क राशी पर या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशी पर या मीन राशी पर या वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी कन्या राशी पर आयेंगे, अथवा सूर्य जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयेंगे, अथवा राहू जब २ कभी मिथुन राशी पर आयेंगे, तब २ शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त करके, झगड़े झंझटों से निवृती पैदा करते हैं और शनी जब २ मिथुन राशी पर आते हैं, तब २ कुछ परेशानियों के अन्तर-गत मुसीबतों पर व शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं, और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी सिंह राशी पर या धन राशी पर या मीन राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी धन राशी पर आयेंगे अथवा केतू जब २ कभी मिथुन राशी पर आयेंगे, तब २ शत्रु पक्ष व झगड़े झंझटों, के संबंध में कुछ परेशानी करते हैं, और जन्म समय में यदि इन ऊपर लिखित राशियों के अनुसार ही जो २ कोई ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सदैव ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार जीवन में फल प्रदान करते रहेंगे, और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा प्रदान नहीं कर सकता है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

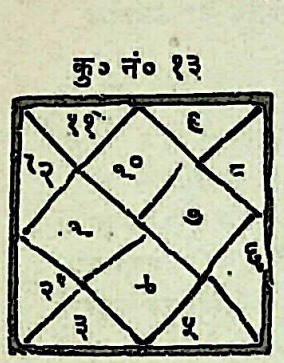
कुं० नं० १३६



पंचांग में अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल मेष राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या मीन राशि पर जब २ कभी आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मेष राशि या तुला राशि पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आयेंगे सूर्य जब २ कभी मेषराशि पर आवेंगे सूर्य जब २ कभी मेष राशि पर आवेंगे तब २ मकानदि, माता एवं सुख प्राप्ति के सम्बन्धों में उन्नति सफलता प्राप्त होती रहती है यदि इसके विपरीत जब २ कभी मङ्गल मिथुन राशी या कर्क राशी पर या सिंह राशि पर या धन राशि पर या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी मेष राशी पर या कर्क राशी पर तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मेष राशी पर या सिंह राशी पर या धन राशी पर या तुला राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी मेष राशी पर या तुला राशी पर आयेंगे तब २ सुख शांती माता, मातृ-भूमि, मकानादि के सम्बन्ध में कमी या कष्ट का योग पैदा करते हैं, और जन्म के समय में यदि इन्हीं ग्रहों में से कोई ग्रह यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत जन्म कुण्डली के अन्दर जो २ कोई ग्रह बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे, और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० १३

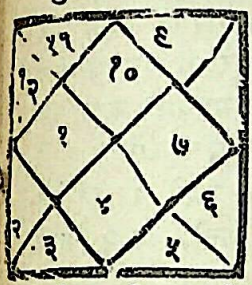


पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शुक्र, तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर या मकर राशी पर या मेष राशी पर या मीन राशी पर या कर्क राशी पर या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा मङ्गल जब २ कभी तुला राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे, अथवा शनी, जब २ कभी तुला राशी पर या मकर राशी पर आयेंगे, अथवा बुध जब कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे, अथवा चन्द्रमा जब २ कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे, तब २ पिता, राजसमाज, मान प्रतिष्ठा कारबार, आदि के सम्बन्धों में उन्नति प्रदान करते हैं, और इसके विपरीत जब २ कभी शुक्र धन राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा सूर्य जब २ कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे अथवा बृहस्पति जब २ कभी तुला राशी पर या मिथुन राशी पर या कुम्भ राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब २ कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे, तब २ पिता, राज समाज, कारबार मान, प्रतिष्ठा, आदि सम्बन्धों में कमी या कष्ट का योग पैदा करते हैं। और जन्म के समय में यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से, जो २ कोई भी उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं, और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 मकर लग्न वालों को-रेस आदि सभी व्यापार कर्म के लिये लाभकारी रंग, मणियाँ तथा ग्रहों के गुणादोषादि का फलादेश

कुं० नं० १३८



(बु) मकर लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य, धर्म, भक्ति दैवी शक्ति, शत्रु रोग, झगड़े झंझट, पाप, ननसाल इत्यादि विषयों के फलदाता ग्रह बुध है इनका रंग हरा है, इनका स्वभाव कोमल और कटु है, इनकी मणी पन्ना है यह उन्नति प्रदान करने में छिपी हुई चतुराई एवं प्रकट सज्जनता की दैवी शक्ती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ३-४-१-६-७-८-१०-११ और नेष्ट राशियां ३-५-९-१२ हैं।

(शु०) मकर लग्न वाले व्यक्तियों को-पिता, राज समाज, मान प्रतिष्ठा, कारवार, विद्या, संतान वांणी कला इत्यादि योगों को शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र है, इनका रंग सफेद है इनका स्वभाव नरम है, इनकी मणी हीरा है यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धि बल की कर्म शक्ती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं ७-८-१०-११-१-२-४ और नेष्ट राशियाँ ९-३-५-६ हैं।

(मं०, मकर लग्न में जन्म लेने वाले-को-धन लाभ आवश्यक पदार्थों की प्राप्ती, माता, भूमि, सुख, मकान, जायदाद, खानपान इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मंगल है। इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव गरम और गम्भीर है, इनकी मणी मूंगा है। यह उन्नति प्रदान करने में शाँती और धैर्य से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह ८-१०-१२-१-२-६-७ हैं और नेष्ट राशियाँ यह है ९—३—४—५। इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी कुछ न कुछ धन लाभ के साधन प्राप्त करते ही हैं, मंगल की कुम्भराशी सामान्य ठीक है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० १३९



(वृ०) मकर लग्न वाले व्यक्तियों को खर्च बाहरी दूसरे स्थानों का सम्बन्ध भाई-बहन पराक्रम बाहुबल शक्ती के कार्य इत्यादि विषयों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह वृहस्पति हैं इनका रंग पीला है, इनका स्वभाव बड़प्पन युक्त दयालु है. इनकी मणी पुखराज है, यह उन्नति प्रदान करने में बाहुबल और बाहरी स्थान की संपर्क शक्ती से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ९-१०-४-६-८ और नेष्ट राशियाँ यह हैं १०-११-३-५-७ और सामान्य राशि यह १—२ हैं।

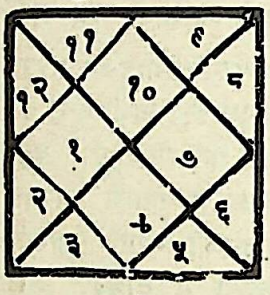
(श०)मकर लग्न वाले व्यक्तियों को धन संग्रह की शक्ति कौटुम्ब देहबल, आत्मबल की शक्ति इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी है, इनका रंग श्याम है इनकी मणी नीलम है, इनका स्वभाव कठोर है यह उन्नति प्रदान करने में देहबल और धनबल की शक्ती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह १०-११-१२-२-४-६-७-८ हैं नेष्ट राशियाँ यह ९,३,५,१ हैं।

(चं०) मकर लग्न वाले व्यक्तियों को—स्त्री, ससुराल, दैनिक रोजगार, भोग इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं इनका रंग उज्वल है इनका स्वभाव शीतल स्वरूप है इनकी मणी मोती है, यह उन्नति प्रदान करने में मनोयोग की दैनिक कर्मशक्ती के द्वारा कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह है १,२,४,६,७,१०,१२ और नेष्ट राशियाँ यह हैं ३,५,८,९ और सामान्य राशि यह ११ हैं। और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी नित्य प्रति की कर्म शक्ति से गृहस्थ्य निर्वाह का साधन कुछ न कुछ कर ही लेते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१६२] मकर लग्न वालों को—रेस आदि सभी व्यापार कार्यों के लिये लाभकारी रंग मणियां तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कु० नं० १४०



(सू०) कमर लग्न वाले व्यक्तियों को आयु मृत्यु, पुरातत्व की शक्ती, पेट का सम्बन्ध, जीवन की दिनचर्या, प्रभाव इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं इनका रङ्ग लाल है, इनका स्वभाव महान् गरम है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करने में पुरातत्व शक्ती के सम्बन्ध से कार्य करते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं—५सिंह-६कन्या-८वृश्चिक १२-मीन १-मेष ४-कर्क और नेष्ट राशियां यह हैं-७ तुला-९ धन २मिथुन और सामान्य राशियां यह हैं २ वृषभ-१० मकर ११ कुम्भ ।

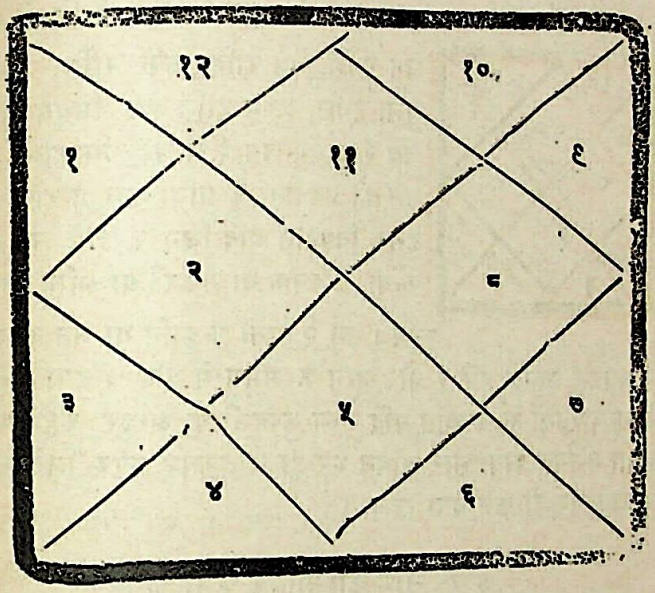
(रा०) मकर लग्न में जन्म लेने वालों को-दिमाग की गुप्त चाल चिन्ता अधिक लाभ की सूझ झूंठ, कष्ट इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू है। इनका रंग काला है, इनका स्वभाव कटु है, इनकी मणि गोमेध है। यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त कर्म शक्ती से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने को श्रेष्ठ राशियां यह हैं ८ वृश्चिक-१२ मीन-३ मिथुन ६—कन्या—२ वृषभ और नेष्ट राशियां यह हैं-९ धन-१० मकर-११ कुम्भ-१ मेष-४ कर्क—५ सिंह-७ तुला।

(के०) मकर लग्न में जन्म लेने वालों को—गुप्त धैर्य चिन्ता गुप्त बीरत्व, कष्ठ अधिक लाभ के लिये कठिन प्रयत्न इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं। इनका रंग श्याम है, इनका स्वभाव अति कटु है, इनकी मणी लहसनियां है। यह उन्नति प्रदान करने में कष्ट साध्य कर्मयोग के द्वारा कार्य करते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ८, वृश्चिक, १२ मीन, ९ धन, ६ कन्या २ वृषभ और नेष्ट राशियाँ यह हैं १० मकर ११ कुम्भ १ मेष ४ कर्क ५ सिंह ७ तुला और समान्य राशि यह ३ मिथुन है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुम्भ लग्न फलादेश प्रारम्भ

*

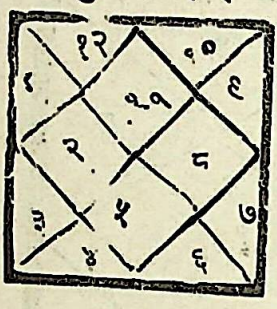


*

इस कुम्भ लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः बु० शु० मं० सू० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० १४१ से लेकर कुण्डली नं० १५४ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं०नं० १४१



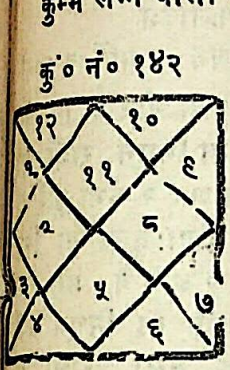
पंचांग के अन्दर जिन २ दिनों में चन्द्रमा धन राशि, मेष राशि, कर्क राशि, सिंहराशि, तुला राशि, कुम्भ राशि, या मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे तब २ लाभ प्राप्ति का ढंग और मन की प्रसन्नता के प्रायः कारण रहेंगे। किन्तु इसके विपरीत यदि जिन २ दिनों में चन्द्रमा कन्या, वृश्चिक या मकर या मीन राशि पर रहेंगे। उन २ दिनों में हानि या मन की अशांती के कारण उत्पन्न होंगे। और जन्म के समय में यदि चन्द्रमा इन्हीं उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत यदि जन्म कुण्डली के अन्दर कहीं भी बैठा होगा तो वह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकतर ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देता रहेगा।

* धन लाभ का मासिक फलादेश *

पंचाँग के अन्दर जिन २ महोंनों में सूर्य सिंह राशि, वृश्चिक राशि धन राशि, कुम्भ राशि, मीन राशि, मेष राशि, वृषभ राशि या मिथुन राशि पर आयेंगे अथवा जब २ शुक्र तुला राशि, वृश्चिक राशि, कुम्भ राशि, मीन राशि मेष राशि धन राशि वृषभ राशि या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी वृश्चिक राशि धन राशि कुम्भ राशि, मीन राशि, मेष राशि, वृषभ राशि, मिथुन राशि सिंह या तुला राशि पर जब २ आयेंगे तब २ उन महीनों में लाभ और शांती रहेगी। किन्तु इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कन्या, तुला, मकर राशि में आयेंगे अथवा मंगल जब २ कर्क या कन्या राशि में आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी मकर या मीन राशि या कर्क राशि में आयेंगे तब तब उन महीनों में अशांती के कारण उत्पन्न होंगे किन्तु जब २ कोई ग्रह अस्त होगा या सून्य अंश होगा तो वह पूरा फल नहीं देता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

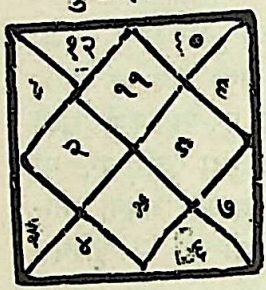
कुं० नं० १४२



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में वृहस्पति धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर या सिंह राशी पर या तुला राशी पर या बृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा शनी-देव जब २ कभी तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे, अथवा राहू जब २ कभी मेष राशी पर या मिथुन पर या तुला या कर्क राशी पर या मकर राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा केतू जब २ कभी धन राशी पर या मेष राशी पर या कर्क राशी पर या तुला राशी पर या मकर राशी पर जब २ आयेंगे तथा मासिक लाभ के ग्रह भी जब २ अनुकूल हों, तब २ इन वर्षों में खुब लाभ और धन की वृद्धि होती है। और इसके विपरीत जिन २ वर्षों में वृहस्पति मकर राशी, में या कन्या राशी में आयेंगे या शनि देव जिन २ वर्षों में मकर राशी में या मेष राशी में या, कर्क राशी में या कन्या राशी में जब २ आयेंगे या राहू जब २ कभी मीन राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर या वृषभ राशी पर या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे अथवा केतू जिन २ वर्षों में मीन राशी पर या वृषभ राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे. और मासिक लाभ के ग्रह भी जब २ प्रतिकूल होते है तब २ उन वर्षों में हानि तथा अशान्ती के कारण उत्पन्न होते हैं और यही सब ग्रहों में से जो कोई भी ग्रह इन्हीं २ राशियों के अनुसार यदि कोई जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं किन्तु जो कोई अस्त होगा या सून्य अंश होगा उसका फल पूरा नहीं होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

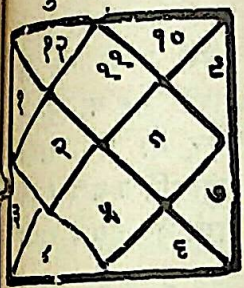
कु० ल०



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में वृहस्पति वृश्चिक राशी या मीन या सिंह या मेष राशी या धन राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी वृश्चिक या धन या कुम्भ या वृशभ या तुला या सिंह या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे, और राहू जब २ कभी मेष राशी या मिथुन राशी या कर्क राशी या तुला राशी या मकर राशी पर जब २ आयेंगे और केतू जब २ कभी धन राशी या मेष राशी या कर्क राशी या तुला राशी पर आयेंगे और मंगल जब २ कभी वृश्चिक राशि या धन राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या मेष या सिंह या तुला या मिथुन या वृषभ राशी में जब २ कभी आयेंगे और शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशी या धन राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या मिथुन राशी या सिंह राशी या तुला राशी में जब २ आयेंगे, और सूर्य जब २ कभी सिंह राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या मिथुन राशी में जब २ आयेंगे, और बुद्ध जब २ कभी मिथुन राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या तुला राशी या धन राशी या कुंभ राशी या मेष राशि या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे, या चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या सिंह या तुला राशी या धन राशि या कुंभ राशी या मेष राशी या वृषभ राशी पर जब जब आयेंग अर्थात् यह सभी नव ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार जब जब जौन जौन सी माल में एक ही समय में, इन उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत हो आया करेंग, तब जब ही इन सालो में इस कुंभ लग्न वालों को राजयोग प्राप्त होता रहेगा। और जन्म के समय में यदि कोई भी ग्रह उपरोक्त लिखे अनुसार जन्म कुण्डली में बैठा होगा, तो वह ग्रह प्राय: सारे जीवन भर ही शुभ फल करने वाला समझा जाता है। और अस्त ग्रह या शून्य अंश ग्रह कमजोर होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

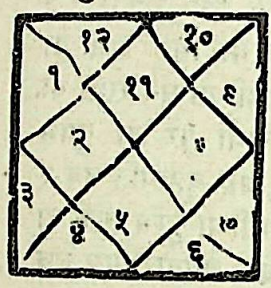
कुं० नं० १४४



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध मिथुन राशी या सिंह राशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी या कुम्भ राशी पर या मेष राशी पर या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे, और वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी तुलाराशी या कुम्भ राशी या धन राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा मंगल जब कभी मिथुन राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी या मीन राशी पर जब जब आवेंगे अथवा सूर्य जब जब कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे, अथवा शुक्र जब जब कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे अथवा राहू जब जब कभी मिथुन राशी पर आवेंगे, और शनी जब जब कभी मिथुन राशी पर आयेंगे। तब तब विद्या और सन्तान पक्ष में उन्नति, एवं सुख प्राप्ती का साधन पैदा करते हैं। किन्तु इसके विपरीत यदि जब जब बुध कर्क राशी पर या कन्या राशी पर या मकर राशी या मीन राशी पर जब जब आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब जब कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे, अथवा केतू जब जब कभी मिथुन पर आयेंगे, तब तब विद्या और सन्तान पक्ष में एवं मस्तिष्क के सम्बन्ध में परेशानी का योग पैदा करते हैं। और जन्म के समय में, यदि ऊपर लिखे अनुसार राशियों के जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में हमेशा ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं। और जो जो कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा या २९ अंश से अधिक या १ अंश से कम होगा तो वह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा-पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

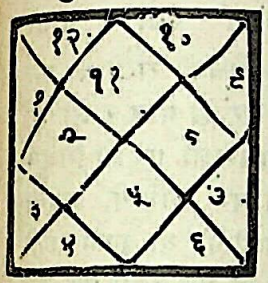
कुं० नं० १४५



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध सिंह राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी या कुम्भ राशी पर या तुला राशी पर या मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या धन राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा वृहस्पति जब २ कभी कन्या राशी पर या मीन राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी कन्या राशी पर या मिथुन राशी पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कन्या राशी पर या मीन राशी पर आयेंगे तब २ आयु एवं पुरातत्व सम्बन्ध या पेट के सम्बन्ध में सुख व उन्नति का शुभ योग पैदा करते हैं, और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी मकर राशी पर या मीन राशी पर या कर्क राशी पर आयेंगे, अथवा शुक्र जब कभी कन्या राशी पर या मीन राशी पर आवेंगे, अथवा शुक्र जब कभी कन्या राशी पर या मीन राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू जब २ कभी कन्या राशी पर या मीन राशी पर आवेंगे, अथवा किसी हिस्से में कुछ शनी भी जब २ कभी कन्या राशी पर या कर्क राशी पर आवेंगे तब-तब इन ग्रहों के असर से आयु एवं पुरातत्व व पेट के संबंधों में हानिकारक एव अशांतीप्रद योग पैदा होता है, और जन्म के समय में यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से २ कोई भी ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार ही यदि जन्म कुन्डली के अन्दर भी बैठे होंगे तो वह प्राय: अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे, और जो कोई भी ग्रह, सूर्य से अस्त होंगे या शून्य अंश होंगे तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

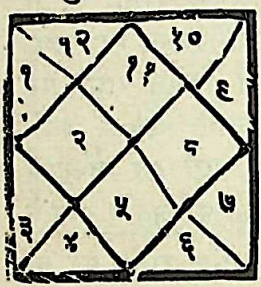
कुं० नं० १४६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में सूर्य सिंह राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशीपर या कुम्भ राशो पर या मेश राशी पर या वृषभ राशो पर या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी सिंह राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या मेष राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी सिंह राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ रोशी पर या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आयेंगे, तब-तब स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में उन्नति व सुख की प्राप्ती होती है और शनी जब २ कभी सिंह राशी पर या मिथुन राशो पर या वृश्चिक राशी पर या कुम्भ राशो पर जब २ आयेंगे, तब-तब स्त्री व दैनिक रोजगार का लाइन में कुछ अच्छाई और बुराई को साथ लेकर फल की प्राप्ती होतो है, और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभो कन्या राशी पर या तुला राशी पर या मकर राशी पर या मीन राशी पर या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभो सिंह राशी, या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आवेंगे, तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में अशाँत प्रद वातावरण पैदा करेंगे और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी ग्रह यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में उपरोक्त फला देश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे, और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

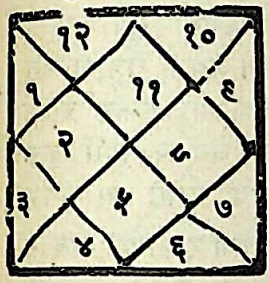
कुं० नं० १४७



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में शुक्र, तुला राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी पर या कुम्भराशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर या वृषभराशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर आयेंगे, अथवा वृहस्पति जब २ तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर या मिथुन राशी पर या मेष राशी पर जब जब आयेंगे, अथवा मंगल जब २ कभी तुला राशी पर या मीन राशी पर या मेषराशी पर जब २ आयेंगे अथवा शनी, जब २ कभी तुला राशी पर या सिंह राशी पर आयगे, तब २ भाग्य,धर्म भक्ति व ईश्वरीय बल की उन्नति का योग प्राप्त होता है, और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशी पर आवेंगे, अथवा चन्द्रमा जब २ कभी तुला राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी कन्या राशी-मकर राशी-कर्क राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू जब २ कभी कोई तुला राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे तब २ भाग्य, धर्म व ईश्वर भक्ति के सम्बन्धों में परेशानी या कमजोरी का योग पैदा करते हैं और बुध जब २ कभी तुला राशी या मेष राशी पर आयेंगे, तब २ इस उपरोक्त बिषय में सामान्य फल प्रदान करते हैं, और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो जो कोई भी ग्रह यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते है, और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रहप्राय निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा-पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

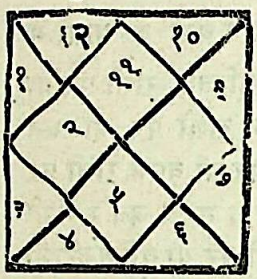
कुं० नं० १४८



पंचांग के अन्दर जिन वर्षों व मासों में शनी कुंभ राशी पर या बृश्चिक राशी पर या तुला राशी पर या मिथुन राशी पर या धन राशी पर या सिंहराशो पर या वृषभ राशी पर जब २ कभी आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी कुम्भराशी पर सिंह राशो पर या वृश्चिकराशी पर आयेंगे अथवा बृहस्पति जब २ कभी कुम्भ राशी पर या मिथुन राशो पर या सिंह राशी पर या तुला राशी पर जब २ आयेंग अथवा शुक्र जब २ कभी कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब२ कभी कन्या राशी पर आयेंगे तब२ इन ग्रह योगों में देह की सुन्दरता, आत्मबल ख्याति आदि के सबन्ध में उन्नति व सफलता प्राप्त होती है और इसके विपरीत यदि शनो जब २ कभी मीन राशी पर या मेष राशी पर या कर्क राशी पर या कन्या राशो पर या मकर राशी पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी जब२ कभी कुम्भ राशो पर या सिंहराशी पर आयेंगे,तब २ इन ग्रह योगों में देह की सुन्दरता, आत्मबल, ख्याति आदि के विषय में हानि या कुछ कमी का योग पैदा करते हैं और जन्म के समय में यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जो, कोई भी ग्रह यदि ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे, और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनो शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० १८

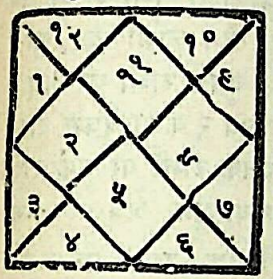


पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति कर्कराशी या मीनराशी या वृश्चिक राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कर्क राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू जब २ कभी कोई कर्क राशी या मकर राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या धन राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या तुला राशी या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे, या चन्द्रमा मिथुन एवं सिंह राशी पर आवेंगे तब २ इन ग्रह योगों में शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझट आदि विषयों में, विजय और स्फूर्ती पैदा करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि जब २ कभी चन्द्रमा कन्या राशी या वृश्चिक राशी या मकर राशी या मोन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी में आयेंगें तब २ शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझट आदि विषयों में कुछ अशांती का कारण पैदा करते हैं और शनी जब २ कभी कर्क राशी या वृषभ राशी या तुला राशी पर आवेंगे तब २ शत्रु पक्ष व झगड़े झंझटों के पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ बिजय प्राप्त करते हैं, और इन्हीं ग्रहों में से यदि कोई भी जन्म के समय में, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे। और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा,तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण पूरा २ फल नहीं कर सकता है।

नोट–कुम्भ लग्न वालों को चन्द्रमा, बुध, शनो, इन तीन ग्रहों का असर यदि अच्छा प्राप्त होने का समय आता है तब भी कुछ न कुछ फिकर या दिक्कत अवश्य करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

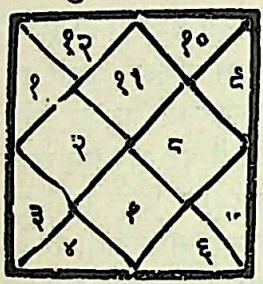
कुं० नं० १५०



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व दिनों में शुक्र, तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशी पर या मेष या राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर आयेंगे अथवा मंगल जब २ तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे अथवा वृहस्पति जब२ कभी वृषभ राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब २ कभी आयेंगे अथवा शनि या चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशि पर आयेंगे, अथवा सूर्य जब२ कभी वृषभ राशी पर आवेंगे तब२ मकान,भूमि, सुख शाँतो के सम्बन्धों में उन्नति, एवं लाभ प्राप्ती का योग पैदा करतें हैं और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी कर्क राशी पर या कन्या राशी पर या मकर राशी पर आवेंगे, अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी वृषभ राशी पर आवेंगे, तब २ माता भूमि मकान सुख प्राप्ती के सम्बन्धों में कुछ कमजोरी या कमी या अशान्ती का योग पैदा करते हैं, और जन्म के समय में यदि उपरोक्त ग्रहों में से जो२ कोई भी ग्रह यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकाँश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं, और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है किन्तु चन्द्रमा,शनि,बुध, इन तीन ग्रहों का फल अच्छा होने पर भी कुछ अशान्त प्रद बन जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

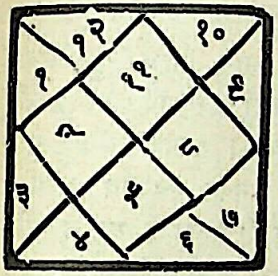
कुं० नं० १५१



पंचाँग के अन्दर जिन २ दिनों और वर्षों में मंगल, सिंह राशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी या धनराशी या मीन राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे और वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशी या मीन राशी या वृश्चिक राशी या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी वृषभ राशी या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आयेंगे तब तब पिता, कारबार, राज समाज मान प्रतिष्ठा आदि विषयों में उन्नति प्रदान करते हैं, और शनी जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आयेंगे तब तब उपरोक्त विषय में बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उन्नति करते हैं और पिता स्थानके संबन्धसे सामान्यतम लाभ हानि का योग पैदा करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि मंगल जब २ कभी कर्क राशी या कन्या राशी या मकर राशी पर आवेंगे, अथवा चन्द्रमा जब कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे,अथवा राहू या केतू कोई भी जब जब कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे तब तब पिता राज समाज मान इत्यादि के विषय में हानिकारक योग या अशांती कारक योग उत्पन्न करते हैं और जन्म के समय में यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो जो कोई भी ग्रह इन्हीं राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में हमेशा ही ऊपर लिखे अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं और जो जो कोई भी ग्रह अति सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० १५२



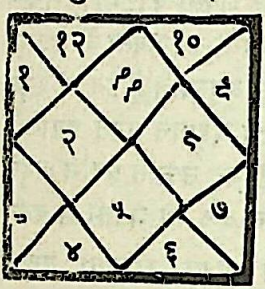
(वृ० . कुम्भ लग्न वाले व्यक्तियों को आमदकी, धन की संग्रह शक्ती कौटुम्ब, आवश्यक लाभ, इत्यादि विषयों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह वृहस्पति हैं इनका रङ्ग पीला है, इनका स्वभाव वड़प्पन युक्त दयालुहै इनकी मणी पुखराज है, यह उन्नति प्रदान करने में, हृदय बल और धन बल को शक्ती से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १-२-३-५-७-८-९-११-१२ और नेष्ट राशियाँ यह है १०-६ और सामान्य राशी यह–४ हैं।

शु० कुम्भ लग्न वाले व्यक्तियों को-भाग्य,धर्म, भक्ति, ईश्वरीय वल. यश, मकान, भूमि, माता, सुख, शांती इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं, इनका रङ्ग सफेद है इनका स्वभाव कोमल,गुणज्ञ, है इनकी मणी हीरा है यह उन्नति प्रदान करने में ईश्वरीय बल एवं शाँती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १-२-३-५-७-८-९-११-१२ और नेष्ठ राशियाँ यह ४-६-१० हैं।

(म०) कुम्भ लग्न में जन्म लेने वालों को राज, समाज, पिता, कारबार, मान, प्रतिष्ठा, भाई-बहन, पराक्रम, वाहुबल, इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मङ्गल है। इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव गरम और गम्भीर है, इनकी मणी मूंगा है। यह उन्नति प्रदान करने में बाहुबल की शक्ती से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने को श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १-२-३-५-७-८-९-११-१२ और नेष्ठ राशियाँ ये ४–६–१० हैं। इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी अपने हाथों की आदर्श कर्म शक्ती से मान, प्रतिष्ठा आदि की कुछ न कुछ रक्षा कर ही लेते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० १५३



(बु०) कुम्भ लग्न वाले व्यक्तियों को विद्या, सन्तान, वाणी आयु, मृत्यु, पुरातत्व-शक्ति, विवेक दिनचर्या, इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं इनका रंग हरा है. इनका स्वभाव कोमल और कटु है इनकी मणी पन्ना है यह उन्नति प्रदान करने में गूढ़ बुद्धी के योग से कार्य करते हैं इनको कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १-२-३-५-७-८-९-११ और नेष्ट राशियाँ ४-१०-१२ और सामान्य राशी ६ है।

(श०) कुम्भ लग्न वाले व्यक्तियों को खर्च, देह, स्वरूप, आत्म-बल बाहरी स्थानों का सम्बन्ध इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी है, इनका रंगनीला है, इनकी मणी नीलम है, इनका स्वभाव कठोर और कोमल है यह उन्नति प्रदान करने में आत्म-बल और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से काय करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने को श्रेष्ठ राशियाँ यह २-३-७-८-९-११ हैं और नेष्ट राशियाँ यह ६-१०-१ है, और सामान्य राशियाँ यह ४-५-१२ हैं।

(चं०) कुं० लग्न वाले व्यक्तियों को, शत्रु, रोग. ननसाल चिंता, झगड़े झंझट, इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं, इनका रंग उज्ज्वल है इनका स्वभाव शीतल अग्नि स्वरूप है, इनकी मणी मोती है, यह उन्नति प्रदान करने में मानसिक परिश्रम की शक्ति के द्वारा कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह है। १-२-३-४-५-७-९-११-१२ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं-६-८-१०। और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे समय में भी मानसिक शक्ति से बल धैर्य धारण कर देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाभकारी रंग मणियों तथा ग्रहों के ग्रहों के गुण दोषादि का फल

कुं० नं० १५४



(सू०) कुम्भ लग्न वाले व्यक्तियों को स्त्री, दैनिक रोजगार भोग, प्रभाव, तेज इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य है, इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव महान गरम है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करनेमें दैनिक रोजगार के अन्दर प्रभाव शक्ती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं-५ सिंह-८ वृश्चिक-९ धन-३ मिथुन-११ कुम्भ-१ मेष-२ वृषभ और नेष्ट राशियां यह हैं-६ कन्या ७ तुला-१० मकर और सामान्य राशि यह है-१२ मीन ४ कर्क।

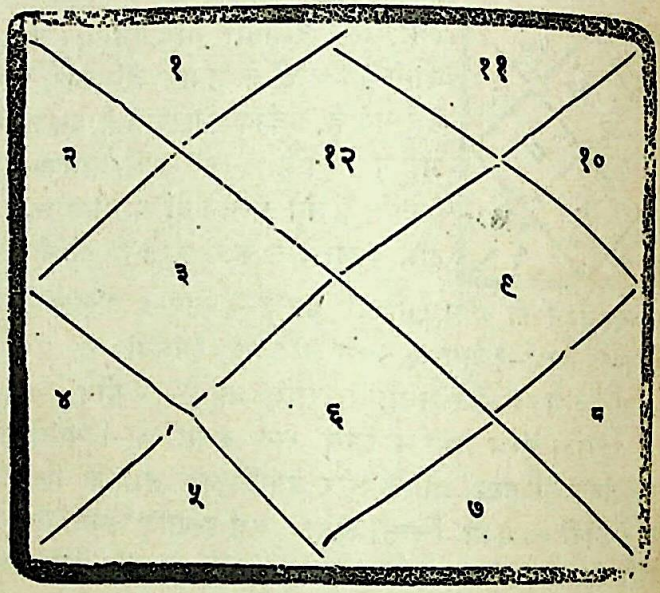
(रा०) कुम्भ लग्न में जन्म लेने वालों को-दिमाग की गुप्त लाभ दायक युक्तियाँ, अधिक और अनाधिकार लाभ के लिये कठिन प्रयत्न शक्ती का कार्य, चिन्ता असत्य, कष्ट इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू है। इनका रंग काला है, इनका स्वभाव कटु है, इनकी मणी गोमेध है। यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त सूझ की शक्ति से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशो यह हैं-३ मिथुन-१ मेष-४ कर्क-१० मकर-७ तुला और नेष्ट राशियां यह हैं-९ धन-८ वृश्चिक १२ मीन ११ कुम्भ ५ सिंह २ वृषभ ६ कन्या।

(के०) कुम्भ लग्न में जन्न लेने वालों को बाहुबल की गुप्त लाभ दायक शक्तियां अनाधिकार लाभ के लिये कठिन प्रयत्न, चिन्ता इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलादाता ग्रह केतू हैं। इनका रंग काला है इनका स्वभाव अति कटु है, इनकी मणी लहसनियाँ है। यह उन्नति प्रदान करने में कष्टसाध्य कर्मयोग के द्वारा कार्य करते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ९, १, ४, १०, ७, और नेष्ट राशियाँ यह हैं ३, ३, ५, ६, ८, ११, १२,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मीन लग्न फलादेश प्रारम्भ

*

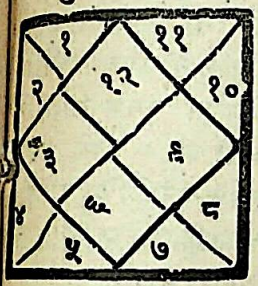


*

इस मीन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः बु० गु० मं० च० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसे कि आपको कुण्डली नं० १५५ से लेकर कुण्डली नं० १६८ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कु० नं० १५५



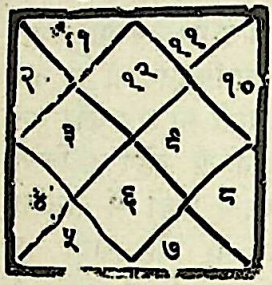
पंचाँग अन्दर जिन २ दिनों में चन्द्रमा धन राशी या मेष राशी, कर्क राशी कन्या राशी, मकर राशी, मीनराशी या मिथुनराशी पर जब २ आयेंगे तब २ लाभ प्राप्ती का ढङ्ग और मन की प्रसन्नता के सुन्दर कारण रहेंगे । किन्तु इसके विपरीत यदि जिन २ दिनों में चन्द्रमा कुम्भ, वृश्चिक, तुला या सिंह राशी पर रहेंगे । उन २ दिनों में खर्च और मन को अशान्ती के कारण उत्पन्न होंगे । और जब २ चन्द्रमा वृषभ राशी पर आयेंगे तब २ मन को प्रसन्नता, हिम्मत प्राप्त होगी ।

* धन लाभ का मासिक फलादेश *

पंचाँग के अन्दर जिन २ महीनों में मंगल मेषराशि, वृश्चिक राशी धनराशी, मकरराशी, मीन राशी, कन्या राशी, वृषभ राशी या मिथुन राशी पर आवेंगे अथवा जब २ बुध मकर राशी, वृश्चिक राशी, कन्या राशी कर्कराशी, मेषराशी, धनराशी, वृषभ राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मकर राशी, मेष राशी, वृषभ राशी, कर्कराशी पर जिन २ महीनों में आयेंगे अथवा शुक्र जिन २ महीनों में मकरराशी, कर्क राशी, वृषभ राशी, तुलाराशी पर जब २ कभी आयेंगे तब २ उन महीनों में हर एक उपरोक्त ग्रह की शक्ती से धन का लाभ एवं कारबार की सफलता प्राप्त होगी । किन्तु इसके विपरीत यदि जिन २ महीनों में मंगल कुम्भराशी, कर्कराशी पर होंगे और शुक्र कुम्भ राशी, कन्या राशी, सिंह राशी पर होंगे और बुध जब २ कभी कुम्भ राशी, सिंहराशी तुलाराशी पर या मीन राशी पर होंगे तब तब उन महीनों में धन की कुछ हानि रहेगी । और यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर कहीं भी बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकतर ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार फल देने वाला माना जाता है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

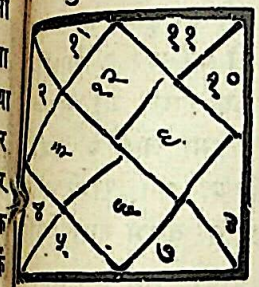
कु० नं० १५६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में वृहस्पति कर्क राशि या मीन राशि या वृश्चिक राशि या मेष राशि या मिथुनराशि या कन्या राशि या धन राशि या वृषभ राशि र जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी मकर राशि या वृषभ राशि या कर्करशि या वृश्चिक राशि पर आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी कर्क राशि या मकर राशि या वृषभराशि या मिथुन राशि या सिंह राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि पर आवेंगे, अथवा केतू जब २ कभी कर्क राशि या धन राशि या वृषभ राशि या कुंभ राशि या सिंह राशि या वृश्चिक राशि या मकर राशि पर जब २ आयेंगे, तब तब इन वर्षों में उन्नति व धन लाभ की शक्तियाँ प्राप्त होंगी, किन्तु यह ध्यान रहे कि इन लाभकारी वर्षों में, मासिक लाभ के ग्रह भी जब २ अनुकूल होंगे तब २ लाभ अधिक रहेगा, किन्तु इसके विपरीत वृहस्पति जब २ कभी मकर राशि या कुंभ राशि या तुला राशि पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी कुम्भ राशि मेष या धन राशि पर आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी मेष राशि या धन राशि या तुला राशि पर आयेंगे अथवा केतू मेष राशि या मिथुन राशि या तुला राशि पर जब २ आयेंगे तब-तब इन वर्षों में कुछ धन हानि का सा योग पैदा होता रहेगा और जो २ कोई ग्रह इन उपरोक्त लिखित अच्छे या बुरे दोनों प्रकार की राशियों से बाहर हैं वह ग्रह इन राशियों में जब २ आयेंगे तब २ सामान्य फल प्रदान करेंगे। और जो कोई ग्रह जन्म के समय में उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही कल प्रदान करते रहेंगे। और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण पूरा फल नहीं करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

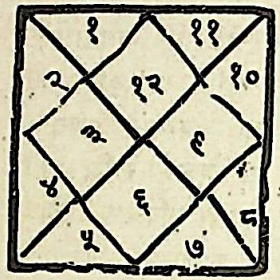
कु० नं० १५७



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में वृहस्पति धनराशि या मीनराशि या मेषराशि या मिथुन राशि या कन्या राशि या वृश्चिक राशि या कर्क राशि पर जब २ आयेंगे अथवा बुध जब जब धन राशि या मकर राशि या मिथुन राशि या कन्या राशि या वृश्चिक राशि या कर्क राशि या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी मकर राशि या मिथुन राशि या वृश्चिक राशि या कर्क राशि या सिंह राशि या कुम्भ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा केतू जब कभी मकर राशि या कुम्भराशि या वृषभ राशि या सिंहराशि या धनराशि पर जब २ कभी आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी मकर राशि या कर्कराशि या वृश्चिक राशि पर जब २ कभो आवेंगे अथवा मंगल जब २ कभो मेष राशि या वृषभ राशि या मिथुन राशि या कन्याराशि या वृश्चिक राशि या धनराशि या मकर राशि या मीनराशि पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी सिंह राशि या मकर राशि या मेषराशिया वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी मकरराशि या वृषभ राशि या तुलाराशि पर जब २ आयेंगे, अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मकर राशि या मीन राशि या मेषराशि या वृषभराशि या मिथुन राशि या कर्क राशि या कन्या राशि या धन राशि पर जब २ आयेंगे अर्थात् यह सभी ग्रह प्रायः उपरोक्त लिखे अनुसार ही, जिन २ वर्षों में उपरोक्त राशियों के अनुसार आया करेंगे, तब २ हो राजयोग कारक व उन्नतिदायक सफलता प्रदान करते हैं और जन्म के समय में भी जन्म कुण्डली के अन्दर यदि इन सब ग्रहों में से जो कोई भी ग्रह उपरोक्त लिखित राशियों के अन्तर्गत जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंग तो वह ग्रह प्राय सारे जीवन भर श्रेष्ठ उत्तम फल प्रदान करते रहेंगे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

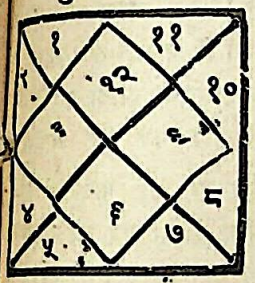
कु० नं० १५८



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति कर्क राशी या वृश्चिक राशी या मीनराशी या मकरराशी पर जब २ आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या कन्या राशी या धन राशी या मकर राशी या मीन राशी या वृषभ राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे तब २ सन्तान पक्ष की व विद्या स्थान की उन्नति पैदा करेंगे और इसके विपरीत जब २ कभी चन्द्रमा सिंह राशो या तुला राशी या वृश्चिक राशी या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आवेंगे अथवा मंगल जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी या धन राशी या मेष राशी पर जब जब आयेंगे, अथवा राहू या केतू जब २ कभी कोई कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे तब २ विद्या व सन्तान पक्ष में कमी कष्ट व अशाँती का योग पैदा करते हैं और शनी जब २ कभो कर्कराशी या वृषभ राशी या तुला राशो या मकर राशो पर आवेंगे तब २ सतान और विद्या के पक्ष में कुछ लाभ और कुछ हानि का योग पैदा करते हैं। और जन्म के समय में यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह यदि ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जोवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

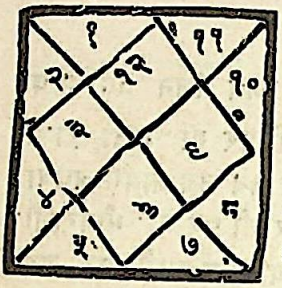
कुं० नं० १५६



पंचांग के अंदर जिन जिन वर्षों में व मासों में शनी सिंह राशी पर या तुला राशी पर या मकर राशी पर जब जब आयेंगे अथवा मंगल जब कभी तुला राशी पर या मीनराशी पर या मेष राशी पर या कर्क राशी पर जब जब आयेंगें अथवा बुध जब जब कभी तुला राशी या मेष राशी पर आयेंगें अथवा शुक्र जब २ कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर या मीनराशी पर या वृषभ राशी पर मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब जब कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आवेंगे तब २ आयु पुरातत्व एवं दिनचर्या के सम्बन्धों में सुख व उन्नति प्राप्त होगी और पेट के अन्दर आराम रहेगा और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशी पर या मेषराशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब जब कभी कन्या राशी पर या कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर जब जब आयेंगे अथवा राह या केतू दोनों में से कोई भी जब जब कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे तब तब आयु, पुरातत्व व दिनचर्या के सम्बन्धों में परेशानी व कुछ दिक्कतों का योग पदा करते हैं और जन्म के समय में यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जोर कोई भी ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार ही यदि जन्म कुण्डली के अंदर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे, और जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होंगे या शून्य अश होगे तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं करते हैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

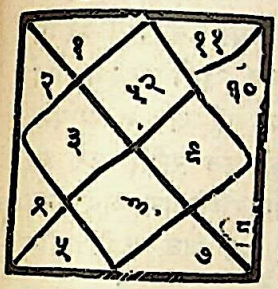
कुं० नं० १६०



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में वृहस्पति कन्याराशि पर या मीनराशि पर या वृषभराशि पर आयेंगे, अथवा मंगल जब२ कभी कन्या राशि पर या मिथुन राशि पर या मीन राशि पर जब २ आयेंगे अथवा बुध जब२ कभी कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या वृषभ राशि पर या मिथुन राशि पर या कर्क राशि पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर आवेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में उन्नति और सुख की प्राप्ती होती है। और इसके विपरीत शुक्र जब २ कभी कन्या राशि पर आयेंगे, अथवा सूर्य जब २ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे, अथवा राहू या केतू कोई भी जब२ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर आवेंगे, अथवा बुध जब २ कभी कुम्भ राशि पर या सिंह राशि पर या तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे, तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ परेशानी रहेगी, अथवा शनी जब जब कभी कन्या राशि पर या धन राशि पर या मीन राशि पर या कर्क राशि पर आयेंगे, तब तब स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में कुछ हानि और कुछ लाभ प्राप्त रहेंगे। और जन्म के समय में यदि इन्हीं ग्रहों में से उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली में जो २ कोई भी ग्रह बैठे होंगे, तो वह ग्रह सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे, और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

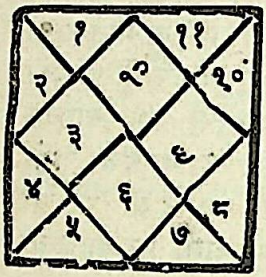
कुं० नं० १६१



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति वृश्चिक राशी या मीन राशी पर या कर्क राशी पर या वृषभ राशी पर जब २ आवेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर जब २ कभी आवेंगे, अथवा बुध जब जब कभी वृश्चिक राशी पर आयेंगे, या वृषभ राशी पर आवेंगे अथवा कुछ अंश रूप में शनी जब जब कभी वृश्चिक राशी में आयेंगे, तब तब उन समयों में भाग्य एवं दैवी शक्ति व धर्म आदि की सफलता व उन्नति प्राप्त होती है और इसके विपरीत जब जब कभी चन्द्रमा वृश्चिक राशी पर या वृश्चिक राशी पर या वृश्चिक राशी पर या वृषभ राशी पर आयेंगे अथवा सूर्य जब जब जब कभी वृश्चिक राशी पर या वृषभ राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी जब जब कभी वृश्चिक राशी में आयेंगे तब तब धर्म भक्ती तथा भाग्य को कुछ कुछ हानि व अशांती पैदा करते हैं। और जन्म के समय में यदि इन्हीं ग्रहों में से जो कोई भी, ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर इन्हीं राशियों के अन्तर्गत बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं। और यदि जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

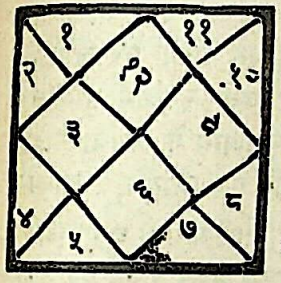
कुं० नं० १६२



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में वृहस्पति मीनराशी पर या कर्कराशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा मंगल जब २ कभी धन राशी पर या मीन राशी पर या कन्या राशी पर जब जब आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब जब कभी मीन राशी पर या कन्याराशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मीन राशी पर या वृषभ राशी पर या तुला राशी पर आयेंगे तब २ इन ग्रहयोगों से देह की सुन्दरता व आत्मबल तथा ख्याति आदि की उन्नति व सफलता प्राप्त होती है। और इसके विपरीत यदि जब २ कभी वृहस्पति तुला राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर आयेंगे। अथवा बुध जब जब कभी मीन राशी पर या कन्या राशी पर आयेंगे। अथवा सूर्य जब जब कभी मीन राशी पर या कन्या राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब जब कभी मीन राशी पर या मिथुन राशी मर या मकर राशी पर या कन्या राशी पर जब २ आयेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी, मीन राशी या कन्या राशी पर जब २ कभी आयेंगे, तब तब इन योगों में देह की सुन्दरता ख्याति व आत्मबल इत्यादि योगों की कमी पैदा हो जाती है इन्ही उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह यदि जन्म के समय में इन्हीं राशियों के अन्तगत यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही सारे जीवन भर ही फल प्रदान करते रहते हैं। और जो २ कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निबल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नही कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

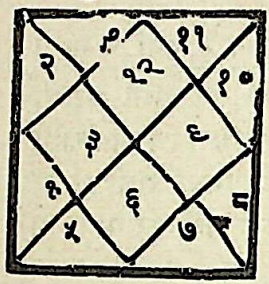
कु० नं० १६३



पचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में सूर्य सिंह राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर या मीन राशि पर या मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या वृश्चिक राशी पर या कर्क राशी पर या कन्या राशी पर जब २ आयेंगे अथवा वृहस्पति जब२ कभी सिंहराशी पर या धन राशो पर या मेष राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभो सिंहराशी पर या वृषभ राशी पर या मकर राशी पर जब २ आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी सिंहराशि पर या वृश्चिक राशि पर आयेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी सिंह राशि पर या कुम्भ राशि पर आयेंगे, तब २ शत्रु पक्ष में प्रभाव तथा झगड़े झंझटों में लाभ का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत जब २ कभी सूर्य तुला राशो पर या कुम्भी राशा पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशी पर या कुम्भ राशि पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंह राशि पर या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी सिंह राशि पर या कुम्भ राशी पर आयेंगे तब तब शत्रु पक्ष व झगड़े झंझटों के सम्बन्धों में कुछ परेशानो अनुभव करने का योग बनता है और जन्म के समय में यदि इन ऊपर लिखित राशियों के अनुसार ही जो २ कोई ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सदैव ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार जीवन में फल प्रदान करते रहेंगे और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्तो के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

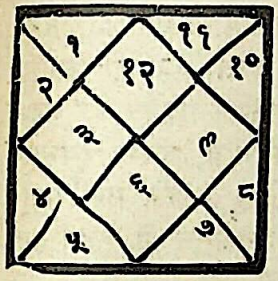
कुं० नं० १६४



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में वह मासों में वृहस्पति, धन राशी पर या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा मङ्गल जब २ कभी मिथुन वृश्चिक, मीन या धन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी पर या धनराशी पर आयेंगे, अथवा राहू जब २ कभी मियुन राशी पर आयेंगे, अथवा बुध जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर या कन्या राशी पर या मकर राशी पर या वृश्चिक राशी पर या वृषभ राशी पर या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे तब २ उन ग्रह योगों में माता, भूमि, सुख, शांतो मकानादि के संबन्धों में, उन्नति व सुख सफलता का योग प्राप्त होता रहता है। और इसके विपरोत जब २ कभी सूर्य मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयेंगे, अथवा शुक्र मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या मेष राशी पर या धन राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा केतू जब २ कभी मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंह राशी पर या तुला राशो पर कुम्भ राशो पर या मीन राशी पर या मेष राशो पर जब २ आयेंगे तब २ सुख, शान्ती, माता, एवं मकानादि, भूमि, के सम्बन्धों में परेशानी का योग प्राप्त होता है, और जन्म के समय में इन्हीं उपरोक्त राशियों के अन्तगत इन्हीं ग्रहों में से कोई भी ग्रह कुण्डली के अन्दर कहीं भी बठे हागे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकतर ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देने वाला माना जाता है। और यदि काई भी ग्रह सूय से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्तो के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

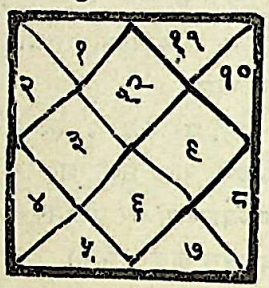
कु० नं० १६५



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में वृहस्पति धनर शी पर या मीन राशी पर या मेष राशि पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब २ कभी आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभो धनराशो पर या वृषभराशी पर या कन्याराशो पर या मिथुन राशी पर आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी धन राशी पर या मिथुन राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी धन राशी पर या मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा केतू जब २ कभी धनराशी पर आयेंगे तब २ इन ग्रह योगों में पिता स्थान से व राज समाज, व्यापार, मान प्रतिष्ठा आदि विषयों की ओर से सुख सफलता व उन्नति प्राप्त होती रहेगी तथा इसके विपरीत जब २ कभी वृहस्पति कुम्मराशी पर या तुला राशी पर या मकरराशी पर आवेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी धन राशी पर या मिथुन राशी पर आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी धन राशी पर या मिथुनराशी पर आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी धनराशी पर या मीन राशो पर या तुलाराशी पर आवेंगे अथवा राहू जब २ कभी धन राशी पर आये गे तब २ इन ग्रह योगों में पिता स्थान से व राज समाज से व व्यापार आदि मान प्रतिष्ठा संबन्धों में कुछ हानि व परेशानी के योग प्राप्त होते रहेंगे। और यदि जन्म के समय में इसी प्रकार की उपरोक्त राशियों सहित जो २ कोई भी ग्रह यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जावन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे। और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुं० नं० १६६



(वृ०) मीन लग्न वाले व्यक्तियों को-राज समाज, पिता, कारबार, मान प्रतिष्ठा, देह, आत्मबल, हृदयबल, सुन्दरता ख्याति इत्यादि योगों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बृहस्पति है, इनका रंग पीला है, इनका स्वभाव स्वाभमानी और कर्मेष्ठी है इनकी मणी पुखराज हैं, यह उन्नति प्रदान करने में, हृदय बल और कर्मबल की शक्ति से कार्य करते हैं इनकी श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं-१-३-४-६-८-९-१२ और नेष्ट राशियां यह हैं-७-१०-११ और सामान्य राशी यह २-५ हैं।

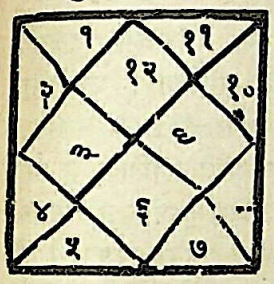
(मं०) मीन लग्न में जन्म लेने वालों को-भाग्य धर्म, धन कुटुम्ब, भक्ति यश, बरक्कत इत्यादि की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मंगल है। इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव गरम और नरम है, इनकी मणी मूंगा है, यह उन्नति प्रदान करने में दैवी शक्ती व धन शक्ती के योग से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १-२-३-६-८-९-१०-१२ और नेष्ट राशियाँ यह ७-११ है और सामान्य राशी यह ५ हैं और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी अपनी भाग्य शक्ति के द्वारा सदैव इज्जत आबरू की रक्षा कुछ न कुछ कर ही लेते हैं।

(श०) मीन लग्न वाले व्यक्तियों को-धन लाभ आमदनी, खर्च बाहरी स्थानों का सम्बन्ध इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी है, इनका रंग श्याम है इनकी मणी नीलम है इनका स्वभाव तीक्षण है यह उन्नति प्रदान करने में बाहरी योगों की शक्ती कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं २-३-४-८-१०-१२ और नेष्ठ राशियाँ यह ११-१ है। और सामान्य राशियाँ यह ६-९-७-९-हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाभकारी रंग मणियाँ तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं० १९७



(वृ०) मीन लग्न वाले व्यक्तियों को माता, सुख, शान्ती, भूमि, मकानादि, स्त्री, दैनिक रोजगार, इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं इनका रंग हरा है, इनकी मणी पन्ना है यह उन्नति प्रदान करने में शान्ती युक्त विवेक शक्ति के दैनिक कार्य-क्रम से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं २-३-४-६-८-९-१० और नेष्ट राशियां ५-७-११-१२ और सामान्य राशि १ है।

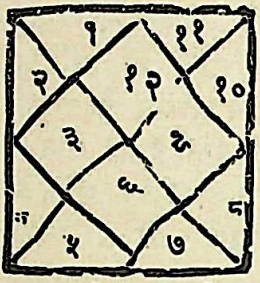
(शु०) मीन लग्न वाले व्यक्तियों को भाई-बहन, पुरुषार्थ, आयु, पुरातत्व, जीवन की दिनचर्या, बाहुबल की गूढ़ शक्ती इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं, इनका रंग सफेद है इनका स्वभाव शक्ती को चतुराई से प्रयोग करने का है इनकी मणी हीरा है यह उन्नति प्रदान करने में परिश्रम की गहन नीति शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १-२-३-४ ८-९-१०-१२और नेष्ठ राशियाँ यह ५-६-११ हैं। सामान्य राशी ७है।

(चं०) मीन लग्न वाले व्यक्तियों को बुद्धी, विद्या सन्तान, वाणी, मनोबल, इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं इनका रंग उज्वल है इनका स्वभाव शीतल शान्त स्वरूप है इनकी मणी मोती है, यह उन्नति प्रदान करते में मनोबल की शक्ती के द्वारा कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं-१-२-३-४-६-९-१०-१२ और नेष्ठ राशियां यह हैं-५-७-८ -११ और इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी मनोबल की शक्ती से विद्या और संतान की कुछ न कुछ पूर्ति अवश्य करके ही देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

 मीन लग्न वालों को—रेस आदि सभी व्यापार कार्यों के लिये लाभकारी रंग मणियाँ तथा ग्रहों के गुणा दोषादि का फलादेश

कुं० नं० १६८



(सू०) मीन लग्न वाले व्यक्तियों की शत्रु रोग ननसाल, झगड़े झंझट, परिश्रम इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं, इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव महान गरम है इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करने में परिश्रम ओर प्रभाव की योग शक्ती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं १ मेष–२ वृषभ–५ सिंह–६ कन्या ८-९ धन १०मकर–१२ मीन और नेष्ट राशियाँ यह हैं–७ तुला–११ कुंभ और सामान्य राशियाँ यह हैं–३ मिथुन-४कर्क ।

(रा०) मीन लग्न में जन्म लेने वालों को—दिमाग की गुप्त लाभदायक युक्तियाँ, अधिक और अनाधिकार लाभ प्राप्ती की सफल योजना, चिन्ता, असत्य, कष्ट इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू है इनका रंग काला है इनका स्वभाव छिपाव रखना है, इनकी मणी गोमेध है यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त गहरी योजनाओं से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं २ वृषभ ३ मिथुन ५ सिंह १० मकर और नेष्ट राशियां यह है—१ मेष ६ कन्या ७ तुला ९ धन १२ मीन और सामान्य राशी यह हैं-४ कर्क ८ वृश्चिक ११ कुम्भ ।

(के०)मीन लग्न में जन्म लेने वालों को–बाहुबल की गुप्त कीमती शक्ती अधिक और अनाधिकार लाभ पाने के मार्ग का दृढ़ अनुसरण, चिन्ता, कष्ट, कटुता वाणी की लघुता, गुप्त साहस इत्यादि योगों को शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू है। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–२, ५, ९, १०, और नेष्ट राशियां यह है १, ३, ७, १२, और सामन्य राशी यह है–४, ६, ८, ११, वह गुप्त हिम्मत शक्ति रखने वाले ग्रह हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

हर चीजों की देजी मन्दी जानने के लिये सभी ग्रहों की दृष्टियाँ जानना जरूरी है, अतः सर्व ग्रहों की दृष्टियाँ निम्न प्रकार से समझना चाहिये।

पंचांग के अन्दर जो जो ग्रह जिस २ समय में, जौन २ सी राशियों में बैठे होंगे, वहाँ से दूसरे स्थानों पर इस प्रकार दृष्टियाँ डालते रहते हैं!

सू०—अपने स्थान, से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है!
चं०—अपने स्थान से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टी से देखते हैं!
मं०—अपने स्थान से चोथे, सातवें, आठवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं!
बु०—अपने स्थान से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि देखते हैं!
गु०—अपने स्थान से पाँचवें, नवमें सातवें को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं!
शु०—अपने स्थान से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं!
श०—अपने स्थान से तीसरे, सातवें दसवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते है!

उदाहरण के लिये समझिए कि यदि पंचांग में शनी मेन राशि पर चल रहा है तो वह मिथुन, तुला, मकर इन तान राशियों पर पूर्ण दृष्टि बराबर डालते रहेंगे! और गुरू यदि मेष राशि पर चल रहे हैं तो सिंह, तुला, धन इन तीन राशियों पर बराबर दृष्टि डालते रहेंगे! और मंगल यदि मेषराशि पर चल रहे हैं तो कर्क, तुला, वृश्चिक इन तीन राशियों पर बराबर दृष्टि डालते रहेंगे और मेषराशि पर शुक्र चन्द्र बुध, सूर्य होंगे तो सबकी दृष्टि तुला पर बराबर रहेगी। इसी प्रकार जो २ ग्रह जिस २ राशी पर हो, वहीं से उसके अगले घरों को गिन लेने से मालुम हो जायगा कि कौन २ ग्रह किस २ स्थान को देख रहा है!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(मेष चंद्र–१)

जिस समय चन्द्रमा मेष राशि पर २।। दिन तक रहता है, उस समय यदि चन्द्रमा के साथ शनी बैठा हो या चन्द्रमा को शनी देखता हो तो चाँदी में मन्दी आती है और यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य या मंगल या गुरू बैठे हों या चन्द्रमा को देखते हों तो चाँदी में तेजी आती है ओर चन्द्रमा के साथ शुक्र या बुध बैठे हों या चन्द्रमा को देखते हों तो सामान्य भाव चाँदी में रहता है और चंद्रमा के साथ राहू या केतू कोई भी बैठे हों तो कुछ उतार चढ़ाव भाव में रहता है और यदि चन्द्रमा अकेला हो और दूसरा कोई भी ग्रह चन्द्रमा को देखता भी, तो चाँदी में भाव करीब २ सामान्य ही रहता है ।

(वृषभ चन्द्र–२)

जिस समय चन्द्रमा अकेला वृषभ राशि पर २।। दिन रहता है तब तेजी आती है और चन्द्रमा के साथ यदि सूर्य मंगल गुरू शुक्र इन चारों ग्रहों में से कोई भी ग्रह होगा या उन चार ग्रहों में से कोई भी ग्रह चंद्रमा को देखता होगा तो तेजी और भी अधिक आयेगी और चंद्रमा के साथ यदि शनी या बुध बैठे होंगे या चंद्रमा को देखते होंगे तो सामान्य तेजी मंदी और यदि चंद्रमा के साथ राहू या केतू कोई भी होंगे तो तेजी प्रधान रहेगी किन्तु थोड़ा सा झटका मंदी का हो सकता है।

(मिथुन चंद्र–३)

जिन समय चंद्रमा अकेला मिथुन राशी पर २।। दिन रहता है, उस समय ढाई दिन के मध्य में मंदी रहती है और यदि केतू या मंगल या गुरू, सूर्य इनमें से किसी भी ग्रह का यदि संग हो जायगा तो तेजी आती है और यदि सूर्य मंगल, गूरू की चन्द्रमा पर दृष्टी भी पूर्ण होगी, तो भी तेजी आयेगी किन्तु शनि बुध, शुक्र, राहू इन चारों ग्रहों में से किसी का साथ होगा तो भी मंदी रहेगी या शनी शुक्र की चन्द्रमा पर दृष्टी भी होगी तो भी मंदी रहेगी ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(कर्क चन्द्र-४)

जिस समय चन्द्रमा अकेला कर्कराशि पर २॥ दिन रहता है,तब तेजो आती है और यदि सूर्य या गुरू का संग हो जाय या चन्द्रमा पर गुरू या सूर्य की दृष्टी पूर्ण होगी तो और भी अधिक तेजी आयेगी किन्तु कर्क राशि पर अन्तिम समय में कुछ मन्दी का योग बनता है। और यदि शनी मंगल राहू या केतू चन्द्रमा के साथ हो तो कुछ तेजी कुछ मंदी आती है और शनी या मँगल की चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टी होगो तो भो कुछ तेजी या मन्दी और चन्द्रमा के साथ यदि शुक्र बुध कोई होगा, या चंद्रमा को देखता होगा तो समान्य तेजी रहेगी।

(सिंह चन्द्र-५)

जिस समय चन्द्रमा अकेला सिंह राशि पर २॥ दिन रहता है उस समय तजी आती है और यदि चन्द्रमा के साथ मंगल या गुरू या सूर्य हों या यह तीनों ग्रहों में से कोई भी चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टी से देख रहे हों तो और भी अधिक तेजी आजायगी किन्तु यदि शनी राहू केतू इनका किसी का साथ होगा या शनि की चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टी होगी तो तेजी होने में रुकावट पड़ जायगी किन्तु यदि बुध या शुक्र चंद्रमा के साथ हों या चन्द्रमा को देख रहे हों,तो सामान्य तेजो रहेगो।

(कन्या चन्द्र-६)

जिस समय चन्द्रमा अकेला कन्या राशि पर २॥ दिन रहता है उस समय मन्दी आती है और यदि गुरू मंगल सूय,बुध, इन चार ग्रहों में से किसी की चंद्रमा पर दृष्टि होय या इनमें से किसी ग्रह का साथ हो तो तेजी भी आ जाती है और यदि शुक्र या शनी इनमें से किसी की भी दृष्टि चंद्रमा पर पूर्ण हो तो अधिक मंदी आती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(तुला चन्द्र—७)

जिस समय अकेला चन्द्र तुला राशि पर २॥ दिन रहता है, तब तेजी आती है किन्तु यदि चन्द्रमा के साथ में शनी गुरू. मंगल, शुक्र, इन चारों में से कोई ग्रह होगा या इनमें से किसी की दृष्टि चन्द्रमा पर होगी तो तेजी की प्रधानता ही रहेगी और यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य बुध, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से कोई होगा या सूर्य या बुध की दृष्टि होगी तो मन्दी आयेगी किन्तु इस जगह सूर्य का साथ होना या सूर्य दृष्टि होना मन्दी का खास कारण बनता है।

(वृश्चिक चन्द्र—८)

जिस समय अकेला चन्द्र वृश्चिक राशि पर २॥ दिन रहता है, तब मन्दी आती है किन्तु दो दिन के बाद तेजो शुरू हो जाते हैं और शनी या राहू या केतू या बुध इनसे कोई भी चन्द्रमा के साथ हों या चन्द्रमा पर शनी की दृष्टि हो तो अधिक मंदो आती है। और यदि चन्द्रमा के साथ गुरू या मङ्गल या सूर्य या शुक्र कोई भी इनमें से होगा या गुरू या मंगल सूर्य इन तीनों में से किसी भी ग्रह की पूर्ण दृष्टि चन्द्रमा पर होगा तो तेजी भी आवेगी और थोड़ी मंदी आयेगी।

(धन चन्द्र–९)

जिस समय अकेला चन्द्र धन राशि पर २॥ दिन रहता है, तब तेजी आती है और यदि चन्द्रमा के राहू, गुरू, मंगल, सूर्य, शुक्र पर इनमें से कोई भी होगा या गु० मं० सू० इनमें से किसी की भी चंद्रमा पर पूर्णदृष्टी होगी तो और भी अधिक तेजो आवेगी और यदि चंद्रमा के साथ केतू, शनी, बुध इनमें से किसो का भी साथ होगा या चन्द्रमा पर शनी या बुध की दृष्टी होगी, तो तेजी में कुछ रुकावट पड़ती रहेगी किन्तु फिर भी तेजी की प्रधानता रहेंगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(मकर चन्द्र—१०)

जिस समय अकेला चन्द्र मकर राशि पर २॥ दिन रहता है, तब मन्दी की प्रधानता रहती है ! और जिस दिन चन्द्रमा के साथ सूर्य मंगल गुरू में से कोई भी होंगे या इनमें से कोई चन्द्रमा को देखते होंगे तो कुछ तेजी भी आ जायगी और यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र, बुध बैठे होंगे या देखते होंगे तो कुछ मन्दी के योगों में सामान्यतया रुकावटें पड़ेंगी और यदि चन्द्रमा के साथ राहू या केतू शनी इनमें कोई होगा तो अधिक मंदी आयेगी और यदि शनी की चंद्रमा पर पूर्ण दृष्टि होगी तो भी अधिक मन्दी का सा योग बनता है।

(कुम्भ चंद्र–११)

जिस समय कुम्भ राशि मर अकेला चन्द्रमा २॥ दिन ठहरता है तब प्राय: तेजी आती है और कभी २ थोड़ी सी मंदी भी आ जाया करती है ! और यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य, मंगल, गुरू शुक्र इन चार ग्रहों में से कोई देखता हो तो तेजी का योग ही प्रधान रहता है और यदि चन्द्रमा के साथ शनी, राहू, केतू इनमें से कोई भी बैठा हो या चन्द्रमा पर शनी की पूर्ण दृष्टी होय तो कुछ मन्दी आती है और कुछ तेजो भी आती है !

(मीन चंद्र—१२)

जिस समय मीन राशि पर चन्द्रमा २॥ दिन रहता है उस समय तेजी और मन्दी के दोनों योग बनते हैं और यदि चंद्रमा के साथ सूर्य गुरू, मंगल, शुक्र इन चारों में से कोई होगा या इन चारों में से किसी की भी चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टी होगी तो तेजी का योग अच्छा विशेष रूप से बनता है और यदि चन्द्रमा के साथ शनी राहु, बुध इनमें से कोई भी होगा या चन्द्रमा पर शनी या शनी या बुध की दृष्टी पूर्ण होगी तो मन्दी का योग बनता है। और अमावस के पहले दिन व दूसरे दिन अक्सर चांदी में कुछ मन्दी आती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(मीन शुक्र—१२)

जिस समय मीन राशि पर अकेला शुक्र पौन महीने ठहरता है उस समय चांदी पर इक तरफा तेजी आती है अतः व्यापारियों को चाहिये कि मीन पर शुक्र के प्रवेश करते ही चाँदी की खरीद करके बैठ जाना चाहिये और पौन महीने के अंदर जब २ कभी मंदी का रैक्शन आवे, तब २ चांदी की खरीद करते रहना चाहिये और २० दिन के करीब हो जाने पर माल को फौरन काट देना चाहिये। किन्तु जब तक खास तौर से मंदी का रुख न बने तब तक सौदा उतने टाइम तक खड़ा रखकर फिर अन्त से फौरन नफा खा लेनी चाहिये और बीच २ में चन्द्रमा के हिसाब से भी देखभाल करते रहना चाहिये।

(कर्क गरू—४)

जिस समय कर्क राशि पर गुरू प्रवेश करते हैं उस समय उसी दिन से चाँदी को तेजी का योग बनना शुरू हो जाता है, अतः व्यापारियों को उसी दिन से खरीद शुरू कर लेनी चाहिये तथा आगे चन्द्रमा के हिसाब का ध्यान भी साथ रखते रहकर, प्रमुख ध्यान तेजी का ही रखना चाहिये और यदि जिस समय गुरू कर्क पर आवे और उसी टाइम में यदि शनी देव कर्क, तुला, मकर, वृष, इन चार राशियों पर कहीं भी हुए, या कर्क में राहू या केतू हुए, या कर्क पर मंगल की पूर्ण दृष्टी हुई तो जितनी तेजी गुरु के द्वारा खास तौर से जोरदार आनी चाहिये उतनी नहीं आ सकेगी किन्तु रोजाना को तेजी मंदी का ख्याल चंद्रमा के द्वारा बराबर देखते रहना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(गुरु–८–१२–१०)

जिस समय गुरू, वृश्चिक या मीन या मकर राशि पर आकर ठहरते हैं उस समय भी चांदो में इक तरफा तेजी चलती है किन्तु कर्क राशि पर यदि उस समय जब तक, मंगल, शनि, राहू, केतू इनमें से कोई रहेगा, जब तक तेजी का मुख्य रूप न बन सकेगा, या कर्क पर मंगल, शनि की पूर्ण दृष्टि भी होगी तो भी तेजी में रुकावट पड़ती रहेगी और उपरोक्त गुरु की स्थिति के समय, यदि उस समय कहीं सूर्य मकर या कर्क के होंगे तो फिर तेजी खूब खुलकर इकतरफा चलेगी। किन्तु रोजाना के चन्द्रमा का हिसाब जरूर ध्यान में रखना चाहिये।

(सूर्य–४–१०)

जिस समय सूर्य, कर्क या मकर राशि पर होते हैं तब तेजी आती है और यदि इस मौके पर कहीं गुरु भी कर्क के हों तब तो फिर इकतरफा की बड़ी मजबूत तेजी आती है किन्तु कर्क पर शनि, मंगल की दृष्टि हुई या कर्क पर शनि, मंगल, राहू, केतू इनमें से कोई भी बैठा हुआ होगा तो भरपूर तेजी नहीं आ सकेगी, किन्तु रोजाना की चन्द्रमा की चाल से तेजी मंदी का ध्यान बराबर चाहिये।

इकतरफा चांदी की मन्दी का योग

(मंगल ४–९–१०–१)

जिस समय कर्क राशि पर मंगल आते हैं या कर्क राशि पर मंगल की पूर्ण दृष्टि होती है तब मन्दी आती है, किन्तु कर्क राशि पर गुरु या सूर्य बैठे न हों और न कर्क पर गुरू या सूर्य की दृष्टि होय नहीं तो मंदी का योग साधारण सा ही प्रतीत हो सकेगा, किन्तु रोज मिति की तेजी मंदी का योग चन्द्रमा के द्वारा बराबर देखते रहना चाहिये। जबकि मंगल धन, मकर, मेष पर आते हैं तब कर्क पर पूर्ण दृष्टि मंगल की होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(राहू-केतू—४)

जिस समय राहू या केतू दोनों में से कोई भी कर्क राशि पर आकर १॥ साल ठहरते हैं उस समय मन्दी का योग प्रधान रूप से चलता है किन्तु कर्क राशि पर गुरू या सूर्य की दृष्टी नहीं होनी चाहिये और कर्क पर गुरू या सूर्य की स्थिति भी नहीं होनी चाहिये अन्यथा मन्दी का प्रधान रूप से योग नहीं बन सकेगा किन्तु फिर भी चन्द्रमा की चाल से रोजाना की तेजी मन्दी का बराबर ध्यान रखना चाहिये।

(शनी-४-१०-२)

यदि जिस समय कर्क राशी पर शनो तुला, मकर, वृष, इन तीन राशियों पर कहीं बैठे हों, तो मन्दी का प्रधान रूप चलता है किन्तु कर्क राशि पर गुरू या सूर्य बैठे न हों और न इनकी कर्करशि पर पूर्ण दृष्टी ही होनी चाहिये, अथवा मन्दी का योग खुलकर नहीं आ सकेगा, फिर भी रोजाना की तेजी मन्दी का चंद्रमा के द्वारा विचार जरूर करते रहना चाहिये।

जिस समय कभी कोई तिथि टूटती है, तब उसके आस पास २ या ३ दिन के अन्दर मन्दी आती है यहाँ पर दो बातों का ध्यान रखना जरूरी है कि एक तो पंचाँगों में मतभेद होता है कि किसी में कभी और किसी में कभी तिथि टूटती है किन्तु फिर भी वहां उस दो तीन दिन के अन्दर चंद्रमा का ध्यान रखना जरूरी है कि चन्द्रमा मंदो का आता है तभी खासतौर से मन्दी होनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस समय कर्क राशी पर शनी, मङ्गल-राहू-केतू इनमें से कोई भी एक या दो या तीन ग्रह बैठे हों और बाकी के शनी या मङ्गल दोनों में से किसी की कर्क पर पूर्ण दृष्टि भी पड़ रही हो और दूसरी तरफ कर्क राशी पर गुरू या सूर्य न बैठे हों और न गुरू या सूर्य की कर्क राशी पर पूर्ण दृष्टी ही पड़ रही तो तब मन्दी का बिशेष योग इक तरफा का चलता है, और बीच २ में चंद्रमा के योग से सब कुछ तेजो मन्दी अलग और बनती रहती है।

चाँदी के घोर तेजी का इक तरफा का योग

जिस समय वृहस्पति कर्क राशी पर हों और अकेला शुक्र मीन राशी पर हो या सूर्य मकर राशी पर हो या जिस समय मीन पर अकेले शुक्र हों उस समय कर्क पर सूर्य या गुरू की पूर्ण दृष्टी हो और शनी, मङ्गल, राहू, केतू इनमें से कोई भी कर्क पर बैठे न हों और शनी, मंगल में से किसी का भी कर्क पर पूर्ण दृष्टी भी न हो और चन्द्रमा वृष, कर्क सिंह, धन, मीन, इन २ राशियों पर कहीं भी हों, तो चाँदी में भरपूर तेजी उस वक्त आती है और जिस समय कोई तिथा बढ़ता है, तो उस समय भी तेजी स्वतः आती है।

सोने की तेजी का प्रमुख योग

जिस समय सूर्य मेष राशी पर १ माह ठहरते हैं उस समय सोने पर अवश्य तेजी आती है अतः व्यापारियों को चाहिये कि सूर्य के मेष पर आते ही सोना खरीद करलें, और सूर्य जब मेष पर से वृषभ पर जाने वाला हो उसने करीबन १ सप्ताह पहिले ही सोना बेच देना चाहिये और जिस समय सूर्य सिंह राशी पर १ माह ठहरते रहते हैं उस समय सोने पर तेजी आती है किन्तु सूर्य के साथ यदि कभी राहू या केतू या शनी का साथ हो जायगा तो पूर्ण रूपेण तेजी नहीं आ सकेगी और यदि सूर्य पर शनी की पूर्ण दृष्टी भी होगी तो भी तेजी भरपूर नहीं आ सकेगी और सिंह राशी पर वृहस्पति के आने से भी सोने पर प्रायः तेजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का ही ढङ्ग बना रहता है तथा जिस समया सूर्य मेष पर रहते हैं उस समय यदि सूय के साथ मङ्गल हों या सूर्य पर मङ्गल की दृष्टी होय तो तेजी और भी अधिक आती है। और यदि सूर्य वृश्चिक या धन राशो पर भी आते हैं, और उस समय मङ्गल या गुरू का साथ हो जाय या इनकी दृष्टी सूर्य पर आजाय तो भी सौने पर तेजी का कुछ योग बनता हैं।

सोने की मन्दी का प्रमुख योग

जिस समय सूर्य तुला राशी पर १ माह ठहरते हैं उस समय सोने पर अवश्य मन्दी आती है किन्तु यदि शनी की दृष्टी सूर्य पर रही या शनी और सूर्य का तुला पर साथ रहा तो मन्दी खासतौर से नहीं आ सकती है किन्तु तुला पर यदि सूर्य के साथ केवल राहू या केतू का ही साथ रहेगा तो और भी अधिक मन्दी आ सकती है। इसी प्रकार यदि सूर्य जब मकर पर १ माह ठहरते हैं तो साने पर तब भी मन्दी आती है किन्तु उस समय यदि मकर पर गुरू की दृष्टी पड़ रही होगी या उस समय मकर पर राह या केतू या गुरू या शनि का संग हो जाय तो और भी अधिक मंदी आने का योग बन जाता है किन्तु यदि मकर पर सूर्य के साथ मङ्गल की पूर्ण दृष्टि हुई तो फिर सोने की मंदी को रोक देंगे अर्थात् उतकी मंदी नहीं आसकतो है जितनी आनी चाहिये तो असाधारण मंदी आकर रह जायगी जिस समय सूर्य कर्क राशी पर हों तब भी मंदी आती है और यदि उस समय सूर्य पर शनी या मंगल की दृष्टी हो या संग हो जाय या सूर्य के साथ राहू या केतू कोई भी आजाय, तो इन सब कारणों से भी मन्दी का अच्छा बनता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस २ वर्षों से वृहस्पति धन राशी पर आते हैं तब २ गुड़ में विशेष तेजी आती है और जब २ वृहस्पति मेष राशी पर व सिंह राशो पर आते हैं तब २ भी गुड़ में तेजी आती है और सूर्य जब २ धन राशो पर आते हैं तब २ भी गुड़ में तेजी आती है और मङ्गल भी जब २ धन राशी पर या वृश्चिक राशी पर या मेष राशी पर जब २ आयेंगे तब २ गुड़ पर तेजी आती है और सूर्य तथा वृहस्पति दोनों जिस वक्त एक ही समय में अर्थात् वृहस्पति सिंह राशी में हो और सूर्य धन राशी पर हों तो उस वक्त बहुत जल्दी २ गुड़ का भाव तेजी की तरफ बढ़ता चला जाता है अथवा वृहस्पति और मंगल जब २ कभी एक दूसरे को देखेंगे तब २ गुड़ पर तेजो आवेगी अथवा केतू जिस समय धनराशी पर हो और वृहस्पति की उस पर दृष्टो या सङ्ग हो तो गुड़ में खूब तेजी आवेगी।

गुड़ की मन्दी

जिस २ वर्षों में बृहस्पति मकर राशी में आते हैं तब २ गुड़ की मन्दी आतो है और राहू जिन २ वर्षों से धन राशी पर आते हैं तब २ गुड़ की मन्दी आती है अथवा वृहस्पति के ऊपर शनीचर को दृष्टी या शनीचर का सङ्ग जब २ आता है तब २ गुड़ की मन्दी आती है और अथवा वृहस्पति के साथ राहू या केतू जिन जिन वर्षों में आते हैं तब २ गुड़ की मन्दी आती है और जिन २ वर्षों में राह धनराशी पर हो और उसी वर्ष में वृहस्पति मकर राशी पर हों तो गुड़ में बहुत मन्दो आने का योग बनता है और कन्या पर गुरू के आने से भी गुड़ में मंदी रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिन २ वर्षो व मासों में सूर्य वृश्चिक राशी पर या धन राशि पर आते हैं या मेष राशि पर आते हैं या सिंह राशि पर आते हैं तब२ गेहूँ में तेजो आती है और मङ्गल भो जिन २ मासों में वृश्चिक राशि पर आते हैं तव २ भी गेहूँ में तेजी आती है और जिन २ समयों में मंगल कर्क राशी पर या कन्या राशि पर या मिथुन राशि पर आते हैं तब २ गेहूं की मन्दी रहती है अथवा सूर्य जब २ तुला राशी पर या मकर राशि पर आते हैं तब २ गेहूँ में मन्दी आती है अथवा मंगल पर शनी की दृष्टी होय या सूर्य पर शनी की दृष्टी या साथ होय तब २ उन समयों में गेहूँ की मन्दी आती है अथवा मगल शनी को दोनों को आपस में दृष्टी पड़ती होय तो मन्दी आतो है और सूर्य मङ्गल की आपस में एक दूसरे पर जब दृष्टी आवे तो गेहूँ में तेजी का योग बनता है।

ज्योतिष द्वारा भाग्योदय संबन्धी तीन चेतावनियाँ

१—अनाधिकार मैथुन करने से, दैनिक रोजगार व स्त्री स्थान में कष्ट और अवनति प्राप्त होती है और संयमित भोग की प्राप्ती से उन्नति प्राप्त होती है।

२—अधर्म और पापाचरण से उन्नति व स्वार्थ की ओर दौड़ने वाले व्यक्तियों को, किसी न किसी खास विषय पर अपने भाग्य की कमजोरी की ओर से मजबूरन कोई खास दुःख सहन करना पडता है और धर्म के सहारे चलने वाले व्यक्तियों को किसी न किसी खास विषय पर, अलौकिक उन्नति के द्वारा भाग्य पर, महान आनन्द प्राप्त होता है।

३—अधिक झूंठ बोलने से मनुष्य को अपने सन्तान पक्ष में किसी न किसी विषय पर पीड़ित होकर कष्ट भोगना पड़ता है और सत्य बोलने से, वाक सिद्धी, सन्तान सुख, तेज, तत्व, ज्ञान, दूर दर्शता, आत्मबल, निर्भयता प्राप्त होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक अरिष्टदायक ग्रहों से बचाव पाने के १२ सरल साधन

—※—※—

१—नित्य प्रति कुत्तों को रोटी खिलानो चाहिये।

२—नित्य प्रति कछुए मछलियों को कुछ आटे की गोली डालनी चाहिये

३—नित्य प्रति चील कछओं को खाने पीने की वस्तुओं में से कुछ हिस्सा जरूर डालना चाहिये।

४—नित्य प्रति भोजन से पूर्व एक रोटी पर गुड़ रखकर गाय को खिलानी चाहिये।

५—नित्य प्रति सुबह स्नान करके शंकर पर जल चढ़ाकर प्रेम से नमस्कार दंड़वत करनी चाहिये।

६—नित्यप्रति स्नान के बाद सुबह सूर्यनारयण को जल ब गुलाब के पुष्प चढ़ाकर बार बार हाथ जोड़कर नमस्कार करनी चाहिये।

७—हर एक शनिवार को पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ाकर परिक्रमा करनी चाहिये और सूर्य, शंकर, पीपल इन तीनों को जल चढ़ाने के बाद जल को नेत्रों से लगाना चाहिये।

८—नित्य प्रति सुबह सूर्य के सम्मुख बैठकर एकान्त ध्यान से कम से कम १ घन्टा भगवत भजन करना चाहिये।

९—नित्य प्रति यथा शक्ति कुछ न कुछ गरोबों को दान देना चाहिये।

१०—प्रत्येक प्राणी मात्र पर यथाशक्ति दया और स्नेह का भाव-रखना चाहिये।

११—प्रत्येक अनाधिकार वस्तुओं को कभी ग्रहण न करना चाहिये!

१२—सदैव ईश्वर की महान सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये। और अधर्म से सदैव डरना और बचना चाहिये।

—※—※—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

❀ लेखक के विचार ❀

प्रिय पाठक—मुझे कुछ चन्द बातें, आपसे निवेदन करनी हैं, जो कि नितान्त सत्य हैं।

१—मैंने अब तक फलित ज्योतिष के जितने ग्रन्थ लिखे हैं, उन सबके अन्दर जो कुछ भी फलादेश लिखा है वह पूर्ण स्वतन्त्र हैं इन फलादेशों के अन्दर मैंने किसी भी दूसरी पुस्तकों की, किंचित मात्र भी छाया नहीं ली है।

२—मेरे समस्त लेख, पूर्ण अनुभव सिद्ध हैं, जो कि हजारों जन्म कुण्डलियों पर, सदैव सावित होते रहे हैं।

३—मुझे फलित ज्योतिष पर, जो कुछ भी गहरे और नवीन अकाट्य अनुभव हुए हैं, उनका मूल कारण, ईश्वर की दैन है, शास्त्रीय अध्ययन नहीं है!

४—मुझे फलित पुस्तकों पर, एवं सर्व साधारण को बताये हुये जन्म कुण्डलियों के फलादेशों पर जनता और विद्वानों से अनेकों उत्तम हृदयग्राही प्रशंसा पत्र भारी तादाद में प्राप्त हो चुके हैं,

५—मैंने केवल धनोपार्जन के दृष्टि कोण से ही यह सब पुस्तकें नहीं लिखी हैं बल्कि अपने उन नवीन अनुभवों को, जोकि दूसरी पुस्तक में सर्वथा अप्राप्त हैं, और सदैव सत्य सिद्ध हुए हैं। उनको सर्व साधारण के हित को दृष्टि से पुस्तकों में लिख कर जनता के समक्ष पहुँचाना बहुत आवश्यक समझा है।

६—फलित ज्योतिष पर अब तक जितनी पुस्तकें लिखी गई है उन सबों में इस बात का ध्यान सबसे अधिक रखा है कि थोड़ी सी हिन्दी का जानकार व्यक्ति भी वगैर ज्योतिष सीखे ही हर प्रकार के फलादेशों को स्वयं समझ सकें।

नोट—प्रत्येक विषय, में विशेष जानारी करने के लिये पत्र व्यवहार करें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

❀ ज्योतिष सीखने के कुछ खास आकडे ❀

प्रथम तो वह कुण्डली जो इस पुस्तक के प्रारम्भ में लिखी है उससे यह सीखना चाहिये कि जन्म कुण्डली में किस २ स्थान से भाग्य और जिन्दगी की क्या २ बातें देखी जाती हैं।

दूसरी बात यह है—जन्म कुण्डली में जो १२ अङ्क राशियों के लिखे रहते हैं, उन अंकों के, जो ग्रह स्वमी होते हैं यही ग्रह, उस स्थान के भी स्वामी माने जाते हैं, जिस स्थान में जिन २ ग्रह को राशी अंक लिखे होते हैं। अतः कौन २ ग्रह, किस राशियो के स्वामी हैं।

मेष और वृश्चिक के स्वामी मङ्गल हैं। वृष और तुला के स्वामी शुक्र हैं। ३ मिथुन और कन्या के स्वामी बुध हैं। कर्क के स्वामी चन्द्रमा हैं। सिंह के स्वामी सूर्य हैं। धन और मीन के स्वामी गुरू हैं। मकर कुम्भ के स्वामी शनी हैं।

तीसरी बात यह है, कि कोई भी ग्रह जहाँ बैठता है वहाँ से कौन २ से स्थान को पूर्ण दृष्टा से देखता है, इसका फलादेश चांदी की तेजी मन्दी के प्रारम्भ वाले पेज देख लीजिये।

चौथी बात यह है कि किस २ राशी में बैठने से कौन २ ग्रह उच्च हो जाता है और कौन२ ग्रह किस२ राशी में नीचता का फल देता है।

उच्च राशी		नीच राशी
१	सू०	७
२	चं०	८
१०	मं०	४
६	बु०	१२
४	गु०	१०
१२	शु०	६
७	श०	१
३	रा०	९
९	के०	३

पांचवीं बात यह है कि लग्न से छटे या आठवें या बारहवें स्थान में जो कोई ग्रह बैठा होता है यह जो कोई ग्रहनीच राशियों में बैठा होता है, यह ग्रह कुछ न कुछ जीवन में कष्ट अवश्य देता रहता है, किंतु छठे,आठवें,बारहवें स्थान में अगर अपने घर का मालिक ही कोई ग्रह बैठा होगा तो वह अच्छा समझा जायेगा। छठवीं बात यह है कि हर एक कुण्डली के अन्दर हरएक ग्रह कहां२ बैठेकर किस२ प्रकार का फल देता है इसका पूर्ण रूपेण भिन्न २ फलादेश सरल हिन्दी में छापने के लिये हमारी भाग संहिता पद्धति में पढ़कर मालूम करिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कपड़े की, या सूत की तेजी मन्दी

जिस २ साल के अन्दर जब कभी, मंगल वृश्चिक राशि पर आता है तब २ उस डेढ़ महीने के अन्दर कपड़े या सूत पर अच्छी तेजी आती है। और मंगल जब २ कभी मेष राशिपर या वृषभ राशि पर या सिंहराशि पर आते हैं तब २ भी तेजी आती है और यदि मंगल के साथ गुरू और शुक्र होंगे तो अधिक तेजी आयेगी और मंगल जिन २ वर्षों में, कर्क पर आवेंगे तब २ मंदी आयेगी और मङ्गल के साथ गुरू बैठे होंगे या गुरू वृश्चिकराशि पर होंगे तो कपड़े की मन्दी ठीक तौर से नहीं आ सकेगी और वृश्चिक राशि पर शनि राहू या केतू के होने से भी तेजी ठीक नहीं बन सकती है बल्कि मन्दी रह सकती है।

कागज की तेजी मन्दी

जिन सालों में बृहस्पति वृश्चिक राशि पर आते हैं तब २ कागज की तेजी जोरदार आती है और जिन २ वर्षों में बुहस्पति मीन राशि पर या कर्क राशि पर आते हैं तब २ भी कागज की तेजी आती है किन्तु जिन २ महीनों में कर्क का मंगल होगा या जिन वर्षों में वृहस्पति मकर राशि पर होंगे या वृश्चिक राशि पर या कर्क राशि पर राहू, केतू, शनि होंगे तो कागज का मन्दी रहेगी या तेजी में रुकावटे पड़ती रहेंगी।

❀ अखन्ड भाग्योदय दर्पण ❀

इस ग्रन्थ को हमारे यहाँ से मंगाने के लिये–मू० ३) डा० ख० माफ

———

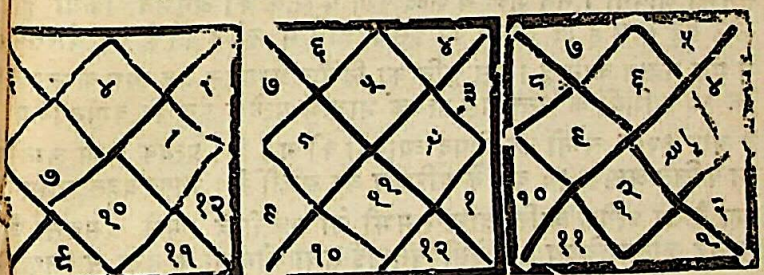
नोट—जो सज्जन अपनी जन्म कुण्डली का फलादेश हमसे प्राप्त करना चाहें, वह अपनी कुण्डली के साथ में नवग्रहों के अंश भेजें, तथा कुण्डलीकी जाँच भी करानी होय तो जीवन और परिवार की कुछ मुख्य २ बातें लिखकर भेजे, फलादेश वी० पी० द्वारा डाकखर्च सहित ६) रुपे में जायगा।

भगवानदास मोतल, नया बाजार मथुरा=यू० पी०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गलत कुण्डलियों को ठीक करने का सरल साधन

प्रत्येक बालक के जन्म के समय में, घड़ियों की गड़बड़ से, या स्त्रियों की असावधानता से, या सूर्य टाइम या लोकल टाइम के फर्क से अक्सर जन्म कुण्डलियाँ गलत बन जाया करती हैं और बच्चे के जन्म का शुद्ध समय प्राप्त नहीं हो पाता है । इस कठिन समस्या को आप जरासे इशारे मात्र के कार्य योग से, सुलझा कर प्रत्येक गलत कुण्डलियों को ठीक कर सकते हैं। देखिये कुल बारह लग्न हैं और इन्हीं में सर्व प्राणियों का जन्म होता रहता है, मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन, प्रतिदिन २४ घन्टे के अन्दर यह बारहों लग्न रात और दिन में रोजाना बदल २ कर घूम जाती हैं। अतः बच्चे की पैदाइश के वक्त यदि घण्टे आधे घण्टे का या कुछ मिनटों का फरक रह गया है, और जन्म की लगन गलत बन गई है तो आप ऐसा करिये कि जन्म की लग्न से एक लग्न पहले की, और एक लग्न बाद की, लेकर दोनों से अपना फलादेश मिलाकर देखें, तो आपको जो जन्म लग्न सही होगी उसी का फलादेश भी सही मिल जायेगा । उदाहरण के लिये यह तीन लग्न से समझिए ।



कर्क–पहिले की लग्न सिंह–वर्तमान लग्न कन्या–बाद को लग्न

इस प्रकार सिंह लग्न वाले की कुण्डली का फलादेश यदि सिंह लग्न पर सही नहीं बैठा है तो कन्या लग्न पर ही सही बैठ जायगा, या कर्क लग्न पर सही बैठ जायगा । इस प्रकार हर एक लग्न वालों की एक लग्न पहिले की और एक लग्न पीछे की लेने से,ठीक २ जाँच हो जायगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

* प्रशंसा-पत्र *

हीरा रत्ना श्री आर० जी० सपरे० बी० एस० सी, सी० बी० साइक्लोजी:

ज्योतिष ग्रन्थों के लेखक तथा प्रकाशक, देहली कलकत्ता तथा कटक के भविष्य वक्ता संबंधी विभाग के सहायक लेखक।

डाकखाना—राहुरी, जिला—अहमद नगर राहुरी।

प्रिय भगवान दास जी !

मैं आपके प्रकाशन, 'भृगु संहिता पद्धति' के अंग्रेजी प्रति के लिये धन्यवाद देता हूँ जो आपने समालोचना के लिये मेरे पास भेजी है, लगभग ३० वर्षों से अधिक मैंने ६०० से अधिक लेखों को, भारत तथा लङ्का के प्रमुख पत्रों में भेजा है अतः मुझे अधिकांश पुस्तकें निरीक्षणार्थ प्राप्त हुई हैं,और जिनका निरीक्षण प्रमुख पत्रों में किया गया है, इस अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि आपका वर्तमान प्रकाशन ज्योतिष साहित्य में एक महत्व पूर्ण कृती है।

ज्योतिष सम्बन्धी लेखों का लेखक होने के कारण मैं यह विचार रखता हूँ कि ७०० पृष्ठों की पुस्तक के पूर्ण करने में किसी भी व्यक्तिको कितना परिश्रम करना पड़ता है और वास्तव में यह पुस्तक ज्योतिष विज्ञान में एक अनिवार्य भविष्य प्रसङ्ग के लिये एक आवश्यक पुस्तक समझी जावेगी। मैंने शब्द व शब्द पूर्ण पुस्तक का अनुभव किया है, और यह स्पष्ट है कि आपने जो इस विज्ञान में खोज का है वह वास्तव में एक महान कार्य है। इस कृति का विशेष अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि १२ राशियों के अन्तरगत प्रत्येक भाव में प्रत्येक ग्रह का वर्णन किया है और १२९६ लग्नों की बिषद व्याख्या की गई है। प्रत्येक जन्म लग्नों का फलित आपके १० वर्ष के परिश्रम का साक्षी है। भाषा बहुत साधारण है जो प्रत्येक व्यक्ति द्वारा समझी जा सकती है। मुझे प्रसन्नता है कि यह जटिल विषय एक ऐसी चतुराई तथा योग्यता के ढङ्ग स लिखा गया है आपके गुणों को सम्मानित करता है। मैं आपके अन्य प्रकाशनों के लिये प्रतीक्षा में हूँ और यह विश्वास करता हूँ कि वे भी इसी प्रकार महत्वपूर्ण होंगे। इस वर्तमान प्रकाशन के लिये आपको धन्यवाद देता हूँ और आपकी कृतियों के लिये विशेष सफलता चाहता हूं।

आपका शुभ चिंतक—आर० जी० सपरे २१-२-५७

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियां

प्रत्यक्ष ज्योतिष शास्त्र

इस ग्रन्थ के अन्दर प्राचीन काल से लेकर अब तक के बड़े २ प्रसिद्ध, भाग्यवान, धनवान, गुणवान, पहलवान, देशभक्त दानी, त्यागी, भोगी, वीर, डांकू, राजा महाराजा, नवाव वादशाह भक्त, कवि, लेखक योगी, विलासी, सदाचारी तथा भारत और विलायतों के उच्च पदधिकारी, इत्यादि २ अनेकों नजीर देने योग्य व्यक्तियों की कुण्डलियाँ देदे करके इन लोगों की समस्त जीवनियों को, इन्हीं के ग्रह योगो से भिन्न२ रूपों के द्वारा दर्पण की तरह महान सरल रूप से प्रत्यक्ष कर २ के समझाया है और अनेकों अनुभव सिद्ध ज्योतिष के अचुक आकड़े भी दिये हैं। अस्तु ज्योतिष ज्ञान को सरलता पूर्वक सीखने के लिये यह अदुत्तिय ग्रन्थ है मूल्य ४) रुपे डाक खर्च माफ।

विवाह-दामपत्य-निर्णय

इस ग्रन्थ के अन्दर विवाह से लेकर समस्त जीवन तक में स्त्री पुरुषों के आपसी गृहस्थ जीवन में, जन्म कुण्डली के नव ग्रहों द्वारा कितना कितना सुख दुख, हानि लाभ. सौभाग्य, दुरभाग्य, संतान, आयु और सफलता आदि वस्तुओं की प्राप्ती किस २ प्रकारों से होगी, और विवाह प्रकर्ण में वगैर ३६ गुणों का मिलान करे ही प्रत्येक व्यक्ति घर बैठे ही अपने २ लड़के लड़कियों की कुण्डलियों का मिलान बड़ी सरलता पूर्वक आसानी से कर सकते हैं और विवाह सम्वन्धों में कौन २ सी लग्न भांवर डालने के समय सफलता और सौभाग्य से युक्त रहेगी और विवाहकव होगा यह सभी जानकारियों से युक्त गृहस्थ जीवन के लिये विशेष उपयोगी पुस्तक है। इसके लिये जनवरी सन १८७० के बाद लिखये, मूल्य लग भग ५)

पता—भगवानदास मीतल,

भृगुज्योतिष पुस्तकालय—नया बाजार मथुरा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Jangamawadi Math,
Acc. No. .....5030.....

हमारी प्रसिद्ध पुस्तकें

विशाल भृगुसंहिता पद्धति हिन्दी या अंग्रेजी — मूल्य २०)
विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियाँ — मूल्य ४)
अखंड भाग्योदय दर्पण — मूल्य ३)
शरीर सर्वांग लक्षण — मूल्य१-५० पै०

चारों पुस्तकें एक साथ मगाने पर सिर्फ १६) डा० ख० माफ
किसी एक कुण्डली का फलादेश हमसे मगाने के लिये ६) रु० सिर्फ

भृगुसंहिता फलित सर्वांग दर्शन

इस ग्रन्थ के अन्दर समस्त संसार के व्यक्तियों की कुण्डलियों का फलादेश–प्रत्येक स्थानों में भिन्न २ कारणों सहित–द्रष्टियों के गम्भीर भेदों के सहित आदि से अन्त तक सदैव कालीन लिखा है इसके अन्दर जन्म कालीन ग्रहों का फल और आकाश मार्गी ग्रहों का गोचर फल पूर्ण रूपेण विस्तार पूर्वक लिखा है इसके अतरिक्त ज्योतिष फलादेश का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यह अदुत्तिय पुस्तक है मूल्य ११) रुपे डाक खर्च माफ दूसरी पुस्तकों के साथ मगाने पर सिर्फ १०) रुपे होंगे।

ठाकुर प्रसाद, वाराणस्यां।

पता—भगवान दास मीतल--भृगुज्योतिष पुस्तकालय, नया बाजार मथुरा, यू० पी०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ACC No-5030

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

असली पुस्तक लेखक के
हस्ताक्षर की मोहर देखकर लें.....

भगवानदास मोतल



Bhagwan Das Motel

भृगु ज्योतिष पुस्तकालय,

नया बाजार, मथुरा (यू० पी०)

आवरण मुद्रक :
ऑटोमाटिक प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri